Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

02
-A
V
922

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनन्द पथ

[जेम्ज़ ऐलन की अंग्रेजी पुस्तक
By Ways Of Blessedness का हिन्दी अनुवाद]

04333

अनुवादक

श्री हंसराज वोहरा,
एडीटर, 'अतालीक', दिल्ली

पुस्तकालय
पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

R74.02,VHO-A
04333

मूल्य ३ रु० ५० नये पैसे

पं० विद्याधर सिद्धालंकार
स्मृति संग्रह

ग्लोब पब्लिकेसनस
A/4 कृष्णनगर
दिल्ली-53

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

JAMES ALLEN

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

ब्रह्मा देश में यह एक प्रचलित नियम है कि सड़क के पास ही किन्तु मार्ग के धूल-धगड़ से ज़रा आगे हटकर वृक्षों की ठण्डी-ठण्डी छाया में लकड़ी की धर्मशालाएँ बनी होती हैं। पास के गाँवों के रहने वाले दयालु व्यक्तियों ने इन धर्मशालाओं में यात्रियों के खाने-पीने का प्रबन्ध किया हुआ होता है। थके हुए यात्री यहाँ जरा ठहरकर अपनी भूख-प्यास बुझा लेते हैं और थोड़ा विश्राम करके पुनः स्फूर्ति पाते हैं।

हमारे जीवन के विस्तीर्ण मार्ग पर भी इसी प्रकार के विराम हैं, जिनसे जीवन में स्फूर्ति का समावेश होता है, किन्तु वे विराम आन्तरिक दृष्टि से ही देखे जा सकते हैं। वे स्फूर्ति-दायक विराम अब हैं कहाँ ? ज़रा मेरे साथ आओ, मैं उन विरामों को तुम्हें दिखाता हूँ। देखो, क्रोध की भड़काहट, ईर्ष्या की आग और निराशा के अँधेरे से दूर हटकर वे सारे विराम हँस रहे हैं। शान्ति की शीतल और सुखद छाया के नीचे उन विरामों की हरियाली है, और वहाँ तक पहुँचने के लिये आनन्द की छोटी-छोटी, धुँधली रेखा-सी पतली और अज्ञात-सी पगडंडियाँ बनी हुई हैं। वहाँ पर पहुँचकर थका हुआ, अध्यात्म की खोज में निकला हुआ यात्री विश्राम पाता है और थकावट दूर करके फ़िर अपनी मंजिल की ओर चल पड़ता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि कोई यात्री अपनी त्रुटियों और भूलों से आराम देने वाले स्थानों पर पहुँचकर अपनी भूख तथा प्यास न बुझाये और चेतन न हो जाय, तो आगे चलकर उसे बहुत दुख उठाना पड़ता है और बहुत तकलीफ होती है। ऐसे ही हज़ारों मनुष्य जीवन के इस विस्तृत पथ पर आँखें मींचकर दौड़े जा रहे हैं। कोई तो धन-दौलत के पीछे दौड़ा जा रहा है, कोई अपने मान व बड़ाई की इच्छा की धुन में चला जा रहा है—हर एक ही अपनी-अपनी धुन में सरपट दौड़ रहा है और शान्ति देने वाले इन मार्गों और आराम देने वाले इन स्थानों को व्यर्थ समझकर इनकी ओर आँखें भी नहीं उठाता। अन्त में परिणाम यह होता है कि ये लोग भूख से व्याकुल और थकान से चूर-चूर हो जाते हैं। उनके पैर घायल और मन बेचैन हो जाता है। इस पर भी न खाने को ही इनके पास कुछ है और न ही कहीं पानी का चिन्ह तक इनको मिलता है।

किन्तु कुछ मनुष्य ऐसे भी होते हैं जो ऐसे लापरवाह व्यक्तियों की भीड़ से अलग होकर इन विरामों को आन्तरिक दृष्टि से देखते हैं और इन पगडण्डियों पर चलकर वहाँ पहुँच जाते हैं। ये मनष्य वहाँ पहुँचकर नव-चेतना पाते हैं। इस प्रकार चेतना पाकर वे जीवन की आपदाओं और कष्टों का सामना करने के योग्य हो जाते हैं। न तो वे व्यग्र ही होते हैं, न ही घबराहट से बेहोश होकर मार्ग ही में गिरते हैं और न ही नष्ट होते हैं। ऐसे व्यक्ति जीवन की यात्रा को शान्ति के साथ पूरा करते हैं। इस पुस्तक में इस प्रकार की आनन्द-प्राप्ति के चौदह मार्ग दिखलाये गये हैं। जो लोग इन पर चलने का प्रयत्न करेंगे, वे सुख तथा शान्ति के साथ अपना जीवन व्यतीत करने में अवश्यमेव सफल हो जायँगे।

—*लेखक*

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहला पथ

अभीष्ट के लिए उचित श्रीगणेश

"हमारे दैनिक जीवन में घटने वाली छोटी-छोटी बातें और नित्य के साधारण काम-काज ही हमारे जीवन की वे सीढ़ियाँ हैं जिनके द्वारा हम उन्नति की ओर बढ़ सकते हैं। यह वस्तुतः सत्य है कि हमारे पंख नहीं हैं जिनसे उड़कर हम तुरन्त ही उन्नति के शिखर पर जा चढ़ें, किन्तु विधाता ने हमें पैर तो दिये हैं जिनसे हम धीरे-धीरे चलकर अभीष्ट तक पहुँच सकते हैं।"
—लांग फ़ैलो

"मानवीय जीवन के उतार-चढ़ाव को सुन्दर रंगों में प्रत्यक्ष करना मुझे पसन्द है।"
—ब्राउनिंग

मानवीय जीवन आरम्भों से पूर्ण है।...पल-पल पर इसमें कोई-न-कोई काम आरम्भ होता ही रहता है, जिनमें से कोई तो शीघ्र ही समाप्त हो जाता है और कोई देर में।...कुछ काम ऐसे भी होते हैं जो आरम्भ होते समय तो बिल्कुल छोटे और तुच्छ-से लगते हैं, किन्तु सत्य यह है कि वे ही छोटे-छोटे काम मिलकर हमारे जीवन को अच्छा-बुरा बनाने का कारण बन जाते हैं। ...किसी भी काम का श्रीगणेश करने से पूर्व देखना यह चाहिये कि उसका आरम्भ कैसे होता है। ... बड़ी-से-बड़ी नदी भी अपने उद्गम-स्थान पर इतनी छोटी होती है कि एक छोटा-सा बच्चा तक उसे छलाँग मारकर पार कर सकता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…आकाश से वर्षा की बूँदें तक एक-एक करके नीचे गिरती हैं जिनसे अनगिनत गांव और शहर नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं। बड़ का वह वृक्ष, जिसकी शीतल छाया सैकड़ों नहीं वरन् हजारों मनुष्यों को सुख-शान्ति प्रदान करती है, आरम्भ में एक छोटा-सा पौदा ही होता है। जलती हुई दियासलाई यदि असावधानी से घास-फूँस के किसी ढेर पर गिर पड़े, तो वह एक बड़े शहर तक को फूँककर राख बना सकती है।

यही दशा आत्मिक संसार की है। बड़ी-बड़ी बातें आरम्भ में बहुत ही छोटी-सी होती हैं। किसी साधारण विचार-मात्र से आश्चर्यजनक और दुर्लभ आविष्कारों का सृजन होता है। मुँह से निकले हुए एक वाक्य से ही इतिहास के पृष्ठ बदल जाते हैं। हृदय में एक ही श्रेष्ठ विचार आ जाने-मात्र से विश्व तक का सुधार सम्भव हो जाता है और पल-भर के एक बुरे विचार-मात्र से भारी-से-भारी पाप की नींव पड़ जाती है।

किसी भी काम का महत्त्वपूर्ण पहलू है उसका श्रीगणेश। किसी भी काम का बिगड़ना या सुधरना काफी अंशों में उसके श्रीगणेश पर ही निर्भर होता है।…भला बताइये तो, आप कितने काम नित्यप्रति आरम्भ करते हैं?…क्या आप जानते हैं कि उन कामों के अन्दर ही आपके भविष्य का अच्छा अथवा बुरा होना छिपा है? यदि आप इस सत्य को नहीं पहचान पाते तो आइये, मेरे साथ आइये…मैं आपको आनन्द-प्राप्ति का प्रथम पथ दिखाता हूँ।…यदि आप इस पथ को पूरी समझ-बूझ और बुद्धिमत्ता के साथ ग्रहण कर लेंगे तो यह पथ आपको सच्चे सुख और शान्ति की ओर ले जायगा।

जब किसी काम को आरम्भ किया जाता है तो उसके पीछे कोई-न-कोई कारण अवश्य ही होता है…और जहाँ कारण होता है वहाँ उसका कुछ-न-कुछ परिणाम भी अवश्य होता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है।...एक कहावत है—'बोया पेड़ बबूल का तो आम कहाँ से खाय!' अर्थात् कारण और परिणाम में चोली और दामन का साथ होता है। जैसा कारण होगा वैसा ही उसका परिणाम होगा।...श्रेष्ठ काम का परिणाम सर्वदा श्रेष्ठ और बुरे काम का परिणाम सर्वदा बुरा होता है।

प्रत्येक व्यक्ति यही चाहता है कि भले ही वह बुरे काम करे, किन्तु उसके परिणाम उस पर प्रभाव न डालें। ...यह अज्ञान है—उसकी भूल है।...आज कलियुग नहीं वरन् करयुग है। ..जिस प्रकार एक व्यक्ति घर के दरवाजे से निकल-कर मार्ग पर आता है और मार्ग तय करके किसी विशेष स्थान पर पहुँच जाता है, ठीक इसी प्रकार किसी भी काम का श्रीगणेश हमें उसके परिणाम तक पहुँचा देता है।... यही परिणाम हमारे जीवन की जंजीर की एक कड़ी बन जाता है।

इस संसार में हर घड़ी, हर पल अच्छे-बुरे आरम्भ होते हैं। जैसा भी आरम्भ होता है वैसा ही उस काम का फल होता है। यदि आप अपने-आपको सोच-समझ और चतुराई से बुरे और निकृष्ट श्रेणी के काम आरम्भ करने से बचाते रहेंगे तो स्वयं ही आप उनके बुरे परिणामों से अछूते रहेंगे।

श्रीगणेश या आरम्भ कई प्रकार के होते हैं। कुछ ऐसे होते हैं जिन पर हमारा अपना कोई अधिकार नहीं होता है, जिन पर हमारा कोई वश नहीं चलता और जो प्रकृति के नियन्त्रण में रहते हैं, जैसे वर्षा का समय-कुसमय होना, ओलों का पड़ना, बिजली का गिरना आदि-आदि।

अथवा जिन पर हमारा स्वयं का तो अधिकार नहीं वरन् अन्य व्यक्तियों का अधिकार होता है, जो हमारी ही भाँति किसी भी काम को करने में स्वतन्त्र होते हैं। उदाहरणतया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चोरों और डाकुओं का आकर घर को लूट ले जाना, लड़ाई के समय वायुयानों से बम-वर्षा, और अन्य, जिनसे जीवन और धन को भय हो सकता है।...इस प्रकार के आरम्भों पर हमारा कोई वश नहीं चल सकता है।

याद रखो कि इस प्रकार के आरम्भों से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है। हमें तो अपनी सारी शक्ति और सारा ध्यान उन आरम्भों की ओर लगाना चाहिये जिन आरम्भों पर हमें पूरा-पूरा अधिकार प्राप्त है, जिन पर हमारा पूरा अधिकार रहे और यदि सच पूछा जाय तो ऐसे ही आरम्भों से वे परिणाम सामने आते हैं जिनसे जीवन जीवन बनता है।

सभी आरम्भ वस्तुतः हमारे विचारों और व्यवहारों के आरम्भ होते हैं। हमारे मस्तिष्क में विभिन्न प्रकार के विचारों का सृजन होता रहता है। यह ठीक है कि वे रहते गुप्त ही हैं, फिर भी हमारे व्यवहार और आचरण में उनकी पूरी-पूरी झलक मिलती है। कहने का मतलब यह है कि हमारे सभी आरम्भ हमारे आचरण और व्यवहार में निहित होते हैं, या ऐसा कहिये कि सभी प्रकार के अच्छे और बुरे आरम्भ हमारी स्वयं की देन होते हैं। अतः हमें इस प्रकार के आरम्भों ही की ओर पूरा ध्यान देना चाहिये।

सुखी जीवन के लिये सबसे सरल और सुगम श्रीगणेश यह है कि हम अपने दैनिक जीवन की घटनाओं को ध्यानपूर्वक देखें।...और देखें कि हमारा दिन किस प्रकार व्यतीत होता है, हम किस समय सोकर उठते हैं और अपने नित्य कर्मों को किस प्रकार आरम्भ करते हैं। प्रत्येक दिन के जीवन-संघर्ष में कूदने पर हमारे हृदय की क्या दशा होती है और हम अपने दैनिक जीवन में सामने आये हुए प्रश्नों को किस प्रकार हल करते हैं। इस प्रकार हमें यह बात पता चल जायगी कि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक दिन के उचित या अनुचित और ठीक या गलत आरम्भ ही से हमारा वह दिन खुशी और आनन्द के साथ व्यतीत होगा अथवा कष्ट और विपत्तियों के साथ।...यह वस्तुत: सत्य है कि यदि प्रत्येक दिन का श्रीगणेश चतुराई से किया जाय तो वह दिन निःसन्देह श्रेष्ठ रहेगा और जीवन उत्तरोत्तर आनन्दकारी बनेगा।

जीवन का सर्वप्रथम आरम्भ एक कल्याणकारी दिनचर्या से होना चाहिये, और वह दिनचर्या यह है कि प्रत्येक व्यक्ति मुँह-अँधेरे उठने का अभ्यास करे। जहाँ तक सम्भव हो वह सूर्योदय से काफी समय पूर्व ही बिस्तर छोड़ दे। दिन-भर के कामों का उचित और अपेक्षित आरम्भ यही है। थोड़ी देर के लिये मान लिया कि सूर्योदय से काफी समय पूर्व उठने की आपको आवश्यकता नहीं है, फिर भी आलस्य को त्यागकर मुँह-अँधेरे उठने की आदत डाल लेना प्रत्येक व्यक्ति के लिये आवश्यक है। अतः मुँह-अँधेरे उठने की आदत डालो ताकि तुम सूर्योदय से पूर्व ही स्नान-ध्यान आदि दैनिक कर्मों से निवृत होकर अपने दैनिक कार्यों में पूर्ण मनोयोग से लग सको। यदि तुम आलस्य में देर तक बिस्तर पर ही पड़े रहोगे तो तुम्हारी आत्मिक तथा शारीरिक शक्तियों को बल कैसे मिल सकेगा?

याद रखो, यदि तुम अपनी त्रुटियों को छोटा समझकर उन्हें दूर करने पर ध्यान नहीं दोगे तो हमेशा दुख पाओगे। जो मनुष्य देर तक बिस्तर पर पड़े रहते हैं वे कभी भी प्रफुल्ल और प्रसन्नचित्त नहीं रह पाते हैं।...ऐसे व्यक्ति सर्वदा ही चिड़-चिड़े, आलसी, कमजोर और पीले हो जाते हैं। उनके चेहरे पर सर्वदा उदासी छाई रहती है। स्फूर्ति और चतुराई उनसे दूर भाग जाती है और वे अपने दैनिक कार्यों को भी भली

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाँति नहीं कर पाते हैं।...भला सोचो तो सही कि तुम केवल देर तक सोते रहने की बुरी आदत के कारण कितनी हानि उठा रहे हो।

एक शराबी है जो प्रतिदिन शराब पीता है। उसके हृदय में यह बात जड़ पकड़ गई है कि शराब पीने से उसका शरीर दृढ़ और स्वस्थ रहता है, काम भी वह अधिक कर सकता है, किन्तु सच यह है कि उसका शरीर दिन-प्रतिदिन खराब होता जाता है। स्वास्थ्य दिन-पर-दिन गिरता जाता है। वह कोई भी काम ठीक से नहीं कर पाता, उसका मस्तिष्क बहक जाता है। ठीक इसी प्रकार एक आलसी व्यक्ति अपने हृदय में यह धारणा बना लेता है कि अधिक समय तक बिस्तर में पड़े रहने तथा आराम करते रहने से वह अपने स्वास्थ्य तथा शरीर को लाभ पहुँचा रहा है। कमजोरी, उदासी, आलस्य और घबराहट को दूर करने के लिये उसका देर तक सोते रहना ही अच्छा है। किन्तु वह यह नहीं समझ पाता कि उसकी शारीरिक तथा मस्तिष्क सम्बन्धी सारी शिकायतें इसी बुरी आदत के कारण पैदा हुई हैं। देर में उठने की बुरी आदत से हानि होती है जिससे बहुत से व्यक्ति परिचित नहीं हैं। इसी अज्ञान के कारण उन्हें हार्दिक इच्छाओं, शारीरिक शक्तियों और आत्मिक शान्ति की हानि उठानी पड़ती है।

मुँह-अँधेरे ही उठकर तुम्हें एक साहसी युवक की भाँति अपने कामों पर जुट जाना चाहिये। यदि कोई विशेष आवश्यकता भी न हो तब भी मुँह-अँधेरे उठकर बाहर खुली हवा में सैर के लिये निकल पड़ो। खुली हवा में झूमते दृश्यों के अन्दर परमात्मा की विचित्र लीला को देखो। ऐसा करने से तुमको स्फूर्ति, चतुराई, उल्लास, सजीवता, प्रसन्नता और शान्ति मिलेगी तथा तुम्हारे शीघ्र उठने का फल तुमको मिल जायगा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
एक बार प्रयत्न करके तो देखो, क्योंकि एक बार प्रयत्न करने से बार-बार प्रयत्न करना सहल हो जाता है। शीघ्र ही उठने की आदत बना लेने से तुम्हारा मस्तिष्क चिंतामुक्त और विचार पवित्र हो जायँगे। फिर तुम धीरे-धीरे अभिमान, चिन्तन तथा सोच-विचार करने के अभ्यस्त होते जाओगे। तुम्हारे जीवन की कठिनाइयाँ तुम्हें सरल बनती हुई दिखाई देने लगेंगी और तुम अपने काम-धन्धों तथा कर्तव्यों को व्यर्थ के जंजाल न समझकर उनके करने में प्रसन्नता का अनुभव करने लगोगे। जीवन की प्रत्येक कठिनाई को बुद्धिमत्ता और साहस के साथ दूर करने के लिये अपने मस्तिष्क को दृढ़ और शरीर को तत्पर कर सकोगे।

प्रभात को ब्रह्म मुहूर्त का नाम दिया गया है। एक प्रकार की पवित्र शक्ति उस समय की नीरवता तथा विशुद्ध शान्ति में निहित होती है। वह दृढ़-प्रतिज्ञ तथा बलशाली मनुष्य, जो आराम के बिस्तर से उठकर उगते हुए सूर्य के दर्शन करने के लिये किसी पहाड़ पर चढ़ जायगा, वस्तुत: सत्य और आनन्द के बहुत ऊँचे पर्वत पर भी चढ़ सकेगा।

मुँह-अँधेरे उठकर ठीक समय पर काम आरम्भ कर देने से हृदय भी प्रफुल्लित रहता है और भोजन भी प्रसन्न चित्त से किया जाता है। दिन-भर के काम-काज भी भली प्रकार पूरे हो जाते हैं।

इस प्रकार तुम्हारा दिन तुम्हारे लिये लाभदायक सिद्ध होगा। एक प्रकार से देखा जाय तो प्रत्येक नवीन दिन नये जीवन का वह आरम्भ है जिसमें मनुष्य नये संकल्पों और कामों को नये उत्साह और शक्ति के साथ करता है। प्रत्येक दिन के अन्त में पड़ने वाली प्रत्येक रात अगले प्रभात के साथ एक नई

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़िन्दगी का संदेश लाती है। कल के बुरे जीवन से तुम दुख और विपत्तियाँ उठा चुके हो, पाप करते-करते थक गये हो। आओ, आज इस नये दिन से एक नव-जीवन, एक भले जीवन का श्रीगणेश करो। कल के पापों और कल की त्रुटियों पर इतनी चिन्ता और क्षोभ न करो कि जिससे आज के लिये अच्छे काम करने और नेक बनने के लिये शक्ति और सामर्थ्य ही न रहे।

इस विचार को ही अपने हृदय से दूर कर दो कि चूँकि कल तुमने बुरा काम किया था इसलिए आज अच्छा काम नहीं कर सकते हो। तुम कल के अनुभवों से लाभ उठाकर आज अपना जीवन ही बदल डालो और कल की अपेक्षा आज अच्छे स्तर पर काम करने का प्रयत्न करो। आज का दिन व्यर्थ न जाने दो। आज के दिन को उचित प्रकार से आरम्भ करो। यदि आरम्भ ठीक होगा तो फिर उसका परिणाम भी ठीक ही होगा। दिन-भर की सफलता प्रातःकाल की आरम्भिक कार्यवाही पर ही निर्भर होती है। किसी विशेष कर्तव्य और उत्तरदायित्व के काम को आरम्भ करना एक आवश्यक श्रीगणेश है जिसकी ओर काफी ध्यान देने की आवश्यकता होती है।...देखो, मकान बनवाते समय किन बातों का ध्यान रखा जाता है। सबसे पहले कागज़ पर उसका नक्शा बनाया जाता है और फिर नींव रखने से लेकर उसके समाप्त करने तक प्रत्येक भाग को नक्शे ही के अनुसार बनाया जाता है। यदि आरम्भ में मकान का नक्शा न बनाया जाय तो उसके बनाने के सारे प्रयत्न असफल रहेंगे, क्योंकि प्रथम तो मकान टूटे-फूटे बिना तैयार ही न होगा...और यदि हो भी गया तो वह बेढंगा, निकम्मा और कमजोर होगा। यही नियम प्रत्येक काम पर लागू होता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई भी काम क्यों न हो, उसके करने का प्रथम नियम और उचित आरम्भ यह है कि उसके करने का सही ढङ्ग और ठीक ढाँचा ध्यान में रख लिया जाय। रद्दी और बेढंगे कामों को प्रकृति भी पसन्द नहीं करती। वह कुप्रबन्ध और भद्देपन की विरोधी है।...यहाँ यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि भद्दापन और बरबादी एक ही दशा के दो विभिन्न नाम हैं। किसी भी काम का अच्छा ढंग और श्रेष्ठ लक्ष्य सर्वदा जीवित रहते हैं। जो व्यक्ति अपने कामों में इस सत्यता को भूल जाता है वह सफलता से हाथ धो बैठता है।

बेढंगा जीवन अंतिम समय तक वैसा ही व्यर्थ और निरुद्देश्य रहता है जैसे वह आरम्भ में था। ऐसे जीवन में सर्वदा अशान्ति ही व्याप्त रहती है और अभी वह आधा भी समाप्त नहीं होने पाता कि व्यक्ति उससे उकता जाता है।

यदि तुम किसी भी काम को बिना सोचे-समझे या उसका ढाँचा ध्यान में रखे बिना आरम्भ करोगे तो अटकलपच्चू प्रयत्न करने के कारण सफलता प्राप्त न कर सकोगे। जो नियम किसी मकान को बनाने में लाभदायक सिद्ध होते हैं, उनकी आवश्यकता अन्य दूसरे कामों में भी पड़ती है। अच्छा नक्शा बना लेने के पश्चात् उसको पूर्ण करने के लिये भी उचित रूप से प्रयत्न किया जाना चाहिये और ऐसा करने से ही पूर्ण सफलता तथा पूर्ण आनन्द के साथ काम के समाप्त होने की आशा रहती है।

केवल व्यापार और कारीगरी के कामों में ही नहीं वरन् सभी प्रकार के कामों में यही नियम काम देता है। लेखक के पुस्तक लिखने में, चित्रकार के चित्र बनाने में, लेक्चरार के लेक्चर देने में, सामाजिक सुधारक के सुधार में, आविष्कर्ता के आविष्कार में...कहने का अर्थ यह है कि सभी प्रकार के कामों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को आरम्भ करने से पूर्व चतुराई के साथ काम करने के ढंग का नक्शा मस्तिष्क में बिछा लेना पड़ता है।

यदि नक्शा अच्छा बनेगा तो काम भी अच्छा ही होगा और यदि नक्शा खराब बनेगा तो काम भी खराब ही होगा। अतः काम को आरम्भ करने से पूर्व उसके प्रत्येक पहलू पर खूब विचार-विमर्श कर लेना चाहिये। बुद्धिमान वही कहलाते हैं जो न केवल काम करने का ज्ञान रखते हैं, वरन् उन कामों को आरम्भ करने से पूर्व यह भी जानते हैं कि यदि आरम्भ अच्छा होगा तो उसका परिणाम भी अच्छा होगा। मूर्ख लोग आरम्भ को व्यर्थ और तुच्छ समझकर बिना विचारे परिणाम को पकड़ने की ओर दौड़ते हैं और अन्त में असफल रह जाते हैं।

अब मैं तुम्हारा ध्यान एक अन्य आरम्भ की ओर खींचना चाहता हूँ। वह एक ऐसा आरंभ है, एक ऐसा बड़ा और महत्त्वशाली श्रीगणेश है, जिस पर हमारे जीवन की प्रसन्नताएं और शोक, सुख और दुख आदि निर्भर हैं। किन्तु दुख इस बात का है कि साधारणतया लोग इसे भूले हुए हैं····और कुछ तो इसे बिल्कुल भी नहीं समझते हैं। जो थोड़े-बहुत समझते भी हैं तो वे इस पर चलते नहीं। इस महत्त्वशाली तथ्य पर चलने वालों की संख्या अंगुलियों पर गिनी जा सकती है।

और वह आरम्भ यह है कि जो विचार हमारे मस्तिष्क में उठते रहते हैं उनका आरम्भ हमारे हृदय की गहराइयों से होता है। हमारा सारा जीवन इसी क्रम पर चलता है। इस सबका कारण वे ही विचार होते हैं।

मनुष्य का चलन इन्हीं विचारों की पृष्ठभूमि पर बनता है। सभी अच्छे अथवा बुरे काम उसके मानसिक विचारों के प्रतिरूप होते हैं, जो पहले हृदय में छिपे रहते हैं और बाद में विभिन्न कामों के रूप में दिखाई देने लगते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धरती की छाती में बोया गया बीज किसी वृक्ष का आरंभ होता है। बीज फूटता है, उगता है और फिर प्रकाश में आकर वृक्ष का रूप धारण करने लगता है। समय आने पर वही छोटा-सा बीज विशालकाय वृक्ष बन जाता है। इसी प्रकार मस्तिष्क में आया हुआ विचार व्यक्ति के चलन का श्रीगणेश है। वह विचार मस्तिष्क में अपनी जड़ें जमाता है और फिर काम के रूप में प्रत्यक्ष हो जाता है तथा विकसित होकर व्यक्ति का चाल-चलन बनाता है।

यही है किसी व्यक्ति का भाग्य, अर्थात् विचारों के क्रियात्मक रूप ही का नाम भविष्य अथवा भाग्य है। क्रोध, ईर्ष्या, लोभ, लालच, घृणा, शत्रुता, संकीर्णता आदि से भरे हुए पतित विचार गलत आरम्भ हैं। इनसे मनुष्य के हाथ दुख और विपत्तियों के अतिरिक्त कुछ नहीं लगता है, क्योंकि बुरे विचारों के फल भी बुरे ही होते हैं। प्रेम, समानता, सेवा, सहानुभूति और उदारता से भरे हुए पवित्र विचारों ही को सही आरम्भ कहा जा सकता है। इन विचारों से खुशी और शान्ति देने वाले परिणाम प्राप्त होते हैं। देखो तो, कितना सरल, कितना सीधा और कितना उचित है यह नियम। किन्तु दुख है कि इसको मनुष्य बिल्कुल ही भुला बैठा है और इसे तुच्छ, व्यर्थ और छोटा समझकर इसकी ओर ध्यान भी नहीं देता, बल्कि अपने विचारों को उन्मत्त सांड की भाँति इधर-उधर आवारा फिरते रहने की भी छूट दे देता है।

जो माली यह जानता है कि चतुराई के साथ कैसे, कब और कहाँ बीज बोना चाहिये, वह श्रेष्ठ परिणाम भी हस्तगत कर लेता है और फलों को लगाने तथा अधिक पैदावार बढ़ाने में उसका अनुभव दिन-प्रतिदिन बढ़ता जाता है। जो व्यक्ति दृढ़ता के साथ पवित्र विचारों के बीज अपने मस्तिष्क में अच्छी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह और उचित समय पर बोने का उपाय जानता है, वह अपने जीवन में श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त करके सत्य का धन एकत्रित कर लेता है। इसी प्रकार उस व्यक्ति को सबसे अधिक आनन्द मिलता है, जो अपने मस्तिष्क में पवित्र और श्रेष्ठ विचार को स्थान देता है।

पवित्र विचारों से पवित्र कामों की झलक मिलती है, पवित्र कामों से पवित्र जीवन बनता है, और पवित्र जीवन से अलौकिक आनन्द की प्राप्ति होती है। यह एक अटल नियम है। इसी पर चलना सीखो। जो व्यक्ति अपने विचारों की बनावट और उनके लक्ष्य की ओर ध्यान रखता है, वह बुरे विचारों को अपने मस्तिष्क में पनपने क्या घुसने तक नहीं देता है। और मान लो कि ऐसे विचार कभी उसके मस्तिष्क में आ भी जायें तो वह उन्हें तुरन्त बाहर निकालकर उनके स्थान पर श्रेष्ठ विचारों को लाने का प्रयत्न करता है। ऐसा व्यक्ति अन्त में इस नियम को जान ही लेता है कि वे उसके निजी विचार ही तो हैं,जिनका प्रभाव उसके जीवन की प्रत्येक कड़ी पर पड़ता है तथा जिनसे उसका सारा जीवन बनता है।

जब वह इस तथ्य को पूर्णतया समझ लेता है कि उसके निजी विचार ही उसके जीवन को बनाने या बिगाड़ने वाले होते हैं, तो उसकी आन्तरिक दृष्टि जाग उठती है। तब वह उन पवित्र विचारों को ही अपने मस्तिष्क में घुस पाने देता है जिनसे उसे सच्ची शान्ति और आनन्द प्राप्त होता है।

बुरे और गलत विचार उत्पन्न होते समय, बढ़ते समय और परिणाम निकलते समय तक दुख, कष्ट, विपत्तियाँ तथा शोक के आधार होते हैं तथा उनके परिणाम भी तीव्र, कटु और दुखदाई होते हैं। इसके विपरीत पवित्र विचारों के उत्पन्न होते

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय, बढ़ते समय तथा परिणाम निकलने तक आनन्द-ही-आनन्द मिलता है।

सुख और आनन्द प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले मनुष्य को बहुत से ठीक और उचित आरम्भ ढूँढने और उनको कार्यान्वित करने की हृदय से कोशिश करनी चाहिये। इन आरम्भों में सबसे महत्त्वशाली और श्रेष्ठ आरम्भ, जो सारे सुखों की देन है, मस्तिष्क में आने वाले विचारों का सही श्रीगणेश है, जिसका अर्थ यह है कि मनुष्य सहनशीलता, दृढ़ इच्छा-शक्ति, पवित्रता और ज्ञान-प्राप्ति में लगातार उन्नति करता जाय।

इस अभ्यास से जीवन उन्नति की ओर बढ़ता जाता है, क्योंकि जो व्यक्ति इस संसार में खूब सोच-विचारकर कदम बढ़ाता है उसके सारे दुख दूर हो जाते हैं और उसका हर पल शान्ति तथा आनन्द से भर जाता है, वह पूर्ण आनन्द को प्राप्त कर लेता है।

दूसरा पथ दिखाने से पूर्व मैं फिर तुमको बताता हूँ कि हमारे निजी विचार ही हमारे भाग्य को बनाने या बिगाड़ने वाले हैं, अतः इन्हें ठीक रखो। यही आनन्द है, शान्ति है, सुख है और जीवन है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा पथ

छोटे-छोटे काम और कर्तव्य

"हमारे दैनिक कामों और कर्तव्यों की पूर्णता में वह कुञ्जी है जिससे हमारे लिये सुख और शान्ति के द्वार खुलते हैं। जो व्यक्ति ठीक समय पर वहाँ पहुँचेगा, वही उस स्वर्गिक आभा के दर्शन कर सकेगा।"

"उस सितारे की भाँति, जो दूर आकाश में अनवरत चमक रहा है, जो न दम लेता है, न ठहरता है, प्रत्येक व्यक्ति को इस प्रकार अपने दैनिक कर्तव्यों को पूरा करने में अपने सम्पूर्ण साहस और दृढ़ता के साथ लगातार लगा रहना चाहिये।" —गेटे

जिस प्रकार सही आरम्भ से सुख और गलत आरम्भ से दुख का प्राप्त होना आवश्यक है, उसी प्रकार छोटे-छोटे कामों और कर्तव्यों से भी सुख और दुख प्राप्त होता है। यह बात नहीं है कि किसी कर्तव्य के पालन में ही स्वयं कोई ऐसी शक्ति हो जो मनुष्य को सुख या दुख की भेंट देती हो, वरन् सुख या दुख देने वाली तो हमारे हृदय की वह दशा तथा प्रवाह है जिससे हम उस कर्तव्य को पूरा करते हैं।

हम हृदय में जैसे भाव रखकर किसी कर्तव्य को पूरा करते हैं, हमारा सुख और दुख उन्हीं भावों पर निर्भर होता है। एक व्यक्ति अपने काम को खुशी-खुशी करता है और दूसरा व्यक्ति

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजबूर होकर। काम तो दोनों ही को करना पड़ता है, किन्तु एक को उसे पूरा करने में सुख मिला तथा दूसरे को दुख।

छोटे-से-छोटे काम को भी निर्लिप्त भाव से, मन लगाकर करने में न केवल सुख ही मिलता है वरन् काम करने की बहुत बड़ी ताकत भी प्राप्त होती है। जिस प्रकार बूँद-बूँद करके घड़ा भर जाता है, कण-कण मिलकर नदी बन जाती है, उसी प्रकार हमारा सारा जीवन भी छोटी-छोटी बातों के मिलने से बना है। जीवन के दैनिक कार्यों को भली भाँति करने में ही चतुराई है।

देखो, जब किसी वस्तु के पृथक्-पृथक् अंग सुन्दर और पूर्ण होते हैं। तो वह पूरी वस्तु भी पूर्ण और सुन्दर दिखाई देती है। यही दशा मानवीय जीवन की है। यदि हमारा प्रत्येक काम सुन्दर और पूर्ण होगा तो हमारा जीवन भी सुन्दर और पूर्ण होगा। यदि हमारे काम अधूरे और बेढंगे होंगे तो हमारा जीवन भी अधूरा और बेढंगा होगा।

संसार में प्रत्येक वस्तु छोटे-छोटे कणों से मिलकर बनी होती है। छोटी वस्तुओं की पूर्ति से ही बड़ी वस्तुओं की पूर्ति होती है। यदि संसार के किसी भाग की बनावट में कमी रह जाय तो सारे संसार में कमी रह जायगी। यदि घड़ी की एक कल निकाल दी जाय तो घड़ी बेकार हो जायगी। मिट्टी के कणों के बिना धरती नहीं बन सकती है। यदि मिट्टी का नन्हा-सा कण पूर्ण है तो धरती भी पूर्ण है। एक छोटे-से काम को भूल जाने से बड़े काम में भी गड़बड़ी पड़ जाती है। बर्फ का एक ढेला भी इतना ही पूर्ण है जितना कि एक सितारा। ओस की एक बूँद इतनी ही सुडौल है जितना कि एक ग्रह। एक छोटा-सा भुनगा भी उसी हिसाब और अन्दाज से बना हुआ है जिस हिसाब और अन्दाज से एक मनुष्य।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईंट पर ईंट रखने और उन्हें गुनिया द्वारा ठीक प्रकार से जमा देने से अन्त में एक सुन्दर मकान तैयार हो जाता है। छोटे-छोटे से ही बड़ा बनता है। छोटा बड़े का गुलाम नहीं है, वरन् उसकी राह दरशाने वाला और मार्ग सुझाने वाला स्वामी है। बच्चा ही मनुष्य का बाप है। स्वार्थी और घमण्डी लोग बड़ा बनना तो चाहते हैं, कोई बड़ा काम भी करना चाहते हैं; किन्तु छोटे-छोटे कामों को टालते जाते हैं, उन्हें तुच्छ दृष्टि से देखते हैं जबकि उनका तुरन्त पूरा करना आवश्यक होता है। किन्तु ऐसे कामों को करने से न तो उनका नाम ही होता है, और न ही उन्हें वाहवाही मिलती है। वे उन कामों को साधारण और छोटा समझकर हाथ लगाना अपनी हीनता समझते हैं। बुद्धिहीन व्यक्तियों में चूंकि नम्रता नहीं होती इसीलिये उनमें बुद्धि और योग्यता का भी अभाव रहता है। वे तेजी से भूलकर ऐसे कामों में हाथ डाल देते हैं जिनको पूरा करने की न उनमें शक्ति है, न योग्यता।

बड़ा व्यक्ति इसीलिये बड़ा बन गया है कि उसने छोटे-छोटे कामों को दिल लगाकर किया है। अपने स्वार्थ, अभिमान, नाम और वाहवाही की चिन्ता नहीं की है और अपने मस्तिष्क को मिटाकर शक्तिशाली बना है। सांसारिक ऐश्वर्य और प्रशंसा को तो उसने कभी ढूँढा तक नहीं, वरन् सत्य-निष्ठा, श्रद्धा, सत्यता, निर्लिप्तता, भक्ति और समानता के भाव से गतिशील होकर ऐसे कामों को पूरा किया है जिनके करने में न तो उसकी प्रशंसा ही हुई और न कोई शाबासी ही मिली तथा न कोई पारितोषिक ही प्राप्त हुआ। ऐसा व्यक्ति कोई मतलब न रखकर सत्य का पक्ष लेता है और नित्यप्रति के साधारण कर्तव्यों और कामों को पूरा करता हुआ अज्ञात प्रेरणा से अच्छे-से-अच्छा बनता चला जाता है तथा अन्त में स्वयमेव ही

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महानता की चोटी पर जा पहुँचता है। महानता प्राप्त करने के लिये बड़े-से-बड़ा काम करने की आवश्यकता नहीं है, वरन् साधारण कर्तव्यों को प्रतिदिन ईमानदारी से पूरा करने की आवश्यकता है। यदि काम में स्वार्थ न आने पाये तो प्रशंसा स्वयं ही चरण चूमती है।

बड़ा व्यक्ति–महापुरुष अपने एक-एक पल की, तनिक-तनिक-सी बात की, मुँह से निकले हुए एक-एक वाक्य की, सहानुभूति के तनिक-से शब्द की, किसी के मस्तक झुकाने पर 'प्रसन्न रहो' कहने, राह चलते हुए सलाम, बन्दगी, राम-राम, नमस्कार, नमस्ते करने, खाने-पीने से किसी को सहायता देने, दूसरे के लिए तनिक-सा प्रयत्न कर देने, किसी पर कुछ अहसान करने और इसी प्रकार की सैकड़ों बातों का, जो प्रत्येक दिन हमारे सामने आती हैं, मूल्यांकन करना जानता है। वह प्रत्येक काम को भगवान् की ओर से निर्धारित किया गया समझता है। वह अपना केवल इतना-सा ही कर्तव्य समझता है कि उस समय सामने आये हुए छोटे-से-छोटे काम को प्रसन्नवदन पूरा करे जिससे कि उसका जीवन उच्चतर बनता चला जाय। वह न तो किसी काम में असावधानी करता है और न ही शीघ्रता दिखाता है। हाँ, वह गलतियों और मूर्खताओं से बचता हुआ वर्तमान कामों को, फिर चाहे वे कितने ही छोटे क्यों न हों, अपने पूरे ध्यान के साथ पूरा करता है। वह न तो किसी काम को आगे के लिए उठाकर रखता है और न ही दुख प्रकट करता है। वह रंज और खुशी का विचार सर्वथा त्यागकर अपने-आपको कर्तव्य के पूर्ण करने में लगा देता है तथा बच्चों की सरलता और स्वाभाविक शक्ति को अज्ञात रूप से प्राप्त कर लेता है। इसी शक्ति को महानता और विशालता कहते हैं।

चीन के महापुरुष महात्मा का अपने शिष्यों को यह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपदेश था कि अपने घर में भी उसी प्रकार और वैसी ही सजीवता के साथ खाना खाओ जैसे किसी राजा के भोज में खाते हो। यह उपदेश छोटी-छोटी बातों की महानता को प्रत्यक्ष करता है। महात्मा बुद्ध की आज्ञा है कि "यदि किसी काम को करना है तो देखने में वह कितना ही छोटा क्यों न हो, पूरी शक्ति और हार्दिक इच्छा से उसे पूरा करना चाहिये।" छोटे-छोटे कामों में असावधानी बरतना या उन्हें बेमन तथा बुरे ढंग से करना कमजोरी और नादानी है।

प्रत्येक काम को निर्लिप्त भावना से और पूर्ण मनोयोग के साथ करने से मनुष्य के अन्दर प्राकृतिक ढंग से बड़े-बड़े कर्तव्यों को पूरा करने की शक्ति उत्पन्न हो जाती है, क्योंकि कर्तव्यों को ठीक ढंग से पूरा करने में शक्ति बढ़ती है, बुद्धि बढ़ती है, हार्दिक इच्छा को बल मिलता है और चाल-चलन दृढ़ होता है। जैसे प्राकृतिक नियम के अनुसार वृक्ष पर फूल खिलते हैं, वैसे ही कर्तव्य को पूरा करने से मनुष्य स्वयं ही विशाल बन जाता है, क्योंकि वह प्रत्येक प्रयत्न और उपाय को पूरी शक्ति तथा अनवरत परिश्रम के साथ अपेक्षित स्थान और समय पर उपयोग में लाता है जिससे न शक्ति ही व्यर्थ जाती है और न ही झगड़ा पैदा होता है वरन् प्रेम और मेल पैदा होकर उसके जीवन और चाल-चलन को श्रेष्ठ-से-श्रेष्ठ बनाते जाते हैं।

एकाग्रता और इच्छा-शक्ति को बढ़ाने के लिये संसार में इस समय अनेक उपाय बताये जाते हैं; उदाहरणतया साँस का रोकना, योग के आसन लगाना, किसी विशेष विन्दु अथवा चित्र पर दृष्टि जमाना, आदि-आदि। किन्तु यदि मनुष्य अपने नित्यप्रति के कामों को पूरी शक्ति और मनोयोग के साथ करता रहे तो हृदय की गति और इच्छा-शक्ति प्राकृतिक ढंग से बढ़ती जाती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे दुख तो इस बात का है कि अच्छे-अच्छे लोग भी कर्तव्यपरायणता के इस सही उपाय को भूले हुए हैं, क्योंकि इसमें कुछ त्याग करना पड़ता है और अपने मन को मारना पड़ता है। आत्मिक शक्ति प्राप्त करने के लिये अस्वाभाविक उपाय से शरीर को कष्ट देना न केवल गलत है, वरन् हानिकारक भी है; उदाहरणतया अग्नि के बीच में तपना, हाथ या टाँगें सुखा लेना, शरीर को जंजीरें मार-मारकर घायल कर लेना, आदि-आदि।

देखो, बचपन से लेकर यौवन तक पहुँचने के लिए कोई विशेष ढंग नहीं है, सिवाय इसके कि बच्चा धीरे-धीरे बढ़ता जाय। चलने फिरने, बड़ा होने और यौवन तक पहुँचने में कई वर्ष लग जाते हैं। इसी प्रकार अज्ञान से ज्ञान, अयोग्यता से योग्यता, कमजोरी से शक्ति धीरे-धीरे ही प्राप्त हुआ करता है। मनुष्य को चाहिए कि वह लगातार सोच-विचार के साथ प्रयत्न-पर-प्रयत्न और काम-पर-काम करता हुआ धीरे-धीरे आगे बढ़ना सीखे।

यह सच है कि कोई साधु समाधि और आसन आदि का अभ्यास करता हुआ, अपने शरीर को लगातार कष्ट देकर, किसी सीमा तक एक प्रकार की शक्ति प्राप्त कर लेता है; किन्तु उसे यह शक्ति भारी मूल्य चुकाकर मिलती है, क्योंकि यह शक्ति किसी दूसरे पहलू में किसी अन्य शक्ति को गन्दा करके हाथ लगती है और ऐसा व्यक्ति कभी भी योग्य और लाभकारी व्यक्ति नहीं बनता।

हाँ, वह एक मदारी की भाँति कुछ करतब अवश्य दिखा सकता है, किन्तु उसका जीवन अधूरा ही रहता है। सच्ची आत्मिक शक्ति तो यह है कि मनुष्य चिड़चिड़ेपन, बेसमझी, जल्दबाज़ी और दूसरी व्यावहारिक कमजोरियों को, जो हमारे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनिक जीवन के साथ जुड़ी हुई हैं और तनिक-सी उत्तेजना पाने पर ही सामने आकर खड़ी हो जाती हैं, पूरी तरह वश में कर ले। सच्ची आत्मिक शक्ति यह है कि मनुष्य उस समय शान्ति, धीरज, सन्तोष और सहनशीलता की शक्ति को दिखाये जबकि वह सांसारिक कर्त्तव्यों को पूरा कर रहा हो और जब उसके चारों ओर जोश में आये हुए तथा भड़के हुए लोगों की भीड़ लगी हुई हो। इससे कम कोई भी वस्तु सच्ची शक्ति नहीं कहला सकती है।

नित्यप्रति के काम और कर्त्तव्यों को अधिक-से-अधिक सुन्दर ढंग से तथा ठीक तौर से पूरा करने से आत्मिक शक्ति स्वयं ही धीरे-धीरे बढ़ती जाती है। सच्चा गुरु वह नहीं है जो अपने गुप्त आत्मिक प्रदर्शनों द्वारा लोगों को आश्चर्य में डाल देता है और तनिक-सी ही बात से भड़ककर आपे से बाहर हो जाता है, कई बार चिड़चिड़ापन, क्रोध, मूर्खता या किसी अन्य प्रकार की बुरी आदत का शिकार बन जाता है, वरन् सच्चा गुरु वह है जो प्रत्येक समय और प्रत्येक अवसर पर सहनशीलता का प्रदर्शन करता है, जो क्रोध को अपने पास तक फटकने नहीं देता, जो शान्ति, सहनशक्ति तथा विशाल-हृदयता का स्वामी है, जो अपने-आप पर नियन्त्रण रखता है और भड़काये जाने पर भी नहीं भड़कता है। ...ऐसा व्यक्ति ही सच्ची शक्ति रखता है। इसके अतिरिक्त जो कुछ भी है वह शक्ति नहीं वरन् धोखा और नाटक है।

मनुष्य को चाहिये कि जब उसके सामने कोई काम हो तो भले ही वह कितना ही छोटा क्यों न हो उसे पूरी शक्ति और ध्यान से करे, अपने विचार को किसी अन्य ओर न जाने दे तथा न ही इनाम अथवा प्रशंसा का विचार हृदय में आने दे। ऐसा करने से वह अपने हृदय पर अधिक-से-अधिक नियन्त्रण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्याधर स्मृति संग्रह

पाता जायगा और इस प्रकार उन्नति करता हुआ वह अन्त में आत्मिक शक्ति का स्वामी बन जायगा।

वर्तमान काम में अपने-आपको ऐसे मनोयोग से लगाओ और उसे ऐसी हार्दिक इच्छा से करो कि वह पूर्णरूपेण पूरा हो जाय। हृदय की एकाग्रता, इच्छा-शक्ति और शक्ति की श्रेष्ठता का सबसे सही ढंग यही है। जंत्र-मंत्र आदि व्यर्थ के पचड़ों की ओर मत भागो। उन्नति करने का प्रत्येक उपाय और ढंग तुम्हारे अपने हाथ में है, तुम्हारे अपने ही हृदय में है। तुम्हें केवल यह सीखना है कि तुम जिस दशा में हो उसमें ही भली प्रकार से अपने-आपको लगाओ। जब तक ऐसा न करोगे तब तक वे श्रेष्ठ शक्तियाँ, जो तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हैं, तुम्हें नहीं मिल सकती हैं।

शक्ति और महानता प्राप्त करने का उपाय केवल यही है कि वर्तमान समय का उपयोग तुम अपनी सम्पूर्ण शक्ति तथा ज्ञान के साथ करो। वर्तमान समय अपना काम स्वयं अपने ही साथ लाता है। तुम्हारा तो काम केवल यही है कि तुम उसे भली-भाँति पूरा करो।

बड़ा व्यक्ति, महान् व्यक्ति छोटे-छोटे कामों को भी बड़े-बड़े कामों की भाँति ही करता है। वह किसी भी काम को तुच्छ अथवा छोटा नहीं समझता। किन्तु छोटे दिल वाला, मूर्ख, नासमझ व्यक्ति छोटे कामों को असावधानी तथा बेमन से करता है और बड़े कामों के पीछे भागता फिरता है। वह यह नहीं समझता कि छोटे कामों को असावधानी और भद्देपन से करके वह संसार के सामने अपनी अयोग्यता और कायरता का प्रदर्शन करता है। जो व्यक्ति अपने-आप पर काबू नहीं पा सकता वह सर्वदा दूसरों पर शासन करने और महत्त्वशाली उत्तरदायित्वों को स्वीकार करने की इच्छा रखता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो व्यक्ति अपने कर्त्तव्य को तुच्छ समझकर पूरा नहीं करता, वह अपने-आपको धोखा देता है। किसी भी कर्त्तव्य को तुच्छ समझकर पूरा न करना अच्छी बात नहीं, वरन् बड़ी हानिकारक है। जिस प्रकार किसी काम को साहस और शक्ति के साथ करने से और भी अधिक शक्ति प्राप्त होती है, उसी प्रकार, उस काम को बेमन के साथ करने से कमजोरी बढ़ती है।

मनुष्य छोटे-छोटे कर्त्तव्यों को पूरा करने में अपने-आपको जैसा दिखाता है, वैसा ही उसका सारा जीवन और आचरण बन जाता है। कमजोरी से इतना ही दुख उत्पन्न होता है जितना पाप से। जब तक मनुष्य में चरित्र की शक्ति नहीं आती उसे सच्चा आनन्द नहीं मिल सकता। कमजोर व्यक्ति जब छोटे-छोटे कामों को पूरे मनोयोग के साथ करना आरम्भ कर देता है, तो उसमें शक्ति आ जाती है और शक्तिशाली व्यक्ति जब उनको असावधानी और बेमन से करना आरम्भ करता है तो वह कमजोर हो जाता है तथा अपनी पहली समझ और शक्ति को भी खो बैठता है।

"जिसके पास है उसे और अधिक दिया जायगा तथा जिसके पास नहीं है उससे वह भी छीन लिया जायगा जो कुछ भी उसके पास है।"

मसीह के इन शब्दों में क्रमिक विकास अर्थात् क्रमिक उन्नति के नियम की ओर संकेत किया गया है। लोगों ने इस नियम को बहुत ही कम समझा है। मनुष्य अपने प्रत्येक विचार के साथ-साथ जैसे सोचता है, प्रत्येक शब्द के साथ जैसे बोलता है, प्रत्येक काम के साथ जैसे करता है, उससे या तो वह कुछ प्राप्त करता है या कुछ गँवाता है। मनुष्य का चाल-चलन पल-पल में अच्छा बनता और बिगड़ता है। उसमें कुछ जमा होता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है अथवा कम होता है और यह कमीवेशी उसके प्रत्येक विचार, प्रत्येक कथन तथा प्रत्येक कार्य के साथ-ही-साथ होती रहती है।

जो छोटी बातों पर हावी हो जाता है वह बड़ी बातों के करने के योग्य बन जाता है, किन्तु जो उसको तुच्छ जानकर पीछे हट जाता है वह अपने उद्देश्य में कभी भी सफल नहीं हो सकता।

मानवीय जीवन एक उस मशीन की भांति है जिसकी दशा और सूरत वैसी ही होती है जैसी उसके एक-एक पुरजे की, अर्थात् यदि एक भाग अपूर्ण है तो सारी मशीन भी अपूर्ण होगी और यदि उसकी प्रत्येक कल ठीक और क्रमानुसार लगी है तो सारी मशीन भी ठीक और सही होगी।

एक सफल व्यापार, एक पूर्ण मशीन, एक भव्य मन्दिर और एक श्रेष्ठ चाल-चलन अपने विभिन्न अङ्गों की पूर्णता पर निर्भर होता है।

अज्ञानी व्यक्ति समझता है कि छोटे-छोटे दोष, छोटी-छोटी त्रुटियाँ, छोटी-छोटी कमजोरियाँ, छोटे-छोटे पाप कुछ महत्त्व नहीं रखते। अतः वह उनकी ओर ध्यान नहीं देता है। वह इस धोखे में पड़ा हुआ है कि जब तक वह कोई बड़ी बदचलनी नहीं करता तब तक वह नेक, पवित्र और धर्मात्मा है। किन्तु ऐसा सोचने से वह अपनी रही-सही नेकी और पवित्रता भी खो बैठता है तथा संसार उसे उसके वास्तविक रूप में देख लेता है। उस समय न उसकी प्रतिष्ठा ही रहती है, न आदर-मान और न उसकी कोई कद्र ही करता है। उसका रौब-दौब सभी कुछ समाप्त हो जाता है और मान घट जाता है। ऐसा व्यक्ति यदि दूसरे लोगों को नेक बनाने का प्रयत्न करे और जनसाधारण को बड़े-बड़े दोष छोड़ने का उपदेश दे, तो उसका

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा प्रयत्न निष्फल और व्यर्थ का ढकोसला ही सिद्ध होता है। चूँकि वह अपने दोषों को दूर करने के स्थान पर उन्हें बहुत ही छोटा और तुच्छ समझता है, अतः उसका चाल-चलन भी तुच्छ हो जाता है। उसका जीवन छोटा समझा जाता है। वह जिस हल्केपन और बेहूदगी से ऐब करके अपनी कमजोरी को दिखाता है, उसका फल उसे यह मिलता है कि न तो उसका आदर होता है और न ही उसे कोई पूछता है।

बदी और ऐब करने वाले को कौन मुँह लगाये! अतः ऐसे व्यक्ति का काम कभी भी सफल नहीं होता है। कारण? कारण स्पष्ट है कि तिनके का सहारा लेना कौन पसन्द करता है! तिनके जैसे हल्के आदमी की बात ही कौन सुनता है! और सचमुच भला ऐसे व्यक्ति की बात भी कौन सुने जो न तो कुछ समझ रखता है और न क्रिया-शक्ति, जो भावना तथा अनुभवहीन है! कोई भी ज्ञानी व्यक्ति गूंज की आवाज़ के पीछे नहीं भागता है।

महान् व्यक्ति और महानता का पाठ पढ़ने वाला व्यक्ति उस भय से परिचित होता है जो इन साधारण त्रुटियों के फलस्वरूप सामने आता है। जिन ऐबों में लोग साधारणतया असावधानी के कारण गिर जाते हैं, वह उस स्वतन्त्रता को भी देखता है, पहचानता है जो उन ऐबों को छोड़ने और पवित्र विचार तथा क्रिया-शक्ति से प्राप्त होती है जिनको लोग साधारणतया अनावश्यक और तुच्छ समझते हैं। वह अपने मन को चुपचाप ही नियन्त्रित करने की महत्ता तथा मूल्य जानता है, जिसको दूसरे लोग प्रत्यक्ष रूप में नहीं देख पाते हैं।

जो व्यक्ति अपने छोटे-से-छोटे दोष को भी बड़ा और खतरनाक समझता है, वह अन्त में स्वयं साधु और महात्मा बन जाता है। वह यह भी जानता है कि उसके प्रत्येक विचार और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रियाशीलता से किस कदर अच्छा या बुरा प्रभाव पड़ सकता है। वह यह भी खूब पहचानता है कि नित्यप्रति के अच्छे या बुरे आचरणों से ही उसका अपना चाल-चलन और जीवन श्रेष्ठ बनता अथवा निकृष्ट होता है। इन सारी बातों पर ध्यान-पूर्वक मनन करके वह भलीभाँति देखभाल करता है और धीरे-धीरे अपने-आपको शुद्ध और पवित्र स्वभाव वाला बनाता चला जाता है। इस प्रकार वह अपने-आपको 'पूर्ण पुरुष' बना पाने में सफल होता है।

जिस प्रकार सागर बूँद-बूँद से, धरती कण-कण से और तारे प्रकाश के अंगारों से बने हुए हैं, उसी प्रकार मानवीय जीवन भी विचारों और आचरण से बना होता है, जिनके अभाव में जीवन का अस्तित्व ही नहीं है। प्रत्येक मनुष्य का जीवन वैसा ही होता है जैसे उसके विचार और जैसा उसका आचरण होता है। मनुष्य इन्हीं विचारों और आचरणों का गठन है।

पल-पल मिलकर वर्ष बनता है, इसी प्रकार क्रमिक विचारों और आचरणों से मानवीय जीवन तथा उसका चाल-चलन बनता है। जिस प्रकार के पृथक्-पृथक् अंग होंगे वैसी ही उनके गठन करने पर वस्तु तैयार होगी।

वर्ष साधारण ऋतुओं के मेल से बनता है। विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का एकत्र रूप यह भूमण्डल है। दूसरों का भला करने, दूसरों पर दया करने, सहानुभति रखने और दूसरों के लिये आत्म-समर्पण या त्याग करने से मनुष्य का चाल-चलन नेक और श्रेष्ठ बनता है। आत्म-त्याग, सहन-शक्ति और क्षमा करके अपनी स्वार्थपरता पर अधिकार पाने से मनष्य का चाल-चलन दृढ़ और श्रेष्ठ बनता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यनिष्ठ मनुष्य अपने जीवन के छोटे-छोटे व्यवहारों में भी निष्पक्ष नीति अपनाता है और नेक मनुष्य अपने तुच्छ-से-तुच्छ क्रियाकलाप में भी शराफत दिखाता है।

यह समझ लेना कि हमारा जीवन हमारे विचार और कार्यों से बिल्कुल पृथक् है, सख्त भूल है। याद रखो कि पल-भर में व्यतीत हो जाने वाला विचार और कार्य ही वास्तविक जीवन की नींव तथा अस्तित्व है। जब यह सत्य पूर्ण रूप से समझ में आ जाता है तो प्रत्येक वस्तु पवित्र दिखाई देने लगती है।

प्रत्येक काम धर्म-कार्य बन जाता है। जीवन के छोटे-से छोटे व्यवहार में सत्यता छिपी है। किसी बात को अधूरा न छोड़ने में ही योग्यता और महानता है।

माया आनी-जानी है, मार्ग बदल जाते हैं, मन की दूरियाँ आज कुछ और कल कुछ हो जाती हैं, किन्तु कर्त्तव्य न तो बदलता है, न कम होता है और न ही दबाया जा सकता है। ...कर्त्तव्य कर्त्तव्य है जो बाधाओं की भयावह आँधियों तक में अचल, अडिग बना रहता है।

सारा जीवन एक ही बार व्यतीत नहीं हो जाता वरन् पल-पल करके धीरे-धीरे व्यतीत होता है...और उन्हीं पलों से कुल जीवन बना हुआ है। यदि तुम्हारा हृदय चाहता है तो अपने प्रत्येक पल को भली प्रकार से गुज़ार सकते हो...और यदि ऐसा तुम कर सको तो फिर तुम्हारे सारे जीवन से बुराई का चिन्ह तक मिट जायगा।

एक कहावत है कि यदि तुम अपने पैसों को सँभालकर रखोगे तो रुपये अपनी रक्षा स्वयं ही कर लेंगे। यह कहावत केवल सांसारिक व्यवहार में ही ठीक नहीं घटती, वरन् आत्मिक संसार में और भी अधिक ठीक उतरती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो भी काम अब हो रहा है उसकी ओर यदि यह समझ कर पूरा ध्यान दिया जाय कि ऐसा करने से ही कुल जीवन और सारा चाल-चलन सुधरने वाला है, तो यह तुम्हारी सबसे बड़ी बुद्धिमानी और महानता होगी। यदि तुम अपने वर्तमान कार्यों को योग्यता से पूरा करते जाओगे तो बड़े-बड़े और प्रशंसा किये जाने वाले काम स्वयं ही सही तौर पर पूरे होते जायँगे।

जो भी काम तुम्हारे लिये करने को है उसमें रुकावटें और उलझनें आने पर भी मत घबराओ, वरन् उन्हें बिना किसी उद्देश्य के करते चले जाओ। लापरवाही और बेचैनी को अपने पास न फटकने दो और न ही बड़े-बड़े कामों के करने के निरर्थक विचारों के पीछे दौड़ो।...तुम अपने सारे ध्यान और शक्तियों को वर्तमान कामों की ओर लगाओ। ऐसा करने से वह महानता, जिसके लिये तुम बेचैन बने रहते हो, जिसके लिए तुम लालायित रहते हो, स्वयं ही तुम्हारी ओर आती हुई दिखाई देगी।

चिड़चिड़ेपन से बढ़कर कोई कमज़ोरी नहीं है। तुम अपने अन्दर की शराफत और नेकी को प्राप्त करने का प्रयत्न करो, न कि बाहर की वाहवाही को। तुम जिस दशा में अब हो उसी में उसको प्राप्त करना आरम्भ कर दो। जो कष्ट और आपदाएँ तुम अपने काम में देख रहे हो, वे वास्तव में उस काम में नहीं वरन् तुम्हारे हृदय में हैं। यदि उस काम के सम्बन्ध में तुम अपने हृदय के विचारों को बदल लो तो टेढ़ा मार्ग तुरन्त ही सीधा और सरल बन जायगा, कष्ट और आपदाएँ शान्ति और सुख में बदल जायँगी।

तुम अपने प्रत्येक क्षण को पवित्र और लाभप्रद बनाने का प्रयत्न करो। प्रत्येक काम को परे मनोयोग और निःस्वार्थ भाव

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से करो। अपने प्रत्येक विचार और प्रत्येक कार्य-कलाप को शान्तिपूर्ण तथा रसपूर्ण बनाओ। सत्यता की पैरवी करो। अभ्यास और अनुभवों से यह सीखो कि जीवन की छोटी-छोटी बातों के अन्दर ही बड़ाई तथा महानता छिपी हुई है और इस प्रकार धीरे-धीरे तुम अक्षय शान्ति प्राप्त कर सकते हो।

तीसरा मार्ग सुझाने से पूर्व मैं तुमको फिर याद दिलाता हूँ कि दैनिक जीवन के छोटे-छोटे कामों के अन्दर ही महानता का अक्षय भंडार है। उसे प्राप्त करना चाहो तो टेढ़े मार्ग पर मत भटको, वरन् सीधी पगडंडी पर चलो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरा पथ

कठिनाइयों और उलझनों पर विजय

"कोई भी कठिनाई ऐसी नहीं जो मनुष्य के मार्ग में न आए। हाँ, मनुष्य को चाहिए कि वह कठिनाइयों के आने पर कभी भी अपने साहस को न छोड़े। जो व्यक्ति सच्चे अर्थों में मनुष्य बनना चाहता है उसे चाहिए कि वह अपने हृदय पर शासन करे और स्वयं ही उसका पूर्ण अधिकार-प्राप्त स्वामी बने। आशा और निराशा की भावनाओं को दबाकर और इच्छाओं पर काबू पाकर उस पर अपना अधिकार प्राप्त करे।"

—स्टेले

"क्या तुम निशाना चूक गये हो ? यदि चूक ही गए हो तो क्या हुआ···अब भी तो निशाना चमकता हुआ दिखाई दे रहा है। क्या तुम दूर तक दौड़ते हुए थक गये हो ?···थोड़ी देर दम ले लो और पुनः प्रयत्न करो।"

—एला वेलर विल काक्स

यह कहना कि कठिनाइयों और बेचैनी से भी कुछ आनन्द प्राप्त हो सकता है बहुत से व्यक्तियों को व्यर्थ-सी बात मालूम होगी, किन्तु सचाई सर्वदा बिना किसी आड़ के दिखाई देती है। मूर्ख लोग जिसे दुख समझते हैं बुद्धिमान उसी को सुख समझते हैं। कठिनाइयाँ अज्ञानता और कमजोरी का परिणाम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती हैं। कठिनाइयाँ इसीलिए आती हैं ताकि तुम अपने ज्ञान और शक्ति को बढ़ा न पाओ।

सचाई-भरे जीवन से ज्यूँ-ज्यूँ समझ बढ़ती जाती है त्यूँ-त्यूँ कठिनाइयाँ कम होती जाती हैं और उलझनें धुन्ध की तरह उड़ती जाती हैं। तुम्हारी कठिनाई वास्तव में उस दशा में अथवा उस काम में नहीं है जिससे वह पैदा हुई है, वरन् तुम्हारे उन हार्दिक विचारों में है जिनसे तुम उस काम को देखते तथा करना चाहते हो।

बच्चे को जो भी काम कठिन दिखाई पड़ता है, बुद्धिमान व्यक्ति को वही काम सरल जान पड़ता है। इसी प्रकार एक अज्ञानी व्यक्ति के लिए जो काम कठिन होता है बुद्धिमान के लिए उसमें कोई भी कठिनता नहीं जान पड़ती। नासमझ बच्चे को एक साधारण-सा पाठ भी कठिन मालूम होता है और उस कठिनाई को हल करने में उसे कितनी मगजपच्ची करनी पड़ती है। उसको कितना समय खर्च करना पड़ता है उसे हल करने में! कठिनाई की ऊँची दीवार को लाँघ पाने के लिये उसने निराशा के विचार से कितने आँसू बहाये हैं, यद्यपि कठिनाई तो बच्चे की अज्ञानता और नादानी में है। उस कठिनाई पर विजय पाना और उसे हल करना उस बच्चे की समझ, सुख, भलाई और ज्ञान की उन्नति के लिये बहुत ही आवश्यक है ताकि उसका जीवन लाभकारी हो सके।

उपरोक्त उदाहरण के अनुसार मनुष्य की उन्नति और विकास के लिये भी कठिनाइयों पर विजय पाना और उन्हें दूर करना आवश्यक है। एक कठिनाई पर विजय पाते ही तुम्हारा अनुभव और ज्ञान बढ़ जायगा, जिसका अर्थ यह है कि तुमने एक बहुमूल्य पाठ सीख लिया है तथा साथ-ही-साथ काम को

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफलता के साथ पूरा करने के लिये आनन्द को भी प्राप्त कर लिया है।

यदि देखा जाय तो कठिनाई है ही क्या चीज़? क्या यह उस दशा का नाम नहीं जो पूरे तौर पर समझ में नहीं आती और जिसका हल अभी तक नहीं सूझ पाया है?···अतः यह नितान्त आवश्यक हुआ कि अपनी बुद्धि और अपने साहस को पहले की अपेक्षा कहीं अधिक खर्च किया जाय। यह एक ऐसी आवश्यकता है जिसमें हमें अपनी गुप्त शक्ति और विचारों की दृढ़ता का उपयोग करना पड़ेगा। अतः कठिनाई वास्तव में वेश बदला हुआ एक फरिश्ता है जो मनुष्य का मित्र और गुरु है।······ और जिसकी बात को शान्ति से सुनने तथा ठीक प्रकार से समझ लेने से बड़ा आनन्द एवं वास्तविक ज्ञान प्राप्त होता है।

कठिनाइयों पर विजय-प्राप्ति के बिना किसी भी प्रकार की उन्नति, सम्पन्नता या प्रौढ़ता प्राप्त नहीं हो सकती। यदि संसार में कठिनाइयाँ न आयें तो ससार का सारा काम ही बन्द हो जायतथा मनुष्य बेकारी के कारण नष्ट-भ्रष्ट हो जाय।

जब भी रुकावटें आकर मार्ग में रोड़ा अटकायें, तब प्रत्येक मनुष्य को प्रसन्न होना चाहिये, क्योंकि रुकावटों और कठिनाइयों से मुकाबला पड़ जाने का अर्थ यह होता है कि मनुष्य किसी विशेष पहलू में मूर्खता और लापरवाही की अन्तिम सीमा तक पहुँच गया है और अब उसको इन रुकावटों तथा कठिनाइयों से निकलने और सही मार्ग तलाश करने के लिये अपनी बुद्धि तथा साहस को पूर्ण रूप से काम में लाना पड़ेगा। अर्थात् अब उसकी आन्तरिक शक्तियाँ उसे अधिक स्वतन्त्रता, अथक प्रयत्न और संघर्ष के लिये बुला रही हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई आदत या काम स्वयं तो कठिन नहीं होता।... कठिनाई तो इसमें है कि हम उसकी पेचीदगियों और बारीकियों को समझने के लिये काफी शक्ति और बुद्धि खर्च नहीं करते हैं। इसीलिये किसी कठिनाई पर विजय प्राप्त करने से बहुत लाभ होता है।

कठिनाइयाँ अचानक और अनियमितता से पैदा नहीं होतीं वरन् उनके पैदा होने के कारण होते हैं।...किसी भी मनुष्य की आवश्यकताएँ ज्यूँ-ज्यूँ बढ़ती जाती हैं, कठिनाइयाँ भी विकास के सिद्धान्त के अनुसार उत्पन्न होती जाती हैं।...यही कारण है कि कठिनाइयाँ सम्पन्नता और देन के रूप में परमात्मा की अपार कृपा और आनन्द के पुरस्कारस्वरूप जीवन के ऐसे उपाय भी हैं जो मनुष्य को उलझनों में फँसाते हैं और ऐसे भी उपाय हैं जो उसे निःसन्देह उलझनों से छुटकारा दिलाते हैं। मनुष्य अपने-आपको कितना ही क्यों न जकड़े, किंतु वह अपने-आपको उन बन्धनों से स्वयं ही छुड़ा सकता है।... मनुष्य अपनी अज्ञानता और मूर्खता से चाहे कैसे ही दुखों की दलदल और उलझनों के सघन बन में जा फँसे, वह उनसे निकलने का मार्ग ढूँढ सकता है।...और वह अपनी बुद्धि के प्रकाश तथा आनन्द की छत्रछाया में चलता हुआ नेकी के उल्लासपूर्ण प्रदेश में पहुँचने वाले सीधे और सरल मार्ग पर वापस आ सकता है।

किन्तु हाथ-पर-हाथ धरकर बैठे रहने और निराश होकर रोने-झींकने तथा रंज-ग़म करने से वह कभी भी उस मार्ग पर नहीं पहुँच सकता। उसकी बेचैनी केवल चतुरता से सोचने, बुद्धि से ध्यान देने और शान्ति के साथ जाँच-पड़ताल करने से ही दूर हो सकती है।

हाँ, ऐसी दशा में यह बात भी आवश्यक है कि वह अपने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय पर काबू पाये, अपने खोये हुए लक्ष्य पर वापस आने के लिये ध्यानपूर्वक सोचे और लगातार प्रयत्न तथा साहस से काम ले। घबराने और चिन्ता करने से तो कठिनाई और भी बढ़ती है। यदि वह सन्तोष के साथ अपने हृदय से पूछेगा तथा जिन विचारों के कारण उसकी यह दशा हुई है उन पर चिन्तन करेगा, तो उसे साफ पता चलेगा कि उसने कहाँ पर गलती की है तथा कहाँ से गलत रास्ता अपनाया है।" तभी उसे यह पता होगा कि यदि वह तनिक सोच-समझकर कदम उठाता, तनिक अधिक ध्यान देता, अधिक मितव्ययता से काम लेता, अपनी बुद्धि को काम में लाता, इतना स्वार्थी न बनता तो वह उस कठिनाई और दुख से बच जाता। वह साफ तौर पर यह भी देख लेता कि उसने किस प्रकार अपने-आपको धीरे-धीरे उलझनों में फँसा लिया है। यदि वह ऐसी गलती न करता तो वह अपने मार्ग से न भटकता।

इस प्रकार वह अपनी गलतियों से लाभ उठाकर महानता और अनुभव प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार उसकी कठिनाइयाँ हलकी हो जाती हैं और वह इस योग्य बन जाता है कि अपनी बुद्धि के अलौकिक प्रकाश में उन कठिनाइयों की जाँच कर सके। जब वह प्रत्येक पहलू से उन्हें पूर्ण रूप से समझने का प्रयत्न करता है, तब उसे स्वयं ही पता चल जाता है कि उसने किस आन्तरिक प्रेरणा को पाकर ऐसा किया था जिससे वह उन कठिनाइयों में जा पड़ा।

इन सभी बातों के पश्चात वह कठिनाई कठिनाई न रहेगी और उससे निकल पाने का सीधा मार्ग दृष्टिगोचर होने लगेगा। साथ-ही साथ उसे सर्वदा के लिये एक उत्तम पाठ मिल जायगा और फिर उसे एक प्रकार की महानता और आत्मिक शान्ति का स्रोत प्राप्त हो सकेगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य मूर्खता, स्वार्थ, अज्ञानता, नादानी और नासमझी से कठिनाइयों और उलझनो में जा फँसता है, जबकि इसके विपरीत वह महानता, समझ-बूझ, सक्रियता और निःस्वार्थ-भावना के बल पर प्रसन्नता तथा शान्ति प्राप्त करता है। जो व्यक्ति इस सिद्धान्त को समझता है वह साहस तथा हौसले से विपत्तियों का सामना करता है और उन पर विजय पाकर दुख से सुख, अशान्ति से शान्ति एवं बुराई से भलाई प्राप्त कर लेता है।

ऐसी कोई भी कठिनाई नहीं जिसका हौसले के साथ सामना करके मनुष्य जीत न सके। घबरा जाना व्यर्थ ही नहीं वरन् मूर्खता भी है, क्योंकि घबराहट काम करने की शक्ति और समझ को व्यर्थ कर देती है।

कारण का यथासम्भव निवारण करने से प्रत्येक कठिनाई हल हो सकती है। अतः घबराने और चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। फिर जो काम हो ही नहीं सकता, वह कठिन नहीं वरन् असम्भव है। उसके लिये चिन्ता करना और घबराना व्यर्थ है, क्योंकि असम्भव पर विजय पाने का केवल एक ही उपाय है और वह यह कि मनुष्य उसके आगे झुक जाय।

जिस प्रकार वैदेशिक, सामाजिक तथा वैयक्तिक कार्यों में अज्ञानता के कारण कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं और उन पर विजय पाने से बुद्धि तथा अनुभव दृढ़ होते हैं, उसी प्रकार धार्मिक कार्यों में सन्देह, हार्दिक कटुता और व्यग्रता गूढ़ मूर्खता से पैदा होते हैं और उन सन्देहों के दूर होने से ज्ञान तथा बुद्धि बढ़ती है।

जिस दिन मनुष्य के हृदय में मानुषी जीवन के आश्चर्य-जनक रहस्यों को जान पाने के लिये बेचैनी तथा उत्सुकता पैदा होती है, वह दिन उसके लिये शुभ होता है (यद्यपि वह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उस समय ऐसा अनुभव नहीं करता), क्योंकि उस दिन से उसकी सरल लापरवाही, शारीरिक सुस्ती और पाशविक प्रसन्नता का सिलसिला समाप्त होना आरम्भ हो जाता है।... और उस समय से वह एक उन्नतिशील मनुष्य के रूप में ढलना शुरू हो जाता है।

अब वह मनुष्य के रूप में हैवान नहीं वरन् वास्तविक मनुष्य बनता है। वह जीवन के सम्बन्ध में अनेकानेक प्रश्नों के हल करने में अपनी सारी विचार-शक्ति को खर्च करने के लिये तैयार रहता है, और उन आत्मिक उलझनों को बिल्कुल साफ करना चाहता है जो वास्तव में सत्यता की रक्षक हैं तथा जो बुद्धि रूपी किले के फाटक पर खड़ी रहती हैं। ऐसा व्यक्ति कठिन-से-कठिन दुख और कठिनाइयों के आने पर भाग नहीं जाता, वरन् साहस और सन्तोष से उनके सामने खड़ा रहता है।

उसे न तो शारीरिक विश्राम की आवश्यकता अनुभव होती है और न ही वह अज्ञानता में किसी आनन्द का अनुभव करता है।...न तो वह शारीरिक तृप्ति के लिए दौड़ता-भागता है और न ही वह अपने हृदय की गूढ़ताओं तथा अयोग्यताओं के कारण मुँह छिपाता फिरता है।...उसके अन्दर अब तक स्वर्गिक भाव जाग उठते हैं, मानों एक सोया हुआ देवता रात के अव्यवस्थित और निरर्थक स्वप्नों से निःशंक हो उठा हो। अब न वह सोयेगा और न विश्राम लेगा, जब तक उसकी आँखें सचाई की रोशनी को न देख लेंगी। ऐसे व्यक्ति के लिये अब यह असंभव है कि वह अपने हृदय की पुकार को, जो उसे जीवन के उद्देश्य को पूरा करने के लिए पुकार रही है, सुनकर चुपचाप बैठा रहे।.. इसका कारण यह है कि उसकी व्याकुल आत्मिक शक्ति कठिन उलझनों को सुलझाने के लिये बार-बार उकसाती है। अब उसके लिए पाप में कोई आनन्द नहीं रहा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और न किसी ऐब में कोई स्वाद। इसलिये अब उसके लिए सचाई के अतिरिक्त कोई भी अन्य बात भली नहीं हो सकती है।

वह दिन उसके लिये शुभ है जब वह अपनी गलती, मूढ़ता और नादानी को मानकर यह समझ लेता है कि इन्हीं कारणों से विपत्तियाँ और उलझनें पैदा हुई हैं।...अब वह अपनी मूढ़ता को छिपाने का प्रयत्न नहीं करता, वरन् उसे दूर करना चाहता है और प्रकाश के उस मार्ग को बराबर तलाश करता है जो उसके हृदय में भरे अँधेरे को दूर करेगा, उसकी विपत्तियों को मिटायेगा और उसके जीवन के मुख्य प्रश्नों को हल करेगा। जब कोई बच्चा किसी कठिन प्रश्न को हल कर लेता है तो वह कितना प्रसन्न होता है। इसी प्रकार एक व्यक्ति का हृदय उस समय प्रसन्नता से भर जाता है जिस समय वह किसी सांसारिक कठिनाई पर विजय पा लेता है। बच्चे की तरह ही नहीं वरन् उससे भी कहीं अधिक प्रसन्नता से उस व्यक्ति का हृदय फ़ूल उठता है और उसके आनन्द की कोई सीमा नहीं रहती। जब वह उस आत्मिक संघर्ष को सुलझा लेता है, जिसके सुलझाने में उसने बहुत सा समय नष्ट किया है, तो उसके हृदय का अन्धकार आखिरकार सर्वदा-सदा के लिये दूर हो जाता है।

तुम अपनी कठिनाइयों और उलझनों को मनहूस मत समझो। इस प्रकार समझने से वे सचमुच ही तुम्हारे लिये मनहूस हो जायेंगी। तुम उनको एक अच्छा शकुन समझो। वास्तव में वे हैं भी ऐसी ही। कभी ऐसा विचार अपने हृदय में न आने दो कि तुम उनसे बच सकते हो कभी भी नहीं। इसलिए उनसे दूर भाग जाने का प्रयत्न मत करो। यह असम्भव है कि वे तुम्हारा पीछा छोड़ दें। किन्तु तुम शान्ति के साथ, धैर्य के साथ और साहस के साथ उनका सामना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करो। अपने पूरे हार्दिक ध्यान और सरगर्मी से उनकी जाँच-पड़ताल करो। उनके प्रत्येक पहलू पर ग़ौर करो, उन्हें तोलो-नापो, उनका वजन करो, उनका कोई भी पहलू तुम्हारी दृष्टि से छिपा न रहे, और फिर पूरे हृदय से उनका सामना करो ताकि आखिरकार उन पर तुम विजय पा सको।

इस प्रकार तुम्हारी शक्ति और समझ बढ़ेगी और तुम आनन्द के उस मार्ग पर जा पहुँचोगे जो तुम्हारी दृष्टि से ओझल था। चौथे मार्ग पर ले जाने से पहले मैं तुमको फिर से याद दिलाता हूँ कि कठिनाइयाँ और उलझनें तुम्हारी अपनी ही गलती तथा मूढ़ता का परिणाम हैं। उनसे भागना व्यर्थ है। समझ-बूझ और साहस से उनका सामना करो। अन्त में जीत तुम्हारी ही होगी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौथा पथ

बोझ उतारना

"मैं तो जीवन की अपेक्षा इसका विचार अधिक रखता हूँ कि यदि वह एक बोझ भी हो तो मैं उसे एक सुरीले राग में बदल दूँ।"

–बैली

"तुमने सुना है कि विजय पाना अच्छा है, किन्तु मैं तो यह कहता हूँ कि हारना भी अच्छी बात है, क्योंकि लड़ाइयों की हार-जीत एक ही बात है।"

–वाल्ट विटेमिन

बोझा अथवा भार उतारने के सम्बन्ध में तो हम बहुत-कुछ पढ़ते और सुनते हैं, किन्तु भली प्रकार भार उतारने के बारे में हम बहुत ही कम जानते या सुनते हैं। तुम अपने हृदय पर भारी बोझ उठाये क्यों फिरते हो, जबकि तुम उसे उतारकर, और भी हल्के होकर प्रसन्नता और स्वच्छन्दता के साथ अपने समवयस्कों में फिर सकते हो ? कोई भी व्यक्ति अपनी पीठ पर बोझा लादे नहीं फिरता, उस दशा के सिवाय जबकि एक स्थान से दूसरे स्थान पर बोझा पहुँचाना आवश्यक होता है। किसी बोझ को सर्वदा अपने हृदय पर लादे फिरने वाला व्यक्ति शहीद अर्थात् अपने धर्म पर बलि देने वाला नहीं कहला सकता है।

तुम अपने हृदय पर व्यर्थ का भार लादते हो और फिर आत्मिक क्लेश, अपने ऊपर तरस खाने के दुख से उस भार को

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और भी बोझिल क्यों बनाते हो ?···क्यों नहीं अपने भार और दुख के समुद्र को उतार फेंकते और इस प्रकार स्वयं प्रसन्न रह-कर संसार की प्रसन्नता को बढ़ाते हो ?···एक तो उस भार को लादे-लादे फिरने का न कोई उचित कारण है और न ही कोई उचित दलील।·· जिस प्रकार भौतिक संसार में उस समय भार उठाना पड़ता है जबकि उसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाना आवश्यक हो, और ऐसा करने से वह भार कष्टप्रद नहीं समझा जाता, इसी प्रकार आध्यात्मिक संसार में किसी भी प्रकार के विचारों पर ग़ौर व चिन्ता करने का भार केवल किसी नेक तथा आवश्यक परिणाम पर पहुँचने के लिये ही उठाना चाहिये, और फिर परिणाम प्राप्त हो जाने पर उस भार को अलग रख देना चाहिये। इस प्रकार के भार उठाने से कोई कष्ट तो होता ही नहीं, हाँ प्रसन्नता अवश्य होती है।

हम लोग यह कहते हैं कि कुछ साधु-सन्यासियों का अपने शरीर को कष्ट पहुँचाना व्यर्थ और आवश्यक है, किन्तु हजारों मनुष्य अपने-आपको ऐसे ही हार्दिक कष्टों में बराबर व्यस्त रखते हैं। क्या वह भी व्यर्थ और अनावश्यक नहीं ? ऐसा कौनसा भार है जिससे दुख और तकलीफ न मिले ! सच तो यह है कि ऐसे भार वास्तव में हैं ही नहीं। जो काम करना हो, उसे खुशी-खुशी करो, न कि रोते और बड़बड़ाते हुए। जो काम इस प्रकार से किया जाता है वह भार प्रतीत नहीं होता। आवश्यकता या कोई ऐसा कर्तव्य, जिससे तुम बच ही नहीं सकते, वास्तव में कष्टप्रद नहीं होता, वरन् उसको अपना मित्र तथा पथप्रदर्शक समझकर उससे घुलना-मिलना उच्च कोटि की महानता है।··उसको अपना शत्रु समझकर नाक-भौं चढ़ाना और उससे बचने का प्रयत्न करना बेहद

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नादानी है।

हमारा कर्तव्य प्रत्येक स्थान पर हमारे सामने आता है। वह उसी समय कष्टप्रद भार प्रतीत होता है जबकि हम उसे न पहचानकर उससे अपनत्व नहीं जोड़ते हैं। जो व्यक्ति अपने किसी कर्तव्य को लापरवाही और अनिच्छा से पूरा करता है और साथ ही अनावश्यक प्रसन्नता के पीछे भागता है, वह दुख और निराशाओं के घने बादलों को दिन-प्रतिदिन अपने चारों ओर बढ़ता पाता है।...इस प्रकार वह थकावट और बेचैनी के भार को दुगना करके अपने कन्धों पर रख रहा है जिससे वह पिसा जा रहा है।

ऐ मेरी आत्मा ! तू अच्छे काम करने की ओर मुड़।... उन्नति के शिखर पर पहुँचने के लिये अपने बाजुओं को फैला दे।...जीवन के राग को छेड़ दे...नेकी का, सचाई का और बुराई पर विजय पाने का गीत गा। तू अपने उस राग को और भी अधिक सुरीला तथा मीठा बना।...

मैं अपने सारे कामों को, जो जीवन में मुझे मिलेंगे, प्रसन्नता, मनोयोग और ध्यान के साथ निःस्वार्थ-भाव से पूरा करूँगा। मेरे उत्तरदायित्व भले ही कितने बड़े हों, मैं फिर भी उनको अपने लिये भार कभी भी न समझूँगा और उन्हें कष्टदायी भी न विचारूँगा।

तुम कहते हो कि अमुक बात, उदाहरणतया कोई कर्तव्य, जैसे किसी मित्र का कोई काम अथवा समाज का कोई उत्तरदायित्व, तुम्हें बहुत कष्ट दे रहा है और तुम उस भार से दबे जा रहे हो तथा यह खयाल करके दुखी हो रहे हो कि यद्यपि मैं इस काम को अपने हाथ में ले बैठा हूँ और मुझे इस काम को पूरा ही करना पड़ेगा किन्तु यह काम है बड़ा कठिन और कष्टदायी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे मित्र ! तनिक ध्यानपूर्वक सोचो तो सही कि क्या वह काम ही तुम्हें सचमुच में नीचे दबा रहा है, अथवा वह तुम्हारा स्वार्थ है जो उस काम को भार-स्वरूप बनाकर तुम्हें तंग कर रहा है।...मैं आपको बता देना चाहता हूँ कि वही काम, जिसको तुम अपनी स्वतन्त्रता में रुकावट उत्पन्न करने वाला समझते हो, वास्तव में तुम्हें स्वतन्त्रता दिलाने का प्रथम द्वार है। हाँ, वही काम, जिसको तुम कष्टप्रद समझते हो, वास्तव में तुम्हारे लिए आनन्द का सन्देश देने वाला है।

तुम्हारा यह विचार करना एकदम व्यर्थ है कि वास्तविक आनन्द किसी और ही ओर प्राप्त होगा।... तुम्हारा काम एक दर्पण के समान है, जिसमें काम नहीं वरन् तुम्हारी छाया दिखाई पड़ती है। तुमको अपने काम में जो निराशा दृष्टिगत होती है, वह तुम्हारे ही हृदय की दशा की वह छाया है, जिससे तुमने उस काम को आरम्भ किया था। यदि तुम अपने हृदय की दशा को बदलकर काम करोगे तो तुम देखोगे कि वह काम भी तुरन्त बदल जायगा, अर्थात् कठिन से सरल और भारी से हल्का प्रतीत होने लगेगा और तुम्हारी शक्ति तथा प्रसन्नता प्रदान करने का एक स्रोत बन जायगा। यदि तुम दर्पण में अपना मुँह टेढ़ा करके देखोगे तो एक भद्दी और डरावनी छाया दिखाई देगी। तुमने अपने मुँह को जैसा बिगाड़ा वैसा ही रूप सामने आया। यदि तुम मुँह को संवारकर दर्पण में देखोगे तो एक सुन्दर आकृति उस पर उभरेगी।

यदि तुम किसी काम का किया जाना ठीक और आवश्यक समझते हो तो उसका करना अच्छा है। उससे दिल चुराने से वह भारी प्रतीत होता है और स्वार्थ-भावनाओं के होने पर वह काम भयानक दिखाई देता है। यदि किसी काम का किया जाना अनावश्यक और असंगत है तो किसी अस्थायी प्रसन्नता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और इच्छा की पूर्ति के लिए उसका किया जाना मनुष्यता का उल्लंघन है, जिसका परिणाम कष्ट और रंज ही होगा।

जिस कर्तव्य से तुम दूर भागना चाहते हो, वास्तव में वह तुम्हारा पथ प्रदर्शित करने वाला गुरु है और वह अस्थायी प्रसन्नता, जिसके पीछे तुम भाग रहे हो, तुम्हारा खुशामदी शत्रु है। ऐ नादान मनुष्य! तू गलत मार्ग को छोड़कर सीधे रास्ते पर कब आयेगा?

संसार का साधारण नियम है कि वह अपने सारे प्राणियों को प्रत्येक समय और प्रत्येक स्थान पर महानता की ओर ले जाने को उकसाता है। मूर्खता और स्वार्थ के अन्दर तो कठिन-से-कठिन कष्ट और संवेदना छिपी रहती है। अतः मनुष्य की इसी में भलाई है, इसी में उसके उद्देश्य की सिद्धि है, क्योंकि कठिन वेदना ही लापरवाही की शत्रु और महानता की पथ-प्रदर्शिका होती है।

दर्द क्या है? दुख क्या है? भार क्या है?—क्रोध दर्द है, नादानी दुख है, और स्वार्थ बोझ है। स्वार्थ विचार और क्रिया का रूप पा जाने के पश्चात् मनुष्य को रक्त के आँसू रुलाता है और हृदय को चीरता हुआ उसमें कठिन वेदना भरता है। यदि तुम नादानी, क्रोध और स्वार्थ को हृदय से निकाल दो, तो तुम्हारे जीवन से दुख स्वयमेव ही दूर हो जायगा। भार उतारने का अर्थ यह है कि तुम आन्तरिक स्वार्थ के स्थान को पवित्र प्रेम से भरो और अपने हृदय में सच्चा प्रेम रखकर काम शुरू करो। इस प्रकार वह काम तुम्हें हल्का प्रतीत होगा तथा प्रसन्नता देगा।

मूढ़ता के कारण ही हृदय अपने पर भार-सा अनुभव करता है और दण्ड पाता है। सिर पर भार उठाते-उठाते फिरने की किसीको सज़ा नहीं दी गई है। दुख अलाभकर उपाय से नहीं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया गया । मनुष्य अपने हाथों ही से दुख उठाता है।... हृदय का शासन बुद्धि करती है और बुद्धि को तुच्छ भावनाएँ पथ-भ्रष्ट कर देती हैं। इस प्रकार हृदय के शासन में विद्रोह फैल जाता है। इच्छाओं की तृप्ति की लगन अगुवा बन जाती है और दुख तथा वेदना उसके संरक्षण में चल पड़ते हैं।

अब तुमको चुनाव करने की पूर्ण स्वतन्त्रता है। यदि तुमने अपने-आपको तुच्छ भावनाओं का दास बना लिया है, जिनके कारण तुम लाचार तथा विवश हो गए हो, तो वास्तव में तब भी तुम लाचार नहीं हो वरन् स्वयं ही तुमने अपने-आपको जकड़ा है और स्वयं ही तुम उनसे छूट भी सकते हो। तुम अपनी वर्तमान दशा तक धीरे-धीरे पहुँचे हो और धीरे-धीरे ही तुम उससे छुटकारा भी पा सकते हो। तुच्छ भावनाओं को हृदय से निकालकर परिपक्व तथा श्रेष्ठ बुद्धि को उस पर बिठा सकते हो। बुराई और ऐब से बचने का समय हैवानी खुशियों को प्राप्त करने से पहले होता है, लेकिन यदि मनुष्य एक बार इनमें फँस गया तो उनके बुरे परिणामों को भोगकर ही वह महानता की ओर आ सकता है। किसी भी प्रकार के उत्तरदायित्व को लेने से पूर्व तुम यह निर्णय कर लो कि तुम उस उत्तरदायित्व को लेने योग्य हो अथवा नहीं। यदि तुमने एक बार किसी उत्तरदायित्व को ले लिया है, तो फिर अपने हृदय से हर प्रकार का स्वार्थ और उससे उत्पन्न होने वाली बेचैनी तथा उलझनों आदि को दूर कर दो। शिकायत का एक शब्द तक मुँह पर न लाओ। याद रखो, जब तुम प्रेम और बुद्धिमानी से उत्तरदायित्वों को ग्रहण करते हो तो उनका भार भी बहुत हल्का हो जाता है।

मनुष्य का भार भले ही कैसा ही हो वह निर्बल विचारों और स्वार्थपरता से अधिक भारी और सहन न किया जा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकने योग्य हो जाता है। यदि तुम्हारी दशा अच्छी नहीं है तो उनके अन्दर से गुज़रना ही तुम्हारे लिए उचित है, ताकि तुम उनका सामना कर पाने के लिए शक्ति प्राप्त कर सको। वह दशा तुम्हें इसलिए कठिन लगती है कि तुममें कोई कमज़ोरी शेष है।...जब तक यह कमजोरी दूर नहीं हो जाती तब तक वे दशाएँ ही रहेंगी। ऐसी दशा में तुम्हें प्रसन्न रहना चाहिये कि तुमको शक्तिशाली और महान् बनने का अवसर प्राप्त हुआ है। महानता के आगे कोई भी कठिन दशा नहीं ठहर सकती है, कोई भी वस्तु तुम्हारे प्रेम को थका नहीं सकती है। अपनी खराब दशा पर ग़म खाना छोड़ दो और अपने आस-पास के मनुष्यों के जीवन को ध्यान से देखो।

उदाहरणस्वरूप यहाँ एक ऐसी स्त्री है जिसका परिवार बड़ा और आय कम है। वह अपनी मज़दूरी से घर का खर्च चलाती है। घर-भर के कपड़े अपने हाथ से धोती है। उसे रोटी पकाना, चौका-बर्तन और पिसाई आदि हर एक काम अपने ही हाथों से करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त वह बीमार पड़ोसियों की देख-भाल, दवादारू इत्यादि कुछ-न-कुछ सेवा भी करती रहती है।...वह कर्तव्य-पालन की आपदाओं और निराशा की दुविधाओं से बची हुई है। वह सवेरे से शाम तक प्रसन्न रहती है, और कभी भी अपनी तंगी या गरीबी की शिकायत नहीं करती है। चूँकि उसके हृदय में स्वार्थ और मतलब की भावनाएँ नहीं हैं, अतः वह सर्वदा ही खुश तथा निश्चित दिखाई पड़ती है। वह इसी विचार में मस्त है कि वह दूसरों को सुख पहुँचाने का माध्यम है। यदि वह यह सोचती कि कल छुट्टी है, मैं भी दूसरों की तरह सिनेमा देखने क्यों न जाऊँ...। काश मैं भी अमीर होती तो नये-नये फैशन अपनाती, खेल-तमाशे देखने और गाना सुनने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती, नई-नई किताबें पढ़ती, दूसरी स्त्रियों से मिलने जाती, किन्तु यहाँ तो घर के बखेड़ों से ही छुटकारा नहीं मिलता···तो ऐसा सोचने से वह कितनी दुखी और ग़मगीन होती ! अपने घर के धंधे ही उसे कितने दूभर लगते ! घर का छोटा-सा काम भी उसे ऐसा लगता मानों कोई भारी पत्थर उसके गले में बँधा हुआ है, मानों यह बोझ उसे पीस और मार डालेगा और ऐसी दशा में उसके स्वार्थ ही उसकी मौत का कारण बन जाते हैं।···

किन्तु वह स्त्री अपने लिए कुछ भी न चाहती हुई अपने भार को कितना हल्का बना रही है और कितनी प्रसन्न है। स्वार्थ से परे होना और प्रसन्नवदन होना दोनों ही दशाएँ मनुष्य के सच्चे मित्र हैं। जहाँ प्रेम है वहाँ कोई भी भार भार नहीं लगता।

यहाँ एक और भी स्त्री रहती है जिसकी जायदाद से काफी से अधिक आय होती है।···वह बड़े ठाठ-बाट और शान-शौकत से रहती है, किन्तु सामाजिक दृष्टि से उसे समाज और सोसाइटी के कुछ काम करने पड़ते हैं। उन कामों पर उसे कुछ रुपया और समय दोनों ही व्यय करने पड़ते हैं, किन्तु वह उन कामों से छुटकारा पाना चाहती है। यद्यपि उसे ये काम प्रेम के साथ बतौर सेवा के करने आवश्यक हैं, तथापि उसकी अपनी भी कुछ ऐसी इच्छाएँ है जिनको पूरी करने में वह असमर्थ है। अतः वह हर समय बेचैन और अप्रसन्न रहती है, हमेशा ही वह अपनी दशा की शिकायत करती रहती है, स्वार्थ और बेचैनी दोनों ही उसके साथी हैं और स्वार्थ आदि उसके काम को और भी बोझिल बना देते हैं।

इन दोनों स्त्रियों की विभिन्न दशाओं की तुलना करके देखो (इस प्रकार के उदाहरण तुम्हें अपने आस-पास प्रत्येक स्थान

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पर दृष्टिगोचर होंगे) कि किसकी दशा अधिक भार-स्वरूप और कठिन है। सच तो यह है कि कोई दशा भी कष्टप्रद नहीं। कष्ट अथवा प्रसन्नता तो अपने स्वार्थ अथवा प्रेम पर आधारित है। दशा में न तो सुख है और न दुख। सुख-दुख तो वास्तव में हृदय की दशा पर निर्भर हैं।

एक व्यक्ति धार्मिक ग्रन्थ पढ़ना आरम्भ करता है। वह सोचता है कि यदि मेरे सिर पर बीवी-बच्चों का भार न होता तो मैं बहुत काम कर सकता था और मुझे जितना अनुभव तथा ज्ञान अब है वैसा ही अनुभव और ज्ञान मुझे कुछ वर्ष पूर्व ही प्राप्त हो जाता तो मैं विवाह ही नहीं करता···किन्तु यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि उस व्यक्ति को अभी तक महानता का सीधा और विशाल मार्ग दिखाई नहीं दिया है। (क्योंकि केवल अफ़सोस करने और पछताने से बढ़कर और कोई भी मूर्खता नहीं है) और अब भी वह उस बड़े काम को करने के अयोग्य है जिसको पूरा करने का वह इतना इच्छुक है। यदि किसी व्यक्ति के हृदय में मानवीय भलाई के लिये इतना प्रेम है कि वह कोई बड़ा काम करना चाहता है, तो भले ही वह किसी भी दशा में क्यों न हो वह अपने गहरे प्रेम को प्रकट किये बिना नहीं रह सकता। उसका घर प्रेम से भरा हुआ होगा। उसके अज्ञात प्रेम का सौन्दर्य, मिठास और शान्ति उसके साथ रहेगी। वह अपने आस-पास के लोगों को प्रसन्न करने और उनकी भलाई करने का माध्यम बना होगा। वह प्रेम और मोहब्बत, जो घर में प्राप्त नहीं और केवल बाहरी तौर पर दिखलाया जाय, केवल दिखावा है।

स्वयं मेरी नजरों के सामने ऐसे दुखजनक दृश्य आये हैं जिनमें प्रचारकों, उपदेशकों और धर्मगुरुओं के घर भी खुशी से खाली पड़े हैं और उनके बाल-बच्चों की बुरी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दशा है, किन्तु वे दूसरों के घरों में सुख तथा आनन्द का उपदेश देते फिरते हैं। उनके अपने घरों की दशा अवर्णनीय है। ऐसे मनुष्य संसार को ठगते-ठगते अपने-आपको भी धोखा देते हैं और इस सचाई को भूले हुए हैं कि 'अव्वल खुशी बाद दरवेश'। ऐसे ही मनुष्य दुनिया-भर को दुखों और आपदाओं से छुटकारा दिलाने को अपना धार्मिक कर्तव्य घोषित कर देते हैं और धार्मिक नेता कहलाने के इच्छुक रहते हैं।

एक महापुरुष ही किसी बड़े काम को कर सकता है और वह जहाँ कहीं भी होगा उसकी बड़ाई उसके साथ होगी। भले ही वह किसी भी दशा में हो, वह अपने नेक काम को करता रहेगा क्योंकि उसने अपने काम के महत्त्व को समझ लिया है।

यदि तुम स्वयं दूसरों की भलाई के लिये इतने बेचैन हो रहे हो और तुम साधारण मनुष्यों का सुधार चाहते हो तो पहले अपना सुधार करो। अपने घर से, अपनी बीवी-बच्चों से, अपने समवयस्कों से सुधार का काम आरम्भ करो। देखो, तुम अपने-आपको धोखे में न रखो, जब तक तुम अपने आस-पास के छोटे-छोटे काम सच्ची लगन से नहीं कर पाते, तब तक दूर के और बड़े-बड़े काम कभी भी तुम न कर सकोगे।·· एक अंग्रेजी कहावत है—"खैरात घर से शुरू होती है।"

यदि किसी व्यक्ति ने अपने जीवन के बहुत से वर्ष भोग-विलास और इच्छा-पूर्ति में व्यतीत किये हैं, तो यह आवश्यक है कि उसकी पिछली इकट्ठी गलतियों का भार उसे कष्ट दे, क्योंकि जब तक उनका भार सहन-शक्ति से बाहर नहीं हो जाता तब तक वह उन बुरी आदतों को नहीं छोड़ सकता है और न ही पवित्र जीवन का मार्ग अपना सकता है। जब तक वह अपने द्वारा उत्पन्न किये गए भार को ईश्वर की ओर से कर्तव्य के रूप में दिया हुआ समझता रहता है, या यह समझता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि भाग्य या दशा अथवा दूसरे अन्य व्यक्तियों ने उसके सिर पर बोझ डाल दिया है, या उस भार को बुजुर्गों की निन्दा समझता है, तब तक वह अपनी मूर्खता और नादानी में और भी वृद्धि करता रहता है तथा अपने भार की मात्रा अथवा वजन बढ़ाता रहता है। किन्तु जब वह इस सचाई को समझ लेगा कि ये भार स्वयं उसके उत्पन्न किये हुए हैं और यह सब उसी के कर्मों का फल है, तब वह बेहिम्मती से अपने ऊपर तरस खाना छोड़ देगा और अपने भार को हल्का करने की तरकीबें सोचेगा। जब वह इस बात को भली प्रकार देख और समझ लेगा कि उसका प्रत्येक विचार और कार्य उसके जीवन के भव्य भवन को तैयार करने वाले पत्थर हैं, तब वह दूरदर्शिता तथा महानता को प्राप्त करने का प्रयत्न करता हुआ यह देखने और स्वीकार करने के योग्य हो जायगा कि उसके द्वारा पूर्व समय में किये हुए काम सभी क्षणभंगुर थे और वह भविष्य में उनको योग्यता और मनोयोग के साथ करना आरम्भ कर देगा।

कष्टप्रद भार उसी समय तक आवश्यक है, जब तक प्रेम और महानता की किसी व्यक्ति में कमी है। आनन्द और आन्तरिक प्रसन्नता का मन्दिर दुख, दन्य, विनय और शिष्टाचार की चहारदीवारी के अन्दर बना हुआ है। ...आध्यात्मिक यात्री को वहाँ तक पहुँचने के लिये इस चहारदीवारी के अन्दर से गुजरना पड़ता है। वह अपनी अदूरदर्शिता से कुछ समय के लिए तो इस चहारदीवारी को ही वास्तविक मन्दिर समझकर ठहर जाता है, किन्तु ज्ञान होते ही वह आगे चल पड़ता है। फिर भी जब तक वह अपने ऊपर तरस खाता हुआ अपनी आपदाओं और दुखों को निर्दोष समझता रहता है, तब तक वह दुख ही उठाता रहेगा। ...और जब वह अपने हृदय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की इस चापलूसी को पूरे तौर पर समझने लगता है कि दुख और क्लेश तो केवल मार्ग हैं न कि मंजिल, और ये सब उसके अपने बनाये हुए हैं, तो वह अपने हृदय को साफ करके शीघ्र ही उस चहारदीवारी को पार करता हुआ शान्ति तथा आनन्द के आन्तरिक मन्दिर में प्रवेश कर जाता है।

दुख अपूर्णता से उत्पन्न होता है न कि पूर्णता से। दुख किसी भी काम की अपरिपक्वता का प्रतीक है। अतः दुख और आपदाओं से छुटकारा प्राप्त हो सकना सम्भव होता है। इसके होने का कारण ज्ञात किया जा सकता है और इस प्रकार इसके सम्बन्ध में पूरी जानकारी प्राप्त करके इसको दूर किया जा सकता है।

हाँ, यह सच है कि आराम के लिए कष्ट में से, शान्ति के लिए अशान्ति में से, सुख के लिए दुख में से निकलना पड़ता है। किन्तु दुखी व्यक्ति को यह याद रखना चाहिए कि यह केवल पगडंडी है न कि मंजिल, यह केवल द्वार है न कि मकान, यह केवल मार्ग है न कि अभीष्ट, और इससे तनिक आगे बढ़कर उसे दुख से रिक्त और आनन्द से भरपूर विश्राम-कक्ष मिल जायगा।

भार थोड़ा-थोड़ा करके ही इकट्ठा होता है और उसका वज़न धीरे-धीरे अज्ञात रूप में बढ़ता है। कोई बिना सोचा-समझा जोश, कोई दुष्प्रवृत्ति, कोई अस्थायी हैवानी, खुशी और आनन्द, कोई अंधी प्रेरणा, कोई बुरा विचार, कोईक ड़वा वचन, कोई अन्तर्राही वाक्य, कोई हिमाकत…और इसी प्रकार की बीसियों बातें बार-बार आते रहने से मूर्खों का भार धीरे-धीरे भारी होता जाता है--इतना कि वह उठाने अथवा सहन करने के सर्वथा अयोग्य हो जाता है।

प्रारम्भ में कुछ समय के लिए वह भार भार नहीं लगता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन्तु वास्तव में नित्यप्रति बढ़ता ही जाता है। फिर कुछ समय के पश्चात् तो इस प्रकार इकट्ठा हुआ भार इतना अधिक कष्टप्रद बन जाता है कि उफ़ ! ···जब स्वार्थपरता के कड़वे फल इकट्ठे हो जाते हैं और प्राण संकट में पड़ जाते हैं, तो उस समय दुखी व्यक्ति को अपनी स्वयं की परीक्षा लेकर भार उतारने का उपाय ढूँढना चाहिए। इस प्रकार से जीवन को अच्छा बनाने के लिए, महानता को मधुर बनाने के लिए, पवित्रता को नेक बनाने के लिए प्रेम मिल जायगा। जिस चाल पर वह पहले चलता था उस चाल को बदल देने से उसका बोझ हल्का हो जायगा, उसके दिन और रात प्रसन्नता से भर जायँगे और उसके आचरण नेक तथा जीवन श्रेष्ठ बन जायगा।

ऊपर उठो ! संसार से ऊपर उठो ! उसके दुखों और आपदाओं से ऊपर उठो ! ···यह सारी धरती बन-वीथिकाओं से भरी हुई है···और मैं इसे चाहता भी हूँ···किन्तु मैं इसका स्वामी होकर रहना चाहता हूँ न कि दास बनकर।

ऊपर उठो ! ···वहाँ तक जहाँ धरती की धूल तक न पहुँच सके···हाँ, जहाँ फूलों की भीनी-भीनी गन्ध पहुँच सकती है। ···वहाँ तुम्हारे जीवन के क्षण प्रसन्नता से भरे हुए होंगे—एक ऐसी प्रसन्नता, जो अमर है, अविनाशी है··· ।

अपनी वर्तमान गिरी हुई दशा से मत घबराओ, वरना तुम्हारा बोझ और भी भारी और कष्टप्रद बन जायगा।··· ऐसी दशा में तुम अपनी दूरदर्शिता से काम लेते हुए इस दशा को बदलने और अपने जीवन को सुखमय बनाने का प्रयत्न करो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाँचवाँ पथ

आत्म-त्याग

"जब स्वर्ग हमारे चारों ओर है···हमारे अन्दर ही है, तो फिर बीते हुए सतयुग अथवा आने वाले स्वर्ग से क्या मतलब ? प्रत्येक नेकी की जड़ विनय है, नम्रता है। जो व्यक्ति नींव को गहरा खुदवाता है, वास्तव में उसी का मकान दृढ़ बनता है।" —बैली

"तुम्हारा विश्वास भले ही कुछ क्यों न हो, किन्तु सचाई तो तुम्हारे अन्दर ही है। ···उसका स्रोत कहीं बाहर नहीं है।"

—ब्राउनिंग

यह सत्यता भले ही कुछ अविश्वसनीय-सी लगती हो कि देने से हमें लाभ और लालच से हमें हानि होती है, किन्तु यह है बिल्कुल सही। देखो, नेकी प्राप्त करने के लिए हमें बुराई छोड़नी पड़ती है। सचाई को प्राप्त करने के लिये हमें झूठ छोड़ना आवश्यक हो जाता है। स्वार्थ छोड़कर ही हम प्रेम-लाभ कर सकते हैं। उदाहरणतया मार्ग में चलते हुए पिछला पैर उठाने से ही आगे पैर पड़ता है। नये कपड़े पहनने के लिये पुराने कपड़े उतारने पड़ते हैं। अतः जो व्यक्ति सचाई प्राप्त करना चाहता है उसे झूठ छोड़ना ही पड़ता है।

माली घास-फूस और गले-सड़े पत्तों से खाद बनाकर नये पौदों को भोजन पहुँचाता है। इसी प्रकार महानता के वृक्ष के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पालन-पोषण के लिये भी नादानी को उखाड़ना पड़ता है। लाभ के लिये अहम् का त्याग आवश्यक है, अर्थात् स्वार्थपरता को छोड़ने के पश्चात् ही हमें लाभ मिलता है।

सच्चा जीवन, आनन्दमय जीवन–वह जीवन जिसमें दुख और आपदाएँ नहीं—कुछ त्याग करने से ही प्राप्त होता है। यह आवश्यक नहीं कि बाहरी चीज़ों से सम्बन्ध ही तोड़ लिया जाय, वरन् आवश्यक यह है कि आन्तरिक अज्ञान और बदी को छोड़ दिया जाय ,क्योंकि मूढ़ता और बदी से ही संघर्ष उत्पन्न होता है।

सचाई और नेकी का त्याग नहीं वरन् झूठ और बदी का त्याग करना है। इसलिए वास्तव में ऐसे त्याग में लाभ है, न कि हानि। प्रारम्भ में हानि अधिक मालूम होती है। त्याग से कष्ट होता है, जिसका कारण यह है कि मनुष्य स्वार्थ के कारण भ्रम और निराशा में पड़ा हुआ है।

यह वास्तविकता है कि जब किसी व्यक्ति के स्वभाव से स्वार्थ को दूर किया जाय, तो उसे लाज़मी तौर पर कष्ट पहुँचता है। जब शराबी शराब छोड़ने का पूर्ण निश्चय करता है तो उसे कठोर कष्ट में से गुजरना पड़ता है। वह ऐसा अनुभव करता है जैसे वह एक बड़ी भारी प्रसन्नता से अलग हो रहा हो। किन्तु जब शराब पीने की बुरी आदत पर वह पूरी तौर से विजय पा लेता है, तो फिर उसके हृदय से शराब पीने की इच्छा भी दूर हो जाती है और उसका हृदय शान्त हो जाता है। ऐसी दशा में वह समझता है कि वह उस बुरी बला से छुटकारा पाकर बहुत ही लाभान्वित हुआ है और जो कुछ उसने छोड़ा है वह ख़राब था, झूठ था और पास में रखने के योग्य न था, वरन् उसे रखने से उसे लगातार कष्ट पहुँच रहा था। उसने जो नेकचलनी, सहन-शक्ति, शान्ति और उल्लास की शक्ल में प्राप्त किया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, वह उसके लिये ठीक और लाभकारी है और उसको प्राप्त करना जरूरी है।

प्रत्येक प्रकार के सच्चे त्याग का यही हाल है। जब तक वह पूर्ण नहीं हो जाता उसमें कष्ट उठाना पड़ता है, और यही कारण है कि लोग त्याग से घबराते हैं। वे समझते हैं कि खुद ही स्वार्थ का मोह छोड़ने से क्या लाभ, हानिप्रद आनन्द को क्यों छोड़ा जाय ? वे इसमें माधुर्य पाते हैं और माधुर्य को क्यों छोड़ दें ? त्याग की भावना में उनको आनन्द आता है, फिर भी ऐसी इच्छाओं को छोड़कर नीरस और शुष्क जीवन क्यों बितायें ? क्यों न खायें-पियें और मौज उड़ायें, ऐसे आनन्द-दायक जीवन को छोड़कर कष्टों में क्यों पड़ें ?

हाँ, ऐसा होना भी चाहिए, क्योंकि यदि मनुष्य सरलता से यह जान लेता है कि किसी विशेष प्रकार के स्वार्थ को छोड़ देने से उसे बेहद खुशी प्राप्त होगी और उसके लाभ का मापबिन्दु बहुत बढ़ जायगा, तो निःस्वार्थ-भावना का प्राप्त करना-जिस-को प्राप्त करना वर्तमान दशा में भी बहुत कठिन है—और भी कठिन नहीं वरन् असम्भव हो जाता है, क्योंकि अत्यधिक लाभ का अहम्-भरा लालच मनुष्य के दिल में और अधिक जोरदार हो जाता है, और जहाँ लालच है वहाँ निःस्वार्थ-भावना का ठिकाना कहाँ ? और निःस्वार्थ-भावना के बिना सुख कहाँ ?

जब तक मनुष्य लाभ या इनाम के विचार को छोड़कर सुविधानुसार हानि सहन करने के लिये तैयार नहीं हो जाता, तब तक वह निःस्वार्थ नहीं हो सकता और पूर्ण प्रसन्नता या प्रेम या आनन्द को नहीं पा सकता। हृदय की यही दशा मनुष्य को स्वार्थी से निःस्वार्थ बनाती है। मनुष्य को अपने स्वार्थी स्वभाव और कार्यों को छोड़ने के लिये तैयार रहना चाहिए, क्योंकि वे अनुचित और गलत हैं। इनाम या किसी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तिगत लाभ का विचार न रखकर केवल दूसरों को सहायता पहुँचाने के लिए त्याग करना चाहिए। यदि वह संसार को अधिक सुन्दर और सुखी बनाने का माध्यम हो सकता है, तो उसे अपनी खुशी, अपना आराम, अपना सुख, यहाँ तक कि अपने प्राणों का त्याग कर देंने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। क्या ऐसा करने से उसे हानि होती है ? क्या किसी कंजूस का, जब कि वह धन से मोह तोड़ देता है, कुछ नुकसान होता है ? क्या चोर का, जबकि वह चोरी करना छोड़ देता है, कुछ नुकसान होता है? क्या किसी बदमाश का, जबकि वह बदमाशी छोड़ देता है, कुछ घट जाता है ? वास्तव में स्वार्थ को छोड़ देने से यद्यपि कुछ हानि नहीं होती, तथापि मनुष्य सोचता है कि ऐसा करने में उसकी हानि होती है, और चूँकि वह ऐसा सोचता है इसलिए उसे दुख होता है। यही दुख उसकी हानि है। त्याग उसकी हानि और उसके दुख को लाभ अर्थात् सुख में बदल देता है।

सच्चा त्याग आन्तरिक भावना में है, गंगा पर जाकर बैंगन या कोई और दूसरी सब्जी खाना छोड़ देना त्याग नहीं कहला सकता, वरन् किसी बुरी आदत, उदाहरणतया झूठ, धोखा, छल-कपट इत्यादि सैकड़ों किस्म के दोष आदि, को छोड़ना ही सच्चा त्याग है। यह त्याग बाहर से दिखाई नहीं देता, क्योंकि यह गुप्त और आत्मिक है। आत्म-त्याग के बिना कुछ भी नहीं होता। यदि मनुष्य आध्यात्मिक उन्नति करना चाहता है तो उसे अब या कभी भी आत्मा को बलिदान करना ही पड़ेगा।

किन्तु यह गुप्त बलिदान क्या है, किस तरह किया जाता है और इसकी खोज कहाँ की जाय ? यह कहाँ मिलता है ? दैनिक व्यवहार और व्यापार में स्वार्थ-भरे विचारों और कामों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर विजय पाना ही बलिदान है। दूसरों के सम्बन्ध में उसका विचार किया जाय। किसी समय खुशी में आकर फड़क उठने के अवसर पर इसे खोजा जा सकता है।

हृदय के गुप्त और महत्त्वशाली बलिदान कई प्रकार के होते हैं। बलिदान करना बहुत ही कठिन और कष्टप्रद होता है, किन्तु बलिदान करने वाला और जिसके लिये बलिदान किया जाता है, दोनों ही को उससे हार्दिक आनन्द प्राप्त होता है।

मनुष्य ऐसे बड़े काम करने और ऐसा कोई बड़ा त्याग करने के लिये तो इच्छुक रहते हैं जो उनके जीवन के अनुभव से बढ़ कर होता है, अर्थात् जिसके करने का न तो उन्हें अनुभव ही होता है और न ही योग्यता। किन्तु इन छोटे-छोटे त्यागों को, जिनका करना अत्यन्त आवश्यक तथा उनकी सामर्थ्य में होता है, वे भूले रहते हैं। उनकी ओर उनका ध्यान तक नहीं जाता। तुम्हारी कमजोरी कहाँ है? तुम किस अवगुण के शिकार हो? विपत्तियाँ तुम पर कहाँ आक्रमण करती हैं? यहीं से तुम अपना प्रथम त्याग आरम्भ करो और इस प्रकार तुमको शान्ति का मार्ग मिल जायगा।

मान लो, तुममें यह अवगुण है कि तुमको शीघ्र ही क्रोध आ जाता है, या तुम नरमी का व्यवहार नहीं कर सकते। क्या तुम क्रोध को रोकने और किसीको कड़वे वचन कहने से अपने को रोकने के लिये तैयार हो? क्या तुम गाली सुनकर उसे खामोशी के साथ सहन कर पाने के लिये तैयार हो? यदि तुम्हारे व्यक्तित्व पर आक्षेप किया जाय तो क्या तुम चुप रह सकते हो? अपने विरुद्ध गलत आरोप लगाये जाने पर क्या तुम धैर्य रख सकते हो?...यदि हाँ तो फिर उन गुप्त बलिदानों को भी तुम कर सकते हो जो तुम्हें परमानन्द और शान्ति की ओर को ले जायँगे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि तुम्हारे स्वभाव में क्रोध या उग्रता है तो उसको छोड़ दो, क्योंकि तुम्हारे हृदय की दशा तुम्हें कभी भी लाभ नहीं पहुँचा सकती है। इसके विपरीत यह दशा तुम्हें बेचैनी, दुख और आध्यात्मिक अंधकार की ओर ले जायगी। तुम दूसरों को भी इन सारी चीज़ों के अतिरिक्त और कुछ नहीं दे सकते।

कदाचित् तुम कहोगे कि अमुक व्यक्ति ने पहले मेरे साथ दुर्व्यवहार और अन्याय किया। मान लिया कि ऐसा ही हुआ होगा, किन्तु यह कितना ग़लत बहाना है। यदि दूसरे व्यक्ति की ओर से किया गया दुर्व्यवहार और अन्याय अनियमित तथा हानिप्रद है, तो बताओ तुमने जो उसके उत्तर में वैसा ही व्यवहार अथवा अन्याय किया, वही कहाँ तक उचित है ? यदि एक व्यक्ति तुम्हारे साथ नेक व्यवहार नहीं करता, तो यह उचित दलील नहीं है कि तुम भी उसके साथ नेक व्यवहार न करो।

ईंट का जवाब पत्थर से नहीं दिया जाता, अपितु तुम्हें यह अवसर मिला है कि तुम नरमी दिखाकर और श्रेष्ठ व्यवहार करके उस व्यक्ति का हृदय बदल दो। आग को आग नहीं बुझाती। दुर्व्यवहार करने से दुर्व्यवहार में कमी नहीं आती वरन् तेज़ी आती है। क्रोध को क्रोध से नहीं जीता जाता। वह व्यवहार ही है जिसके सामने क्रोध धीमा पड़ जाता है।

क्रोध करना छोड़ दो तथा नरमी करना सीखो। देखो, ताली दोनों हाथों से बजती है। तुम दूसरा हाथ न बनो। यदि कोई व्यक्ति तुमसे दुखी या क्रोधित है तो तुम सोचो कि तुमने ऐसा क्या बुरा किया है ?...तुमने कहाँ ग़लती खाई है ? उसके उत्तर में तुम दुखी न हो और न ही उसके साथ दुर्व्यवहार करो। ऐसे अवसर पर खामोश, शान्त और दयालु बनो तथा लगातार भलाई करने में लगे रहकर हानि पहुँचाने वाले और बुराई करने वालों पर दया करना सीखो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि तुम स्वभावतः जल्दबाज़ और चिड़चिड़े हो तो उस गुप्त बलिदान को ज्ञात करो जिसके द्वारा तुम उन बुरी आदतों से छुटकारा पा सकते हो। अपनी जल्दबाज़ी और बेसब्री को छोड़ दो। जिस स्थान पर जाने से तुम्हारा स्वभाव बिगड़ जाता है और बेकाबू हो जाता है, वहीं उसे काबू में रखने का प्रयत्न करो। यह निश्चय दृढ़ कर लो कि तुम इन बुरी आदतों के दास नहीं बने रहोगे। उन बुरी आदतों का रखना तुम्हारी मर्यादा के अनुकूल नहीं, और अब तुम एक पल के लिये भी उनके सामने न झुकोगे। तुम इस धोखे में पड़े हुए हो कि दूसरे लोगों की गलती और मूर्खता से तुम भड़क उठते हो, बेसब्र हो जाते हो। दूसरे भले ही कुछ भी कहते और करते फिरें—यहाँ तक कि तुम्हारी हँसी भी उड़ाते फिरें—ऐसे अवसरों पर भड़क उठना अनावश्यक ही नहीं वरन् जिस गलती या दोष को दूर करने के लिये भड़काव उत्पन्न हुआ है, उस गलती या दोष को यह भड़काव उल्टे और भी बढ़ाता है। भड़क उठने से किसीको भी लाभ नहीं पहुँचता। जल्दबाज़ी, बेसब्री और चिड़चिड़ेपन के भाव कमज़ोरी तथा अयोग्यता की देन हैं। बतलाओ, फिर उनसे तुम्हें क्या प्राप्त होता है ?

क्या उनसे तुम्हें और तुम्हारे अन्य आसपास के मनुष्यों को आराम,चैन,प्रसन्नता और सुख मिलता है ?…नहीं…वरन् इसके विपरीत यह दशा तुमको और तुम्हारे आसपास के लोगों को परेशान और दुखी बना देती है।…मानो तुम्हारी इन आदतों से दूसरों को कष्ट पहुँचता है।…किन्तु सबसे बढ़कर कष्ट तुम्हें ही होता है। अतः शान्त रहना चाहिये और साहस तथा सन्तोष से काम लेना चाहिये।

जल्दबाज़ और चिड़चिड़े स्वभाव वाले व्यक्ति को कभी सच्ची प्रसन्नता प्राप्त नहीं होती। हाँ, ऐसी आदतों को छोड़ देने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से सहन-शक्ति बढ़ जाती है। पक्षपात और क्षमा करने की आदतों से पूर्णरूपेण छुटकारा मिल जाता है और उनको निःस्वार्थ-भावना की वेदी पर चढ़ा दिया जाता है। ऐसे ही समय नेक तथा शान्तिपूर्ण हृदय को प्रसन्नता प्राप्त होती है।

जिस क्षण हम स्वयं को भूलकर दूसरों की भलाई का ध्यान रखने लगते हैं, वही क्षण हमारे जीवन का वास्तविक क्षण होता है। प्रत्येक त्याग, जो हम नम्रता के साथ दूसरों की भलाई के लिये करते हैं, वही हमारे जीवन का मूल उद्देश्य होता है, और इस प्रकार हमारे सामने आध्यात्मिक प्रकाश प्राप्त कर पाने के लिये आत्म-द्वार खुल जाता है।

वासना-प्रदत्त ऐसे बहुत से आनन्द स्वार्थ से भरे होते हैं जो प्रत्यक्ष में तो बिल्कुल निर्दोष तथा निरापद लगते हैं, और जिनसे साधारणतया परहेज़ नहीं किया जाता, किन्तु वास्तविकता यह है कि कोई भी काम अथवा क्रिया, जिसमें स्वार्थ की भावना है, निरापद नहीं कही जा सकती है। मनुष्य यह नहीं सोचता कि आदतों के वश में होकर बार-बार ऐसे काम तथा क्रियाएँ करने से उसे कितनी हानि हो रही है।

मनुष्य में दैवी गुण तथा राक्षसी प्रवृत्तियाँ दोनों ही होती हैं, और दैवी गुण तभी बढ़ सकते हैं जबकि उसमें राक्षसी प्रवृत्तियों की मात्रा कम हो। राक्षसी भावनाओं के प्रभावशाली हो जाने पर हम सचाई तथा आनन्द से दूर हो जाते हैं। ज्यूँ-ज्यूँ मनुष्य अपनी इच्छाओं को अमानुषिक आनन्दों की ओर झुकाता है, त्यूँ-त्यूँ वे इच्छाएँ अधिक उत्तेजित और मुँह-जोड़ होती जाती हैं।

जब तक मनुष्य इन छोटी-छोटी बाह्य इच्छाओं को नहीं छोड़ता, तब तक वह इस वास्तविकता को नहीं समझ सकता कि ऐसा करने से उसने अपनी कितनी शक्ति, प्रसन्नता, नेक-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलनी तथा पवित्रता को व्यर्थ खोया है। जब तक मनुष्य उनका त्याग नहीं करता, उनकी प्राप्ति के पीछे मारा-मारा फिरता है, तब तक वह सच्चे आनन्द के दर्शन नहीं कर पाता है।

अमानुषिक आनन्द के जाल में फँसकर मनुष्य अपने आप को ज़लील तथा अपनी प्रतिष्ठा को नष्टप्राय-सा कर लेता है, अपने विश्वास और प्रभाव को खो बैठता है, संसार में अच्छे कार्य कर पाने की शक्ति और योग्यता को व्यर्थ कर डालता है। अन्धी इच्छाओं के चक्कर में पड़कर वह अपने आन्तरिक अन्धकार को इतना अधिक बढ़ा लेता है कि उसमें नेकी तथा बदी को देखने तथा वास्तविकता और सचाई को पहचानने की भी सामर्थ्य शेष नहीं रह पाती है।

अमानुषिक इच्छाओं की उत्पत्ति ही सत्य-पथ की शत्रु है। इनके त्याग से मनुष्य अन्धकार और अज्ञान की दलदल से निकलकर दूरदर्शिता और ज्ञानोदधि की दृढ़ चट्टान पर जा खड़ा होता है।

अपनी लुभावनी और मनोहारी इच्छाओं को छोड़ दो और एक पल की प्रसन्नता की अपेक्षा सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम तथा अमर सुख-शान्ति की ओर अपना हृदय लगाओ। यदि तुम वासना-प्रदत्त आनन्दों के मोह से ऊपर रहोगे तो तुम्हारा जीवन न तो व्यर्थ ही जायगा और न अस्त-व्यस्त ही रहेगा।······

बहुत से मनुष्य अपनी ही बात को सर्वोपरि समझते हैं। उनकी ज़बान से जो कुछ भी निकल गया मानो वह विधाता की लकीर की भाँति अडिग, अमिट है और उसको स्वीकार कराने के लिये वे दूसरों से लड़ते-झगड़ते तथा विवाद करते हैं। इस आदत को छोड़ देने का प्रभाव दूसरों पर इतना अच्छा पड़ सकता है कि उसका अनुमान तक कर पाना कठिन है।

दूसरों की राहों में, दूसरों के रहन-सहन के ढंग में और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके धार्मिक आचार-व्यवहारों में हस्तक्षेप करना छोड़ दो। फिर तुम देखोगे कि संसार में विभिन्न धार्मिक गुटों के पारस्परिक झगड़ों और लड़ाइयों की समाप्ति हो जायगी।...... किन्तु दुख तो इस वात का है कि छोटे-से-छोटा व्यक्ति भी अपनी ही राय को सही मानता है तथा दूसरों की राय को ग़लत।

यदि देखा जाय तो ऐसा करना एकदम स्वार्थ है।......यह घातक रोग अधिकतर उपदेशकों, प्रचारकों और धर्म के ठेकेदारों में पाया जाता है और निर्दयता तथा पक्षपात का द्योतक है। तिस पर भी यह रोग नेकी का सूचक समझा जाता है।...

किन्तु जब कोई मनुष्य एक बार इस घातक रोग की भयानकता और निःसारता को समझकर नम्रता तथा उदारता के पथ को अपना लेता है, तो आत्म-प्रशंसा की कष्टप्रद विशेषता और उसके भौंडेपन तथा कुरूपता को भी वह भली प्रकार पहचान लेता है और तब वह इस रोग से छुटकारा पाने का प्रयत्न करता है।

अपने ही मत को सर्वोपरि समझने वाला मनुष्य अपने मत को इस सत्यता का मापदण्ड समझने लगता है, और जिनके मत तथा जीवन उसके अपने मापदण्ड के अनुकूल नहीं होते हैं वह उन सभी को ग़लत मार्ग पर जाने वाला समझता है। अतः वह दूसरों का मार्ग प्रशस्त करने का इतना इच्छुक रहता है कि उसे स्वयं को सही मार्ग पर चलते रहने का ध्यान तक नहीं रहता और इस प्रकार वह अपने विरोध में इतना बड़ा तूफ़ान पैदा कर लेता है जिससे उसके हृदय को ठेस पहुँचती है, जिसका परिणाम यह होता है कि उसे सर्वदा ही शोक, दुख तथा संकीर्णता का बुखार-सा चढ़ा रहता है। भला ऐसे मनुष्य के लिये शान्ति, खुशी और सच्चा ज्ञान कहाँ?...... जब तक वह दूसरों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को अपने मत के अनुकूल बना पाने की इच्छा को नहीं त्यागता है, तब तक वह शान्ति, ज्ञान और उन्नति से वंचित रहता है। वह न तो दूसरों को समझ ही सकता है, न ही दूसरों के दिलों में अपना स्थान बना पाता है और न ही उनके मामलों में प्रेम-भरी सहानुभूति दिखला सकता है। चूँकि पक्षपात ने उसके हृदय को संकीर्ण बना डाला है, अतः न तो वह दूसरों की हम-दर्दी ही प्राप्त कर पाता है और न ही उनसे कोई आध्यात्मिक लाभ उठा सकता है।

जो व्यक्ति आत्म-प्रदर्शन (अहंम्) की अपनी आदत को छोड़ देता है और अपने दैनिक व्यवहार से अहम् तथा पक्षपात को दूर कर देता है (ताकि वह दूसरों की दशा और उनके हृदय का सही अनुमान लगा सके), वह दूसरों से स्वयं भी कुछ सीख लेने के अतिरिक्त उनको भी इतनी ही स्वतन्त्रता दे देता है जितनी वह अपने लिए चाहता है। वह दूसरों के मतों का आदर करता है और इस प्रकार वह पहले की अपेक्षा अधिक विशाल-हृदय बन जाता है। उसके ज्ञान में वृद्धि हो जाती है, उसमें दया का भाव बढ़ जाता है, जिससे उसको उत्त-रोत्तर अधिक आनन्द की प्राप्ति होने लगती है और वह आनन्द के उस मार्ग को पा लेता है जो कुछ समय पूर्व उसकी आँखों से ओझल था।

एक और त्याग भी आवश्यक है, और वह त्याग है लोभ और लालच का, अर्थात् दूसरों के धन की वृद्धि देखकर ईर्ष्या करने की अपेक्षा हमें प्रसन्नता होनी चाहिये। हमें सोचना चाहिए कि शुक्र है, हमारा भाई भी सुख से रोटी खाने योग्य बना है, न कि यह सोचना चाहिए कि यह सभी कुछ मेरे ही पेट में पड़ जाय—सारे संसार का धन मेरे ही भाग में आ जाय।

तुम दूसरों के सुख-दुख में योग देना सीखो। अपने ही लाभ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की ओर न दौड़ो, वरन् दूसरों को भी लाभ होने दो। जब तुम्हारे हृदय की ऐसी दशा हो जायगी तो तुम्हारे हृदय में पूर्ण शान्ति और सच्ची आत्म-शक्ति आने लगेगी। इस त्याग का नाम ही आत्म-त्याग है।

सांसारिक धन-दौलत अस्थायी और क्षणभंगुर हैं। आज हैं और कल नहीं। अतः हम उसे अपना नहीं कह सकते हैं। वह हमारे पास थोड़े समय के लिये है, किन्तु आध्यात्मिक विशेषताओं से प्राप्त लाभ स्थायी होता है। वह हमारे साथ ही रहता है।......स्वार्थ से परे रहना एक ऐसा आत्म-लाभ है जो सांसारिक सुखों और धन-दौलत आदि को परहित में लगाने से प्राप्त होता है, न कि यह इच्छा करने से कि सारा सुख और सारी दौलत मुझे ही मिल जाय।

स्वार्थ से रिक्त मनुष्य धनाढ्य होने पर भी अपने-आपको उस धन के नशे से अलग रखता है। अतः वह उस भय, चिन्ता और कटुता से बचा रहता है, जो लोभी व्यक्तियों को अपने धन के नष्ट हो जाने के विचार-मात्र से आ-आकर सताती हैं।

ऐसा व्यक्ति अपने धन को इतना अधिक महत्व नहीं देता है जितना कि निःस्वार्थ-भावना को। वह इस गुण को संसार के लिये अत्यन्त आवश्यक समझता है। उसके लिये धन इतना आवश्यक नहीं जितना कि यह गुण। वह संसार-भर के दुखिया मनुष्यों के लिए इस गुण को सर्वश्रेष्ठ समझता है।

अब बताओ, सुखी कौन है? क्या वह व्यक्ति सुखी है जो अपने धन को बढ़ाता चला जाता है और उसके द्वारा केवल अपनी ही इच्छाओं की पूर्ति के साधन जुटाता है, या वह व्यक्ति जो दूसरों के सुख और भलाई के लिये जो कुछ भी उसके पास है उसको भी दे डालता है? लोभ करने से सुख नष्ट हो जाता है और सन्तोष तथा धैर्य से उसे प्राप्त किया जाता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक और गुप्त त्याग, जिसमें और भी अधिक आध्यात्मिक शान्ति निहित है और जो विभिन्न मनुष्यों के घायल हृदयों पर मरहम का काम देता है, इर्ष्या का त्याग है, अर्थात् दूसरों के सम्बन्ध में संकीर्ण विचार, ईर्ष्या, घृणा और प्रतिशोध की भावना का हृदय से निकाल डालना। ईर्ष्या एक ऐसी भयानक आग है जो मनुष्य के हृदय में उत्पन्न होकर उसके सुख तथा शान्ति को भस्म कर देती है, और जहाँ-जहाँ वह भड़कती है नर्क गढ़ डालती है।

दूसरों से ईर्ष्या करना, दूसरों के सम्बन्ध में गलत धारणाएँ बनाना, दुर्व्यवहार करना, बुराई और निन्दा करना, प्रतिशोध लेने और बदला लेने की भावनाएँ रखना, यह सभी घृणा के रूप हैं। .... जहाँ घृणा है वहाँ दुख अवश्यम्भावी है। जब तक मनुष्य के हृदय में बदला लेने के विचार पैदा होते रहते हैं, तब तक वह घृणा पर विजय प्राप्त नहीं कर सकता और उसका त्याग पूर्ण रूप से विश्वस्त नहीं कहा जा सकता। जब तक वह व्यक्ति अपने को हानि पहुंचाने वालों का भला नहीं चाहता, वह घृणा के रोग का शिकार बना रहता है। यदि तुम सच्चा आनन्द प्राप्त करना चाहते हो तो तुम्हें घृणा और ईर्ष्या को छोड़ना ही पड़ेगा।

घृणा के कठोर और लौह द्वारों के पीछे प्रेम का देवता किसीके आने की प्रतीक्षा में खड़ा है और अपने-आपको उस व्यक्ति को समर्पित कर देने के लिए तत्पर है जो घृणा और ईर्ष्या के विचारों पर विजय पाकर उसके पास तक आयेगा। ..... वह देवता फिर उस व्यक्ति को शान्ति के मन्दिर में ले जायगा।

दूसरे व्यक्ति तुम्हारे सम्बन्ध में भले ही कुछ भी कहते फिरें, या तुम्हारे साथ कैसा ही दुर्व्यवहार करें, तुम बुरा न

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानो। घृणा का उत्तर घृणा से न दो। यदि कोई व्यक्ति तुम से घृणा करता है, तो यह सम्भव है कि तुमने कभी जाने या अनजाने में उसका कुछ बिगाड़ा हो, अथवा तुममें या उसमें एक-दूसरे को पहचानने में कुछ ग़लतफ़हमी रह गई हो। यदि ऐसा है तो वह ग़लतफ़हमी थोड़ी-सी नेक नीति तथा नरमी के साथ बातचीत करने से दूर हो सकती है।

दूसरों की बुराई न करना ही सर्वश्रेष्ठ सभ्यता है। सबसे अच्छा सुधारक वह है जो अपनी दूर दृष्टि में केवल सौन्दर्य तथा योग्यता ही को देखता है, तथा अपने-क्रियाशील जीवन की मशाल से ग़लती करने वालों को उचित मार्ग पर ला सकता है हर प्रकार की घृणा को मानव-सेवा की बलिवेदी पर बलिदान कर दो। इस बात का तो विचार ही न करो कि किसीने तुम्हें हानि पहुँचाई है, परन्तु इस बात का ध्यान रखो कि अब तुम किसीको भी हानि नहीं पहुँचाओगे और न ही किसीका दिल दुखाओगे। अपने हृदय के द्वार खोल दो ताकि विशाल और उन्मत्त प्रेम उसमें प्रविष्ट हो सके। प्रत्येक प्राणी की रक्षा करो, उसे आराम पहुँचाओ, यहाँ तक कि अपने शत्रु के साथ भी भलाई करो। जो तुम्हारे साथ बुराई करता है तुम उसके साथ भलाई करो।

इनके अतिरिक्त और बहुत सी छोटी-छोटी बातें—उदाहरणतया अपवित्र विचार, अनावश्यक आत्म-प्रशंसा, अभिमान, अहम्, आत्म-प्रदर्शन, अवगुण, कुवचन आदि—ऐसी हैं कि जिनकी ओर पूर्ण ध्यान देकर इन सब बातों का त्याग करना मनुष्य के लिये अच्छा है। ये सब बातें हृदय की कुरूपता और कलंक हैं। मनुष्य जैसे-जैसे इन सबको एक-एक करके छोड़ता जाता है, वैसे-वैसे ही उसे कमजोरी, दुख, मुसीबत और रंज से छुटकारा मिलता जाता है और इस प्रकार वह पूर्णानन्द का

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्ग खोज लेता है।

साधारणतया हृदय के अन्दर कई प्रकार के गुप्त त्याग निहित होते हैं और उनका बलिदान भी हृदय के त्याग पर निर्भर होता है। जब तक मनुष्य यह स्वीकार न करे कि यह उसका अपराध है, यह उसकी ग़लती है, तब तक वह उस दोष को दूर नहीं कर सकता। जब वह उसे छोड़ देगा, तब उसे पूर्ण सत्यता के दर्शन होने लगेंगे, जो पहले उसके अपराध के कारण दिखाई नहीं देती थी और जिस पर अपराध का पर्दा पड़ा हुआ था।

स्वर्गलोक का राज्य केवल बातों से नहीं, क्रियाशील होने से मिलता है। वह स्वयं प्राप्त होता हुआ दिखाई नहीं देता, वरन् परहित में अपने शरीर का कण-कण बलिदान कर देना, प्रतिदिन अपनी हार्दिक इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं को चुपचाप छोड़ देना न ही किसीको दिखाई देता है और न ही उसका इनाम मिलता है। इसके लिए न तो यश मिलता है और न ही प्रशंसा होती है। यह त्याग संसार की दृष्टि से बिल्कुल गुप्त रहता है, यहाँ तक कि पास रहने वाले भी इसे नहीं देख सकते। इसका कारण यह है कि शारीरिक दृष्टि इस त्याग से प्राप्त होने वाले आध्यात्मिक सौंदर्य को देख पाने में असमर्थ है। यह कभी भी न सोचिये कि जब तुम्हारा यह त्याग किसीको दिखाई ही नहीं देता तो फिर उसे करने से क्या लाभ ? यह बात नहीं, वरन् त्याग तो आनन्द देने वाला प्रकाश है, जो तुम्हारे हृदय और मस्तिष्क को प्रकाशित कर देता है, और तुम्हारे अन्दर दूसरों की भलाई करने की शक्ति भरता है। यद्यपि लोग उसे देख नहीं सकते और शायद समझ भी नहीं सकते, फिर भी तुम्हारे उस त्याग से गुप्त रूप से प्रभाव प्रवाहित हो रहा है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे हृदय में जो संघर्ष हो रहा है और जो लड़ाई अहम् के साथ नित्यप्रति लड़ रहे हो तथा जो विजय तुम अपने ऊपर पा रहे हो, दूसरों को इस बात का पता तो नहीं लग सकता, किन्तु वे तुम्हारे बदले हुए स्वभाव और प्रेम-भरे हृदय को जरूर देख सकते हैं और तुम्हारे प्रेम और प्रसन्नता से उनको भी कुछ-न-कुछ प्राप्त हो रहा है। हाँ, वे यह नहीं देख सकते कि तुम्हारे हृदय में अभिमान और अहम् के विरुद्ध कितना भयानक युद्ध हो रहा है, तुमको कितने घाव आये हैं, तुम उन पर कौनसा मरहम लगाते हो, तुम्हें कितना दुख और तकलीफ़ उठानी पड़ती है और आख़िरकार तुमको कितनी शान्ति मिली है ? किन्तु वे यह ज़रूर जानते हैं कि तुम पहले की अपेक्षा कहीं अधिक रसीले, नेक, शान्तचित्त और साहसी हो गये हो, तुममें साहस और धैर्य की मात्रा बढ़ गई है, तुम्हारा स्वभाव पहले से अधिक नम्र और मधुर बन गया है, तुम्हारी उपस्थिति से दूसरों को आराम और सहायता मिलती है। इससे बढ़कर और क्या इनाम हो सकता है ? प्रेम के फूलों की सुगंध के सामने लोगों की बेहूदा, ग़लत और अनुचित प्रशंसा क्या महत्त्व रखती है ? स्वार्थ से रहित हृदय की पवित्र अग्नि में संसार की झूठी वाह-वाह और खुशामद जलकर भस्म हो जाती है। प्रेम अपना इनाम आप ही है। हार्दिक आनन्द और हार्दिक शान्ति उसका इनाम है। भावनाओं की अग्नि से झुलसी हुई आत्माओं के लिये प्रेम ही अन्तिम औषधि है।

अहम् का त्याग, जिससे पूर्ण ज्ञान और सच्चे आनन्द की प्राप्ति होती है, किसी बहुत बड़े और श्रेष्ठ काम के पूरा करने से नहीं होता, वरन् दैनिक जीवन में साधारण, छोटे-मोटे और अनवरत बलिदानों तथा स्वार्थ पर विजय प्राप्त करने से धीरे-धीरे प्राप्त होता है। एक ही छलाँग में हम छत पर नहीं पहुँच

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकते ।

जो व्यक्ति इस प्रकार से प्रतिदिन अहम् पर विजय पाता है, जो व्यक्ति किसी बुरे विचार को दबाता है और अपवित्र इच्छाओं और पाप की ओर जाने से परहेज करता है, उसकी शक्ति की पवित्रता और बुद्धि की प्रखरता प्रतिदिन उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। उसका प्रत्येक त्याग उसे प्रत्येक सवेरे सत्यता के माधुर्य तक पहुँचाने में सहायक होता है।

सचाई और आनन्द के प्रकाश को न तो अपने से बाहर खोजो और न ही कहीं अपने-आपसे अलग किसी अन्य स्थान में मिल पाने की आशा करो, वरन् उसे अपने ही अन्दर खोजो। तुम इस प्रकाश को न केवल अपने कर्तव्यों की संकीर्ण सीमा में पाओगे, वरन् तुम इसे अपने दैनिक बलिदानों में, चाहे वे छोटे हों अथवा बड़े, ही पाओगे।

छठा पथ दिखाने से पूर्व मैं तुम्हारा ध्यान पुनः इस बात पर खींचना चाहता हूँ कि छोटे-छोटे आन्तरिक त्यागों ही में तुम्हारी वास्तविक प्रसन्नता का रहस्य छिपा है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छठा पथ

सहानुभूति

"जब अपनी ओर देखो तो सख्ती से काम लो, किन्तु जब तुम दूसरे मनुष्यों की ओर देखो तो नम्रता से काम लो। इस प्रकार की अनुचित छींटाकशी से परहेज़ करो जो साधारण मनुष्यों की ज़बान से इस प्रकार निकलती है जैसे दलदल वाली धरती से बेहद घास-फूँस।"

—ऐला वेलूदलकाक्स

"मैं विपत्तिग्रस्त मनुष्य से यह नहीं पूछता कि तुम्हारी दशा कैसी है, वरन् मैं स्वयं ही आपदग्रस्त बन जाता हूँ।"

—वास्ट विटमान

"जब मनुष्य के किसी जोड़ में पीड़ा होती है तो उसके दूसरे जोड़ भी बेचैन हो जाते हैं।"

—शादी

जिस सीमा तक हमने अपने-आप पर अधिकार पाया है, उसी सीमा तक हम दूसरों के साथ सहानुभूति का व्यवहार कर सकते हैं। जब तक हम अपना ही ध्यान रखेंगे तब तक दूसरों का ध्यान नहीं रख सकते हैं और न ही उनसे सहानुभूति रख सकते हैं। यदि हम अपनी ही प्रशंसा, अपनी ही सुरक्षा और अपनी ही सम्मति का ध्यान रखेंगे तो हम दूसरों के साथ प्रेम का व्यवहार नहीं कर सकते। दूसरों के विचार में अपने-आपको भूल जाना ही सहानुभूति है।

दूसरों के साथ सहानुभूति रखने के लिए पहले हमें उनकी दशा को समझना आवश्यक है और उनकी दशा का ठीक ढंग

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से अनुमान लगाने के लिए हमें उनके सम्बन्ध में अपने अन्दर दृढ़ विचारों को अलग कर देना आवश्यक है। वे जैसे हैं वैसा ही उन्हें देखना ठीक है। तुम्हें उनकी परिस्थितियों में घुसकर उनके समान ही बन जाना चाहिये।

हम ऐसे व्यक्तियों के साथ इस प्रकार का व्यवहार तो कर नहीं सकते जिनका अनुभव और जिनकी बुद्धि हमसे बढ़कर है और न ही ऐसे लोगों से हार सकते हैं जिनको हम अपने से तुच्छ समझते हैं, क्योंकि सहानुभूति और अहम् इकट्ठे नहीं रह सकते। अलबत्ता हम उन लोगों के साथ सहानुभूति दिखा सकते हैं जो अभी तक उन दोषों और अपराधों में फँसे हुए हैं जिनसे हमने छुटकारा पाया है।

जिस व्यक्ति की बुज़ुर्गी हमसे बढ़कर है उसको हम अपनी सहानुभूति की छत्रछाया में नहीं ले सकते। किन्तु उसकी सहानुभूति प्राप्त करके हम उन पापों से अपने-आपको बचाने का रास्ता निकाल सकते हैं जिनमें हम अभी तक जकड़े हुए हैं, और ऐसे व्यक्तियों के सत्संग से हम लाभ उठा सकते हैं।

अब रहा अपने से छोटे व्यक्तियों का प्रश्न। जब तक हम अपनी बुराई के घमंड को नहीं छोड़ते, हम उनसे सहानुभूति नहीं कर सकते, इसलिये हमें अपने अहम को छोड़ना ही पड़ेगा।

संकीर्णता और स्वार्थ सहानुभूति के मार्ग में बड़ी भारी रुकावटें हैं। अहम् और आत्म-प्रदर्शन सहानुभूति के स्रोत को बन्द कर देते हैं। जिस व्यक्ति से तुम घृणा करते हो, तुम उसके साथ सहानुभूति कैसे रख सकते हो और जिससे तुम्हें ईर्ष्या है उसकी सहानुभूति भी प्राप्त करना तुम्हारे लिये असंभव है। तुम उस व्यक्ति को, जिससे तुम घृणा करते हो, समझने के अयोग्य हो, क्योंकि वह जैसा है तुम उसे वैसा नहीं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझ सकते। तुमने उसके सम्बन्ध में जैसी अनुचित और गलत धारणाएँ बना रखी हैं उन्हीं के अनुसार तुम उसे देखोगे। इस प्रकार तुम केवल उसकी बुराई को ही देखते हो, अतः तुम्हें उसका बुरा पहलू तो दिखाई देता है किन्तु उसके अच्छे पहलू को नहीं देख पाते।

यदि तुम्हें दूसरों की दशा समझनी हो तो उनके और अपने बीच में घृणा, पक्षपात, दुर्व्यवहार अथवा स्वार्थ को न आने दो, उनके कामों का विरोध न करो, उनकी आस्थाओं और सम्मतियों को बुरा न बतलाओ।

तुम थोड़ी देर के लिए स्वयं अपने-आपको पृथक् करके उनकी दशा में स्वयं को रखो। केवल इसी प्रकार तुम उन्हीं जैसे बनकर उनके अनुभवों और जीवन को भली भाँति समझ सकते हो।

और जब तुम उन्हें समझ जाओगे तो फिर तुम उन्हें अपराधी और दोषी न ठहराओगे। लोग एक-दूसरे को गलत समझते और बुरा बताते हैं और परस्पर मिलने से परहेज़ करते हैं, क्योंकि वे एक-दूसरे को नहीं समझते। समझते इसलिये नहीं कि उन्होंने अपने अहम् को नहीं मारा और अपने हृदय को पवित्र नहीं किया।

विकास और प्रौढ़ता ही को उन्नति कहते हैं। बच्चा विकसित होता हुआ ही बढ़ता है और एक दिन पूर्ण पुरुष बन जाता है। पापी और धर्मात्मा में कोई विशेष अन्तर नहीं है, केवल स्तर का अन्तर है। धर्मात्मा भी एक दिन पापी था, और पापी भी एक दिन धर्मात्मा बन सकता है। पापी मनुष्य एक बच्चे के समान है और धर्मात्मा बड़ी आयु के व्यक्ति की तरह। जो व्यक्ति पापियों को बुरा समझकर अपने-आपको उनसे पृथक् रखता है, वह उस व्यक्ति के समान है जो छोटे बच्चों को

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेसमझ, नादान और खिलौनों से खेलने वाला समझकर उनसे दूर भागता है।

समस्त जीवन एक ही है, किन्तु उसका प्रत्यक्षीकरण भिन्न है। पुष्प का पौधे से पृथक् कोई अस्तित्व नहीं। वह उसी वृक्ष का एक भाग है, वह पत्ते का ही एक दूसरा रूप है। भाप का पानी से पृथक् कोई अस्तित्व नहीं। वह पानी ही का एक बदला हुआ रूप है। इसी प्रकार नेकी भी बदी का एक बदला हुआ रूप है और धर्मात्मा भी पापी का ही एक बदला हुआ स्वरूप है।

पापी वही है जिसकी बुद्धि अभी कच्ची है, जो मूढ़ता के कारण अपवित्र और ग़लत उपायों पर चल रहा है। धर्मात्मा वह है जिसकी बुद्धि परिपक्व हो चुकी है और जिसके कार्य करने का ढंग सही है। एक पापी दूसरे पापी को बुरा बताता है और बुरा बताना एक ग़लत और अशोभनीय ढंग है, किन्तु धर्मात्मा पापी को बुरा नहीं कहता। इसका कारण यह है कि उसे याद है कि वह भी कभी पापी था। वह पापी को अपना छोटा भाई या मित्र समझकर उसके साथ पूर्ण सहानुभूति रखता है, क्योंकि सहानुभूति रखना एक अच्छी और सर्वश्रेष्ठ विधि है।

धर्मात्मा सबसे सहानुभूति रखता है। अब उसे दूसरों से सहानुभूति प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं रही, क्योंकि वह पाप और दुख को जीत चुका है और आनन्दपूर्वक रहता है। किन्तु जो आपदग्रस्त हैं, उन्हें सहानुभूति की आवश्यकता है, और जो पाप करते हैं तथा दुख भोगते हैं वे उसके अधिक अधिकारी हैं। जब मनुष्य यह समझ जाता है कि प्रत्येक पाप से, भले ही वह पूर्ण ध्यान से या पूर्ण मनोयोग से किया जाय, दुख अवश्य उठाना पड़ता है तो वह दूसरों को बुरा बताना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़ देता है और उनके ऐसे दुखों को देखकर, जो पाप से पैदा हुए हैं, उनके साथ सहानुभूति रखना शुरू कर देता है। उसे ऐसा ज्ञान तभी प्राप्त होता है जब वह अपने हृदय को शुद्ध और पवित्र बना लेता है।

जब मनुष्य अपने हृदय से अपवित्र भावनाओं को निकाल डालता है, स्वार्थपूर्ण विचारों को दूर कर देता है और अभिमान को पैरों तले कुचल डालता है, तब मानवीय जीवन के अनुभवों का उसे अनुमान हो जाता है, अर्थात् समस्त पाप और उनसे उत्पन्न कष्टप्रद परिस्थितियों, विचारों और आपदाओं का वह अनुभव कर लेता है। तभी वह नैतिक नियमों को भली भांति समझता है।

पूर्ण आत्म-संयम ही पूर्ण ज्ञान और सहानुभूति का आधार है। जो व्यक्ति अपने पवित्र हृदय की आँखों से दूसरे को देखता है वह उन पर दया अवश्य करता है, उन्हें अपने शरीर का ही एक अङ्ग मानता है और पापियों के सम्वन्ध में यह समझता है कि जैसे पहले मैंने पाप किये थे वैसे ही ये भी कर रहे हैं, जैसे मैंने दुख उठाये थे वैसे ही ये भी उठा रहे हैं। और वह इस विचार से प्रसन्न होता है कि जैसे मैंने आखिरकार शान्ति प्राप्त कर ली है, वैसे ही ये भी प्राप्त कर लेंगे। वास्तव में नेक और महान् पुरुष जोशीला और पक्षपाती नहीं होगा, वरन् वह सबसे सहानुभूति रखता है। वह न तो दूसरों की बुराई को बुराई कहता है और न उनका विरोध ही करता है। वह देखता है कि पापी को पाप प्यारा लगता है, क्योंकि पापी पाप के दुख और क्लेश को नहीं देखता। जब दुख और क्लेश उसे आ घेरते हैं, तो वह यह नहीं समझता कि उसके दुख और क्लेश का क्या कारण है।

मनुष्य की सहानुभूति वहाँ तक ही पहुँच सकती है जहाँ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक उसकी बुद्धि की पहुँच होती है, इससे आगे नहीं। मनुष्य जितना उदार हृदय और दयालु हो जाता है, वह उतना ही महान् बनता जाता है। अपनी सहानुभूति की सीमा को संकीर्ण बनाने का अर्थ यह है कि तुम हृदय को संकीर्ण बना रहे हो, अपने जीवन को कटु और अन्धकारपूर्ण बना रहे हो। इसके विपरीत सहानुभूति की सीमा को बढ़ाने का अर्थ यह है कि तुम अपने हृदय को विशाल, ज़िन्दगी को महान् और प्रफुल्लित बना रहे हो तथा दूसरों के लिए ज्ञान और प्रसन्नता के मार्ग को साफ़ कर रहे हो।

दूसरों के साथ सहानुभूति रखने का अर्थ यह है कि तुम उनके अस्तित्व को अपना ही अस्तित्व समझो और उनके साथ एक हो जाओ, क्योंकि निःस्वार्थ प्रेम इन दोनों को इस प्रकार एक कर देता है कि वे फिर अलग नहीं हो सकते।

जिस व्यक्ति की सहानुभूति न केवल मनुष्यों तक ही वरन् सब प्राणियों तक रहती है, वह व्यक्ति यह समझ गया है कि वह और सारा संसार एक ही सत्ता है। ये कोई दो वस्तुएँ नहीं। इस प्रकार वह सार्वभौम प्रेम, नियम और ज्ञान को जान लेता है।

जो व्यक्ति दूसरों को अपनी सहानुभूति से जितना वंचित रखता है, वह स्वयं भी उतना ही सुख, शान्ति और सचाई से वंचित रह जाता है। जहाँ पर उसकी सहानुभूति समाप्त हो जाती है वहाँ से ही निराशा, दुख और हलचल आरम्भ हो जाती है। जितना हम दूसरों को अपनी सहानुभूति से वंचित रखते हैं, उतना ही हम भी प्रेम के आनन्द से वचित रह जाते हैं और स्वार्थ की अँधेरी कोठरी में पड़े सड़ते रहते हैं। जो व्यक्ति सहानुभूति से रिक्त हृदय लेकर एक कदम भी उठाता है, वह मानो कफ़न में लिपटा हुआ अपनी कब्र की ओर जा रहा है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यता का अलौकिक प्रकाश केवल उस समय दिखाई देता है जबकि मनुष्य की सहानुभूति असीमित हो जाती है, क्योंकि असीमित प्रसन्नता असीमित प्रेम में ही पाई जाती है। सहानुभूति ही आनन्द है। सहानुभूति में सबसे अधिक प्रधानता और सर्वश्रेष्ठ संतोष प्राप्त होता है। सहानुभूति ही स्वर्ग है, क्योंकि उसके प्रकाश में सारे स्वार्थमय विचार नष्ट हो जाते हैं और पारस्परिक व्यवहार में पवित्र प्रेम अर्थात् आत्मा का न मिटने वाला प्रेम ही शेष रह जाता है। सच तो यह है कि सहानुभति को छोड़ देने से मनुष्य एक दृष्टिकोण से मृतप्राय हो जाता है, न वह देखता है, न जानता है और न ही किसी बात को अनुभव करता है।

जब तक मनुष्य दूसरे के सम्बन्ध में स्वार्थमय विचारों को अपने हृदय से निकाल नहीं देता, तब तक वह उसके साथ सच्ची सहानुभूति नहीं रख सकता। जो मनुष्य सच्ची सहानुभूति रखता है, वह दूसरों को वैसा ही देखने का प्रयत्न करता है जैसा कि वह है।

वह उनके प्रमुख अपराधों, दोषों, आपत्तियों, दुखों, सम्मतियों और पक्षपातों को सही रूप में जानने का प्रयत्न करता है। अन्त में वह जान लेता है कि वे लोग अपनी आध्यात्मिक उन्नति की किस चोटी पर पहुँचे हैं, उनका अनुभव कहाँ तक है। वे अपनी कार्य-शैली को नहीं बदल सकते, क्योंकि उनके विचार और कार्य उनके वर्तमान अनुभव और समझ के अनुसार ही बन चुके हैं। यदि उनकी समझ अच्छी होती तो वे कार्य भी अच्छा ही करते। चूँकि उनकी समझ अपरिपक्व है अतः कार्य भी बुरे ही करते हैं, और जब उनका अनुभव तथा बुद्धि परिपक्व और श्रेष्ठ हो जायगी तो उनमें स्वयमेव ही परिवर्तन आ जायगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर भी अच्छी संगति के द्वारा उनका ज्ञान बढ़ सकता है और उनको सहायता मिल सकती है, किन्तु कोई भी व्यक्ति कृत्रिम रूप में या जबर्दस्ती उन्हें अच्छा नहीं बना सकता। प्रेम और महानता के पौधों की वृद्धि के लिए समय आवश्यक है, किन्तु घृणा और नादानी की सख्त शाखाएँ एक ही दिन में काटकर नहीं फेंकी जा सकतीं।

ऐसा व्यक्ति अपने साथ मेल-जोल रखने वाले समस्त व्यक्तियों के आंतरिक जीवन का द्वार ढूँढ लेता है, उसे खोलकर अन्दर चला जाता है और उनके हृदय के मन्दिर में उनके साथ ही रहता है। वहाँ उसे न तो कोई वस्तु घृणा करने के योग्य ही मिलती है और न ही बुरा कहने के योग्य। इस प्रकार यहाँ से उसे प्रेम और सेवा करने के अवसर मिलते हैं और स्वयं उसके अपने हृदय में अधिक दया, अधिकाधिक धैर्य, संतोष तथा प्रेम का स्थान बन जाता है और वह अपने-आपको सबमें देखता है तथा समझता है कि सभी व्यक्ति एक ही समान हैं, उनके स्वभाव भी मुझ जैसे ही हैं, विभिन्न नहीं। अन्तर केवल न्यूनाधिक है। यदि उनके अन्दर पाप करने की भावना है तो उसके स्वयं के अन्दर भी वैसी ही भावना है, यद्यपि वह भावना अब दब गई है और पवित्र बन चुकी है। यदि दूसरे व्यक्तियों में पवित्रता तथा परहेज़गी अधिक है, तो उसके अन्दर भी ये दोनों चीजें मौजूद हैं, किन्तु वे अभी तक शक्तिशाली होकर दृढ़ नहीं बनी हैं।

एक बार सहानुभूति का स्पर्श पा जाने से समस्त संसार उसी प्रकार एक हो जाता है जिस प्रकार एक भिखारिणी के दुख को देखकर एक रानी का हृदय भी पिघल जाता है। दोनों के अन्दर एकसा ही हृदय है। सहानुभूति के प्रकाश में एक का पाप सभी का पाप है और एक की नेकी सबकी नेकी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। कोई भी व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से पृथक् नहीं, उनके स्वभाव में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है। हाँ, यदि अन्तर है तो सिर्फ़ दशाओं का। यदि कोई व्यक्ति यह सोचता है कि वह अपने उन्नत और पवित्र जीवन के कारण दूसरों से महान् और अलग है, तो यह उसकी ग़लती है। वह अँधेरे में पड़ा हुआ है। मनुष्यता एक है। सहानुभूति के मन्दिर में धर्मात्मा और पापी परस्पर मिलते हैं, और एक हो जाते हैं।

हजरत ईसा के सम्बन्ध में कहा जाता है कि उसने सारे संसार के पापों का बोझ अपने ऊपर ले लिया था, जिसका अर्थ यह है कि उसने अपने-आपको पापियों से पृथक् नहीं समझा, वरन् अपने-आपको उन जैसा ही समझा। इस बात का सबूत उसके जीवन से मिलता है। उसने बड़े-बड़े पापियों को भी, जिन्हें अन्य मनुष्य बेहद घृणा की दृष्टि से देखते थे और जिनकी छाया से भी दूर भागते थे, अपने सीने से लगाया और उनके साथ सच्ची सहानुभूति दिखाई।

सहानुभूति की सबसे अधिक आवश्यकता किसको है? धर्मात्मा को नहीं, ज्ञानी और बुद्धिमान को नहीं, परिपक्व मस्तिष्क को नहीं, वरन् एक पापी को है, मूढ़ को है और अल्प बुद्धि वाले को है, क्योंकि जो व्यक्ति जितनी अधिक गलतियाँ करता है उसे उतनी ही अधिक सहानुभूति की आवश्यकता है। ईसा मसीह ने कहा है–"मैं धर्मात्मा को नहीं अपितु पापियों को मार्ग दिखाने के लिए आया हूँ।"

परहेज़ करने वालों को तुम्हारी सहानुभूति का आवश्यकता नहीं, वरन् उसका अधिकारी एक पापी है, जिसे उसकी अधिक आवश्यकता है। जो व्यक्ति एक समय से बुरे कामों के कारण आपत्तियों और विपत्तियों का बोझा इकट्ठा करता रहा है, वास्तव में वही सहानुभति का पात्र है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक पापी दूसरे पापी को बुरा बताता और अपराधी ठहराता है, उससे घृणा करता है, यद्यपि वह स्वयं भी एक या दूसरे पापों में फँसा हुआ है। सभी प्रकार के पापों का आधार नासमझी है, किन्तु सहानुभूति न रखना और एक-दूसरे को बुरा बताना भी तो नासमझी ही है। जब तक मनुष्य पापों में फँसा रहता है, तब तक वह अपने जैसे दूसरे पापियों को कोसता और भला-बुरा कहता है। जो व्यक्ति जितना पापी होता है वह उतने ही ज़ोर के साथ दूसरों को बुरा बताता है, किन्तु जब मनुष्य को अपने पापों का ज्ञान होना आरम्भ होता है तो वह पवित्रता और महानता के उज्ज्वल प्रकाश में आने लगता है और यह प्रकाश पाकर वह दूसरों को भला-बुरा कहना छोड़ देता है, उनके साथ सहानुभूति दिखाना आरम्भ कर देता है। किन्तु पापियों की यह व्यर्थ की तू-तू मैं-मैं, लड़ाई-झगड़े, दंगे-फसाद रहने आवश्यक हैं, क्योंकि प्रकृति के अटल नियम के अनुसार आवागमन का ढंग ही यह है। वह पापी, जो अपने पाप के कारण धिक्कार और लांछन का शिकार बन जाता है, यदि वह नम्रता और विनय से उस लांछन को स्वीकार करे तो वह शीघ्र ही बदी से निकलकर सही मार्ग पर आना आरम्भ कर देता है। इसी दशा में वह यह दृढ़ निश्चय कर लेता है कि भविष्य में वह कभी भी दूसरों को धिक्कार व लांछन नहीं देगा।

जो व्यक्ति वास्तव में महान् और नेक है, वह दूसरों पर दोषारोपण नहीं करता है। वह स्वार्थ और अंधी भावनाओं को छोडकर प्रेम और शान्ति के साथ जीवन व्यतीत करता है। वह हर प्रकार के पापों और उनसे उत्पन्न होने वाले दुःखों और आपदाओं को जानता है। वह सपनों और अज्ञान से जाग्रत होकर ज्ञान के प्रकाश को प्राप्त कर लेता है। वह स्वार्थ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को छोड़कर दूसरों को वैसा ही देखता है जैसी कि वह उनसे पवित्र सहानुभूति रखता है। यदि वे लोग उसकी बुराई करें या उसे बदनाम करें, तब भी वह अपनी सहानुभूति की छत्र-छाया उन पर डालता रहता है। वह यह खूब जानता है कि वे लोग अपनी नासमझी के कारण उससे घृणा करते हैं और उनके बुरे कामों का फल उन्हीं को भोगना पड़ेगा।

जिनसे तुम घृणा करते हो, अपने स्वार्थ और श्रेष्ठ ज्ञान के द्वारा उनसे प्रेम करना सीखो, उनसे सहानुभूति रखना सीखो। जो तुमसे घृणा करते हैं तुम उनकी बुराइयों की ओर ध्यान न दो वरन् अपने हृदय को टटोलो। कदाचित् तुम्हारे ही हृदय में कुछ अनुचित, उग्र तथा असमान विचार हों, जिनको याद करके और समझकर तुम स्वयं अपने-आपको धिक्कारोगे।

साधारणतया जिसको सहानुभूति कहते हैं वह वास्तव में सहानुभूति नहीं वरन् एक प्रकार का व्यक्तिगत झुकाव या प्रेम है। जो हमें प्रेम करते हैं उन्हें प्रेम करना मनुष्यता है, किन्तु उनको प्रेम करना, जो हमें प्रेम नहीं करते, सहानुभूति कहलाता है। सहानुभूति की आवश्यकता इस कारण है कि संसार में दुख और मुसीबत फैले हुए हैं। संसार में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं जिसे कभी-न-कभी दुख न हुआ हो। दुख को देखकर सहानुभूति उत्पन्न होती है। एक साल या एक आयु या एक ज़माने के दुख के द्वारा मनुष्य का हृदय नम्र अथवा पवित्र नहीं हो सकता, अपितु कई योनियों में दुख भोगकर और विभिन्न परिस्थितियों में कष्ट उठाकर इन्सान अपने अनुभव की माधुर्य-भरी फसल को काटता है और प्रेम तथा ज्ञान के पके हुए फल प्राप्त करता है। तब कहीं जाकर उसे समझ आती है और वह उसी समझ के द्वारा सहानुभूति करना सीखता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारे दुख और आपत्तियाँ नासमझी और प्राकृतिक नियम के विरुद्ध चलने से पैदा होती हैं। प्राकृतिक नियमों को बार-बार तोड़ने से बार-बार इसी प्रकार के दुखों को उठाना पड़ता है और दंड भुगतने पर हमें उस नियम का पता चलता है। तब हम उस नियम को तोड़ने से रुककर महानता की सीमा तक पहुँचते हैं। तभी सहानुभूति का पवित्र और सुन्दर फूल खिलता है।

सहानुभूति का दूसरा पहलू दया है। दुख और दर्द से कराहते हुए मनुष्य को सुख पहुँचाने और उसका दर्द दूर करने के लिये दया की आवश्यकता होती है। संसार को दयालुता के सर्वश्रेष्ठ गुण की अत्यन्त आवश्यकता है। दयालुता कमजोरों के लिए सांसारिक आपदाओं को हल्का कर देती है और शक्तिशालियों को शराफत सिखाती है। सख्ती, निर्दयता, दूषित प्रकृति, प्रतिशोध और क्रोध को दूर करने से दया बढ़ती है। जो व्यक्ति किसी पापी को पाप का फल भोगते देखकर अपने हृदय को कठोर बना लेता है और यह सोचता है तथा कहता है कि अच्छा हुआ, यह अपने पापों का दण्ड भुगत रहा है, ऐसा व्यक्ति न तो दया कर सकता है और न ही किसी के घाव पर दयालुता का मरहम लगा सकता है। मनुष्य जब किसी पर, भले ही वह मूर्ख प्राणी क्यों न हो, निर्दयता करता है या उसके साथ सहानुभूति नहीं रखता तो वह अपने हृदय को संकीर्ण बना लेता है। वह बाह्य प्रसन्नता से वंचित होकर दुख की ओर जा रहा है।

सहानुभूति का एक दूसरा पहलू यह भी है कि हम अपने से अधिक सफल व्यक्तियों की सफलता पर खुश हों और उनकी सफलताओं को अपनी सफलता समझें। वह व्यक्ति धन्य है जो ईर्ष्या और अभिमान से खाली है और जो उन लोगों के सौभाग्य और खुशहाली की खबरें सुनकर खश होता है, जो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे अपना शत्रु समझते हैं ।

अपने से कमज़ोर और बेबस जानवरों की रक्षा करना भी सहानुभूति का एक पहलू है। ऐसे मूक जानवरों की रक्षा के लिये बहुत गहरी सहानुभूति की आवश्यकता है। शक्ति की सिद्धि तो वास्तव में यह है कि कमज़ोर की रक्षा की जाय, न कि उन्हें नष्ट किया जाय। जीवन का उद्देश्य कमजोरों को लापरवाही के साथ नष्ट-भ्रष्ट करने से नहीं, वरन् उनकी रक्षा करने से प्राप्त होता है। सारा जीवन एक ही मार्ग में बँधा हुआ है।

छोटे-से-छोटा प्राणी बड़े-से-बड़े प्राणी से केवल शक्ति और ज्ञान के दृष्टिकोण से भिन्न है, वरना सभी प्राणी एक हैं। जब हम उन पर दया और उनकी रक्षा करते हैं, तो हमारा स्वर्गिक जीवन पनपता और हमारा आनन्द बढ़ जाता है। जब हम क्रूर हृदय से किसी को कष्ट पहुँचाते या किसी प्राणी को तबाह करते हैं, तो हमारा श्रेष्ठ जीवन भी धुँधला हो जाता है और हमारा आनन्द मुरझाकर मर जाता है। भले ही एक प्राणी दूसरे प्राणी का भोजन हो, किन्तु मनुष्य की मानवता केवल दया-भाव, प्रेम, सहानुभूति, पवित्रता और निःस्वार्थ-भावना से बढ़ती और उन्नति करती है।

दूसरों के साथ सहानुभूति करने से हम अपने साथ दूसरों की सहानुभूति को बढ़ाते हैं। क्रियाशील सहानुभूति कभी व्यर्थ नहीं जाती। छोटे-से-छोटा जानवर भी सहानुभूति के अलौकिक अनुभव से प्रभावित हो जाता है, क्योंकि सहानुभूति संसार की संयुक्त पुकार है जिसे सभी प्राणी समझते हैं।

इस प्रकार दूसरों के साथ सहानुभूति रखने से हमारे हृदय में सहानुभूति की मात्रा बढ़ती है, हमारा जीवन सफल हो जाता है। सहानुभूति का दान करने से आनन्द प्राप्त होता है

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सहानुभूति न रखने से हमारी प्रसन्नता नष्ट हो जाती है। मनुष्य जितनी अधिक सहानुभूति रखता है, उतना ही श्रेष्ठ जीवन और पूर्ण खुशी वह प्राप्त करता है। जब उसका हृदय इतना नम्र हो जाता है कि उसमें कोई कठोरता या तीखापन नहीं रह सकता, और उसके स्वाभाविक माधुर्य को कम नहीं कर सकता, ऐसी दशा में वह वास्तविक आनन्द को प्राप्त करता है और आध्यात्मिक शान्ति को पा लेता है।

सातवां पथ आरम्भ करने से पहले तुम अपने हृदय को हमदर्दी से भर लो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सातवाँ पथ

क्षमा

"यदि हमें उन मनुष्यों की तंग दशा, गरीबी और दुख का ज्ञान होता जो रात-दिन मुसीबतों से घिरे रहते हैं और जिनका अनुमान हम निर्दयता और संकुचित दृष्टिकोण से लगाते हैं तथा जिनके जीवन को हम गलतफहमी से ठेस पहुँचाते हैं, तो हम उनके घावों पर नमक छिड़कने की अपेक्षा अधिक नम्र शब्दों में और अधिक सहानुभूति के साथ शान्ति का मरहम लगाते। किन्तु दुख तो यह है कि हम दूसरों की दशा का ठीक अनुमान नहीं लगा सकते।"

"दया करना, बदला लेने की अपेक्षा बहुत अच्छा है।"–शेक्सपियर

दूसरों की ओर से पहुँचाये गए कष्टों को याद रखना आध्यात्मिक अन्धकार की ही एक श्रेणी है और बदला लेने के मनसूबे बाँधते रहना आत्महत्या है। क्षमा कर देने की भावना दिल में लाना और उसे क्रियान्वित करना आध्यात्मिक उन्नति तथा शान्ति व सुख का आरम्भ है। जो व्यक्ति दुर्व्यवहारों और बरतावों को याद करता रहता है उसके हृदय में शान्ति कहाँ? जो यह सोचता है कि अमुक व्यक्ति ने मेरे साथ दुर्व्यवहार किया था और मैं भी उससे बदला लेकर रहूँगा और उसे ऐसी चोट पहुँचाऊँगा कि वह भी याद रखेगा, ऐसे व्यक्ति के हृदय में धैर्य और शान्ति तो रह ही नहीं सकती। जिस हृदय में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिशोध की आग भड़कती रहती है. उसमें खुशी और सुख कहाँ ?

क्या कोई पक्षी उस वृक्ष की साख पर, जिसमें आग लगी हुई है, अपना घोंसला बनाकर और उसमें बैठकर गीत गा सकता है ? इसी प्रकार जिस हृदय में प्रतिशोध की आग भड़कती रहती हैं उसमें प्रसन्नता कैसे रह सकती है ? अब बताओ कि जहाँ पर ऐसी मूर्खता और मूढ़ता बसती हो, वहाँ पर बुद्धि और महानता के रहने के लिये स्थान कहाँ ?

प्रतिशोध लेना उसी व्यक्ति को भला मालूम पड़ता है जिसने क्षमा के आनन्द को प्राप्त नहीं किया। जब कोई व्यक्ति क्षमा के आनन्द का स्वाद चख लेता है तो उसके सामने प्रतिशोध का स्वाद उसे अत्यन्त कड़वा लगता है। जो मनुष्य बुरी भावनाओं के वशीभूत रहता है उसको प्रतिशोध लेने में आनन्द आता है, किन्तु जब क्रोधादि भावनाओं का बुरा विचार हृदय से दूर हो जाता है और क्षमा हृदय में आ जाती है, तो यह बात भली भाँति मालूम हो जाती है कि बदला लेने से केवल दुख ही होता है।

प्रतिशोध एक ऐसा विष है जो हृदय की कोमल भावनाओं को नष्ट कर देता है और आत्मा को विषाक्त बना देता है। यह एक ऐसा मानसिक रोग है जो हृदय की महत्वाकांक्षाओं को निर्बल बना डालता है। किसी भी बात का बुरा मानना एक ऐसा नैतिक रोग है जो नेकी और सहृदयता की हरी-भरी जड़ को खोखला बना देता है। ऐसे बरतावों से सभी को बचना चाहिये।

क्षमा न करना और प्रतिशोध लेने की इच्छा रखना दुख और कष्टों के आधार हैं। जो व्यक्ति इन बुराइयों से बचने की अपेक्षा उन्हें अपने हृदय में पालते रहते और बढ़ाते रहते हैं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे बहुत से सुखों और आनन्दों से वंचित रह जाते हैं। वे आध्यात्मिक प्रकाश को प्राप्त करने में असमर्थ रहते हैं। हृदय को पत्थर की तरह कठोर बना लेने से केवल दुख ही प्राप्त होता है और मनुष्य प्रकाश, शान्ति तथा चैन के पवित्र स्पर्श से वंचित रहता है। सहृदयता से ही सच्ची प्रसन्नता प्राप्त होती है, इसीमें मनुष्य वास्तविक प्रकाश और शान्ति प्राप्त करता है। कुछ लोगों के लिये यह समझना कठिन है कि कठोर-हृदय और क्षमा न कर सकने वाले मनुष्य सबसे अधिक कष्ट भोगते हैं। किन्तु यह बात बिल्कुल सत्य है, क्योंकि ऐसे मनुष्य न केवल दूसरों के हृदय में पनपी हुई प्रतिशोध की भावनाओं को अपनी ओर खींच लेते हैं, वरन् वे स्वयं अपनी कठोर-हृदयता के कारण भी दिन-रात दुख भोगते रहते हैं।

जब कोई व्यक्ति अपने हृदय को दूसरों की ओर से सख्त बना लेता है, तो वह पांच प्रकार के दुख उठाता है—

१. दूसरों के प्रेम से वंचित रहने का दुख।
२. दूसरों से मेल-जोल न कर सकने का दुख।
३. अपने हृदय को चैन और शान्ति न दे सकने का दुख।
४. प्रतिष्ठा और यश प्राप्त न होने का दुख।
५. दूसरों के द्वारा पहुँचाये गए कष्टों का दुख।

और यही पाँच दुख उस व्यक्ति को भी होते हैं जो क्षमा करना नहीं जानता। इसी प्रकार उस व्यक्ति को पाँच प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं जो क्षमा करना जानता है—

१. दूसरों से प्रेम करने का सुख।
२. दूसरों से मेल-जोल रखने का सुख।
३. शान्त और उल्लास-भरे हृदय का सुख।
४. भावनाओं को दबाने और आपदाओं पर विजय पाने का सुख।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५. दूसरों की नेक इच्छाओं और मेहरबानी का सुख।

हजारों व्यक्ति क्षमा न कर सकने के कारण कष्ट उठा रहे हैं। जब वे इस आदत को दूर करके उस पर विजय प्राप्त कर लेंगे, तो उन्हें ज्ञात होगा कि हम कैसे निर्दयी और पाषाण हृदय के दास बने हुए थे। जो व्यक्ति बदला लेने के बुरे स्वभाव को छोड़कर क्षमा करने की अच्छी आदत को स्वीकार करेगा, उसको यह पता लग जायगा कि उसकी पहली आदत कितनी कष्टदायक और दूसरी आदत कितनी सुख और शान्ति देने वाली है।

देखो तो सही, दुनिया में कितना संघर्ष, लड़ाई-झगड़े, शत्रुता और अव्यवस्था फैली हुई है। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से, एक प्रतिवेशी दूसरे प्रतिवेशी से, एक जाति दूसरी जाति से, एक धर्म वाले दूसरे धर्म वालों से लगातार लड़ते-झगड़ते रहते हैं। वे सब-के-सब ही एक-दूसरे से प्रतिशोध लेने के मन्तव्यों में लगे रहते हैं, एक-दूसरे को हानि पहुँचाते हैं। इन सब बातों से कितने ही हृदय टूट जाते हैं, कितने आँसू बहाये जाते हैं। इस चक्कर में एक मित्र दूसरे मित्र से अलग हो जाता है, भाई भाई का शत्रु बन जाता है। इन सारे बाहरी लड़ाई-झगड़ों से आपत्तियाँ, निराशाएँ, दुख, कष्ट, रंज-गम ही नहीं, वरन् रक्तपात तक की नौबत आ जाती है। दैनिक पूर्ण मनोयोग से संसार की इस दशा को देखो। जो व्यक्ति इस भयानक दृश्य को देखकर जाग उठता है, वह फिर क्षमा न करने और दूसरों की बातों और कामों से धीरे-धीरे लापरवाह हो जाने का शिकार नहीं बनता।

तमाम प्राणियों के साथ भलाई करो। निर्दयता को दिल से दूर कर दो, लोभ, लालच और गुस्से को छोड़ दो, ताकि तुम्हारा जीवन शीतल-मंद-समीर की भांति हो जाय।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब कोई व्यक्ति प्रतिशोध की भावनाओं को छोड़कर क्षमा करना सीख लेता है, तो मानो वह अन्धकार से निकलकर प्रकाश में आ जाता है। किसी व्यक्ति को क्षमा न कर पाना पूर्ण अन्धकार है। कोई भी बुद्धिमान और महान् व्यक्ति इससे मुँह नहीं मोड़ सकता, किन्तु कठिनाई यह है कि जब तक मनुष्य बदला लेने की बुरी भावना को नहीं छोड़ता और नेक रवैया नहीं अपनाता, तब तक उसे चारों ओर अन्धकार-ही-अन्धकार दृष्टिगोचर होता है। आज का मनुष्य अपने काले कारनामों और पापमय इच्छाओं के कारण अन्धा होकर धोखा खा रहा है। क्षमा न करने की बुरी आदत को छोड़ देने का अर्थ यह है कि मनुष्य अपनी आपदाओं पर विजय पा लेता है अपनी बुरी भावनाओं को परास्त कर देता है और अपने मान तथा बड़ाई के विचारों को छोड़ देता है। अब वह यह विचार नहीं करता कि मैं ही चौधरी हूँ। अब उस व्यक्ति में श्रेष्ठ जीवन, महानता, प्रेम और ज्ञान, जो पहले बुरी भावनाओं के अँधेरे में छिपे पड़े थे, अपने पूरे प्रकाश और सौंदर्य के साथ प्रत्यक्ष हो गये हैं।

छोटे-छोटे उलाहने, ताने और नुक्ताचीनी आदि यद्यपि गहरी घृणा तथा प्रतिशोध के कारण तुच्छ-से लगते हैं, किन्तु ये ऐब ही चाल-चलन को निकृष्ट और आत्मा को अपवित्र बना देते हैं। ये दोष अहम् और स्वयं को बड़ा समझ लेने से पैदा होते हैं, तथा आत्म-प्रदर्शन की धरती पर अनुकूलता पाकर हरे-भरे होते जाते हैं। जो व्यक्ति आत्म-प्रदर्शन से अन्धा होकर धोखे में आ जाता है, उसे दूसरों की बातचीत और कामों में कोई-न-कोई ऐसा कारण दिखाई देता ही रहता है जिससे वह शोकाकुल होता रहे। उसमें जितना ही अधिक आत्म-प्रदर्शन और आत्म-श्लाघा होगी, वह उतना ही दूसरों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कहने-सुनने का बुरा मानता और दुखी होता रहेगा। छोटी-छोटी बातों के लिये बार-बार शोकाकुल होना और बुरा मानना घृणा की भावना को बढ़ाता और अधिक-से-अधिक अन्धकार, मुसीबत और पथभ्रष्टता की ओर ले जाता है।

तुम किसीकी बात का बुरा न मानो और शोकाकुल न हो, अर्थात् घमंड और अहंकार को छोड़ दो और दूसरों के हृदय को कष्ट न पहुँचाओ। उनकी भावनाओं को ठेस न लगाओ, दया करना, क्षमा करना और दूसरों का ध्यान रखना सीखो।

अहंकार और घमंड को पूर्ण रूप से छोड़ देना बड़ा कठिन कार्य है, किन्तु ऐसा करने से आनन्द अवश्य प्राप्त होता है। बुरा न मानने और शोकाकुल न होने का शनैः-शनैः अभ्यास करने और अपने विचारों तथा कार्यों पर दृष्टि रखने, उन्हें समझने व पवित्र बनाने से यह काम पूरा हो सकता है। तुम जैसे-जैसे आत्म-प्रशंसा और आत्म-प्रदर्शन पर विजय पाते जाओगे, तो उतनी ही क्षमा की भावना तुम्हारे हृदय में बढ़ती जायगी।

स्वयं बुरा न मानना और दूसरों का हृदय न दुखाना ये दोनों बातें साथ-साथ चलती हैं। जब एक व्यक्ति दूसरों की बातों और कार्यों से शोकाकुल नहीं होता और बुरा नहीं मानता, तो यह प्रत्यक्ष है कि वह उन पर दया करता है और अपनी अपेक्षा दूसरों का अधिक खयाल रखता है। ऐसा व्यक्ति जो कुछ कहता या करता है दूसरे उससे शोकाकुल नहीं होते, प्रत्युत उनके हृदय में प्रेम और सहानुभूति के उद्गार पैदा होते हैं। फिर उसे न दूसरों से डर लगता है और न भय, क्योंकि जो व्यक्ति दूसरों को हानि नहीं पहुँचाता उसे डर किस बात का? किन्तु क्षमा न करने वाला व्यक्ति, जो ईंट का जवाब पत्थर से देता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है और एक के स्थान पर दो सुनाता है तथा दूसरों का ध्यान नहीं रखता (क्योंकि उसे तो अपनी ही पड़ी रहती है), तो वह धीरे-धीरे अपने विरोधियों की संख्या बढ़ाता जाता है। उसे सर्वदा ही यह भय लगा रहता है कि दूसरे उसे हानि पहुँचाने का प्रयत्न कर रहे हैं, क्योंकि वह खुद भी ऐसा ही कर रहा है। जो व्यक्ति दूसरों को हानि पहुँचाने की ताक में रहता है उसे उनसे भय लगा रहना भी आवश्यक है।

"घृणा को घृणा से नहीं जीता जा सकता वरन् प्रेम से जीता जा सकता है," यह एक उक्ति है जिसके अनुसार घृणा को प्रेम और क्षमा से जीता जा सकता है। प्रतिशोध लेने की अपेक्षा क्षमा करना अधिक श्रेष्ठ, मधुर और प्रभावशाली है। क्षमाशीलता ही से ऐसे प्रेम का, जो पुरस्कार नहीं चाहता, कोई इनाम नहीं चाहता, श्रीगणेश होता है। जो व्यक्ति इसका अभ्यास करता है, वह अपने-आपको प्रेम के रंग में रंग लेता है और तब वह शनैः-शनैः उस आनन्द तक पहुँच जाता है जहाँ पहुँचकर आत्म-प्रदर्शन, अहम् अभिमान और प्रतिशोध की भावना दूर हो जाती है, शान्ति मिलती है और प्रत्येक घड़ी दूसरों की भलाई का विचार दिल में रहने लगता है। फिर ऐसी शान्त दशा प्राप्त होने पर क्षमाशीलता की आवश्यकता नहीं रहती, क्योंकि जो व्यक्ति आनन्द की दशा में पहुँच जाता है वह दूसरों की गलती या बुराई को देखकर शोकाकुल नहीं होता, और न ही बुरा मानता है, वरन् वह उनकी नासमझी और अज्ञानता पर तरस खाता है।

क्षमा की तो उसी समय तक आवश्यकता होती है जब तक स्वभाव में बुरा मानने या शोकाकुल होने अथवा बदला लेने की भावनाएँ रहती हैं। सबसे समान प्रेम करना ही सर्वश्रेष्ठ उद्देश्य, सर्वश्रेष्ठ हृदय और सर्वश्रेष्ठ दशा है। प्रेम के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्दिर में प्रविष्ट होने के लिये क्षमाशीलता भी एक द्वार है।

अब तुम्हारे सामने आनन्द का आठवाँ पथ खुलता है। किन्तु इस मार्ग पर चलने से पहले अपने हृदय में भली भाँति इस तथ्य को जमा लो कि क्षमाशीलता प्रतिशोध से श्रेष्ठ है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आठवाँ पथ

बुराई न देखना

"यह कठोर संसार भी प्रेम से पिघल जाता है। प्रेम की आँखों पर यदि पट्टी भी बाँध दी जाय तो भी वह गलती नहीं करता। वह अपना चौंधिया देने वाला प्रकाश ऊपर-नीचे चारों ओर बुरे और भले सब प्रकार के मनुष्यों पर डालता रहता है और अपने विलक्षण उपायों से नेकी और बदी में भी भेद करा देता है।" —इमर्स

"यदि तू बदी का खयाल करता है तो याद रख, तेरे कामों से भी बदी की झलक आयेगी, और यदि तेरे विचार नेक होंगे तो तेरे काम भी नेकी और भलाई का तत्व लिये हुए होंगे।" —चीनी महात्मा

क्षमाशीलता का पूरा अभ्यास हो जाने और उसके एक सीमा तक पहुँच जाने के पश्चात् बुराई-भलाई की वास्तविकता स्वयं ही खुल जाती है। तब मनुष्य की समझ में आ जाता है कि विचार नित्य किस प्रकार पैदा होते हैं, क्योंकर बढ़ते-पलते तथा कार्य-रूप में परिणत होते हैं तथा क्योंकर सामने आते हैं। जब मनुष्य इस दशा में पहुँच जाता है तो उसके हृदय में एक प्रकाश-सा भर जाता है, जिससे नेक, पवित्र और श्रेष्ठ जीवन का श्रीगणेश होता है।

क्योंकि अब वह समझ लेता है कि दूसरों के व्यवहार से न तो बुरा मानना चाहिये, न शोकाकुल होना चाहिये और न ही क्रोध करना चाहिये, भले ही दूसरों का व्यवहार या कार्य कैसा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही हो। अब तक वह मूढ़ता, नासमझी और मूर्खता के कारण ऐसा करता रहा है। यह उसकी सख्त गलती थी। यहाँ पहुँचकर वह अपने हृदय से इस प्रकार के प्रश्न करता है कि बार-बार क्यों बदला लिया जाय ? बार-बार क्यों क्षमा किया जाय ? दूसरों पर इतना क्रोध ही क्यों किया जाय जिसके लिये अंत में पछताना पड़े ?

क्या आध्यात्मिक उन्नति का अर्थ यह नहीं है कि मैंने अपने क्रोध को रोक लिया है और बदला लेने के विचार को सर्वथा त्याग दिया है ? यदि क्रोध करना और बदला लेना आवश्यक है, तो फिर इसके लिए पश्चात्ताप क्यों ?...इन्हें छोड़ने की क्या आवश्यकता ?

कटु स्वभाव को छोड़ दो, और यदि क्षमा करना शीतल, मधुर तथा मनोहारी कार्य है, तो फिर क्रोध को अपने पास तक न फटकने दो। शोकाकुल न होना तथा बदला न लेना और भी अधिक सुन्दर, मधुर एवं सराहनीय कार्य हैं।

इस प्रकार मनुष्य सर्वदा ही शान्ति और प्रसन्नता-भरा जीवन व्यतीत कर सकता है। वह प्रतिशोध की भावनाओं को तिलांजलि दे देता है। यदि किसी व्यक्ति ने मेरे साथ बुराई की है तो क्या मेरा उससे घृणा करना बुरा नहीं ? क्या एक त्रुटि दूसरी त्रुटि को ठीक कर सकती है ? क्या किसी व्यक्ति ने मेरे साथ लड़ाई करके वास्तव में मेरी कुछ हानि की है ?...क्या उसके आचरण से मुझे हानि पहुँचती है ?...सही बात तो यह है कि मेरी ओर से की गई बुराई से दूसरों की तो कुछ भी हानि नहीं होती, अपितु मेरी अपनी ही हानि हो जाती है। ऐसी दशा में भला बताइये मैं क्रोध ही क्यों करूँ ? बदला लेने का विचार ही हृदय में क्यों आने दूँ ? तथा अपने हृदय में दूसरों के प्रति विरोधी भावनाओं को क्यों पनपने दूँ ?...क्या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका कारण यह नहीं है कि मुझमें दंभ है, आत्म-प्रदर्शन की भावना है, स्वार्थ है और आत्म-श्लाघा है ? मेरी अपनी ही अन्धी अमानवीय भावनाएँ भड़ककर मेरे श्रेष्ठ स्वभाव को दबा देती हैं।

अब तो मैंने भलीभाँति देख लिया है कि दंभ, क्रोध और अपने ही निकृष्ट विचारों के कारण मैं दूसरों के व्यवहार से भड़क उठता हूँ। ऐसी दशा में क्या यह उचित नहीं कि मैं अपने ही अन्दर के पुरुष को देखूँ और सोचूँ कि गलती कहाँ पर है, बजाय इसके कि मैं दूसरों की गलतियाँ देखता फिरूँ। जब मुझे पता चल गया कि दंभ, क्रोध और अमानवीय विचार ही मुझे भड़का देते हैं और उनको परास्त कर देने के पश्चात् दूसरों का व्यवहार मुझे संतप्त न कर सकेगा, तो फिर मैं सर्वदा ही शान्ति से रह सकूँगा।

अपने हृदय में इस प्रकार का प्रश्न उठने और उसका निर्णय करने से मनुष्य के विचार नम्र तथा ईर्ष्या और क्रोध-रहित बनते हैं; उसकी वे अमानवीय भावनाएँ कम तथा नादानी एवं मूढ़ता दूर होती हैं, जिनके कारण उसके हृदय में ग्रम और क्रोध पैदा होते हैं, एवं अन्त में वह उस आनन्द की दशा को प्राप्त कर लेता है जिसमें वह दूसरे मनुष्यों में किसी भी अवगुण को नहीं देख पाता तथा सबके हित की ही बात सोचता है।

सौन्दर्य के पीछे विष व्याप्त है। इस प्रकार जब मनुष्य को यह पता लग जाता है कि बुरे कामों का परिणाम क्या और कैसा होता है, तो फिर वह उन्हें भूलकर भी नहीं करता। पहले बुरे कामों के करने में उसे जो स्वाद आता था अब वह उसे काट खाने को दौड़ता है। उनका आकर्षण उसके लिये समाप्त हो जाता है।...अब वह उनकी वास्तविकता से अपरिचित नहीं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहता और उन्हें उनके वास्तविक रूप में देख लेता है।

एक व्यापारी नवयुवक से मेरी जान-पहचान थी। वह एक धार्मिक संस्था का सदस्य था और उसका प्रचार भी किया करता था। उसने मुझसे एक दिन जिक्र किया कि व्यापार में झूठ बोलना तथा धोखा देना आवश्यक होता है, क्योंकि उसके बिना व्यापार चल ही नहीं सकता। "मैं भली भांति जानता हूं कि झूठ बोलना पाप है, किन्तु जब तक व्यापार करना है, मुझे झूठ बोलना ही पड़ेगा।"

जब मैंने उससे पूछताछ की कि तुमने कभी सचाई तथा ईमानदारी से, जोकि व्यापार करने का सही मार्ग है, काम लिया है तो उसने साफ शब्दों में उत्तर दिया, "झूठ बोलने और धोखा देने के अतिरिक्त व्यापार करने का और दूसरा कोई उपाय ही नहीं है।" मानों उसने सचाई और ईमानदारी को कभी आज़माया ही नहीं था।

अब बताइये, क्या उस नवयुवक को पता था कि झूठ बोलना बुरा है?...बिल्कुल नहीं। उसने केवल सदुपदेश के तौर पर सुना हुआ था कि झूठ बोलना पाप है, किन्तु वास्तव में वह उसके सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानता था। इसके अतिरिक्त उसे तो यह विश्वास था कि झूठ बोलने से लाभ होता है, उन्नति होती है और आनन्द की प्राप्ति होती है। इसके विपरीत सत्यनिष्ठा से हानि होती है, गरीबी आती है और दुःख मिलता है।

इन सारी बातों का मतलब यह है कि वह अपने हृदय की गहराइयों में सच को हानिप्रद तथा झूठ को लाभदायक समझता है। वह झूठ बोलने की इस वास्तविकता से पूर्णतया अनभिज्ञ है कि झूठ मुंह से निकलते ही मनुष्य के चरित्र पर कलंक बनकर लग जाता है, आत्म-स्वाभिमान नष्ट हो जाता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, नेकनामी को बट्टा लगता है, जान-पहचान और घनिष्ठता कम हो जाती है और अन्त में उसके सुख तथा आराम भी जाते रहते हैं।

झूठ बोलने से मनुष्य का विश्वास घट जाता है, और जहाँ विश्वास कम हुआ वहाँ व्यापार में लाभ कहाँ ? लाभ न होने से आर्थिक हानि अवश्यम्भावी है।

ईमानदार व्यक्ति जब दूसरों के सुख का ध्यान रखता है, तो वह अपने लाभ की चिन्ता न करके तथा बार-बार हानि सहन करके भी ईमानदारी पर दृढ़ रहता है। तभी वह इस सत्यता को पहचान पाता है कि श्रेष्ठ चरित्र ही आनन्द प्रदान करने वाला पहलू है। उसे यह भी पता चल जाता है कि अब तक वह दूसरों को धोखा देने के स्थान पर अपने-आपको धोखा दे रहा था और फिर वह प्रेम तथा शान्ति से रहना सीख लेता है।...किन्तु इससे यह न समझ लेना चाहिये कि ऐसा व्यक्ति बुराई, मूढ़ता अथवा मूर्खता को छोड़ देता है, दुख, कष्ट एवं आपत्तियों को नहीं देख सकता, या नेकी और बदी तथा झूठ और सच आदि को पहचानने के योग्य नहीं रहता है। वह तो केवल क्रोध तथा कलह को छोड़ देने के कारण ज्ञान के उज्ज्वल प्रकाश में उनके वास्तविक सौन्दर्य को देख पाता है, जिसके कारण उसे दूसरों में ऐसी कोई बुराई नहीं दीख पड़ती जो उसे हानि पहुँचा सके, जिसका उसे सामना करना पड़े, जिसको कुचलने के लिये उसे प्रयत्न करना पड़े, अथवा जिससे उसको अपनी रक्षा करनी पड़े। अब तो वह बुराई को इतना समर्थ ही नहीं समझता कि उससे घृणा की जाय, उसका बदला लिया जाय या उससे भय खाया जाय। इसके स्थान पर अब तो वह बुराई करने वाले को दया और सहानुभूति के योग्य समझने लग जाता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेक्सपियर का कहना है—"मूढ़ता से बढ़कर कोई अन्धकार नहीं।"...और सचमुच ही में मूढ़ता ही सारी बुराइयों की जड़ है। अतः बुराई मनुष्य के हृदय का गहरा अज्ञान है। इसे दूर करने से हृदय में अलौकिक ज्ञान का प्रकाश भर जाता है।

बुराई भलाई का उलटा है। प्रकाश न होने ही का नाम अँधेरा है। प्रकाश स्वीकारात्मक है तो अँधेरा नकारात्मक। प्रकाश का महत्व है, जबकि अन्धकार का कोई भी महत्व नहीं। ऐसी दशा में 'नकार' में क्या रखा है, जिससे मनुष्य बदला ले या जिस पर क्रोध करे। जब सारे संसार पर रात का अँधेरा छा जाता है, तो ऐसा कौन मूर्ख है जो इस अँधेरे को गालियाँ देता हो। इसी प्रकार समझदार मनुष्य दूसरे के हृदय के अज्ञान को, जो बुराई और पापों के रूप में सामने आता है, बुरा नहीं कहता, वरन् आत्मीयता के साथ उसे बता देता है कि ज्ञान का प्रकाश किस दिशा में है।

वह मूर्खता, जिसे बुराई के नाम से पुकारा जाता है या जिससे बुराई पैदा होती है, दो प्रकार की होती है।

एक बुराई वह है जो भले-बुरे को पहचाने बिना ही की जाती है और जिस पर करने वाले का अपना कोई अधिकार नहीं है, वश नहीं है और जो अनजाने में हो जाती है। दूसरी बुराई वह है जिसको करने वाला जानता है कि मैं इस बुराई को कर रहा हूँ और इस बुराई का करना अनुचित है।... वह ऐसी बुराई को जान-बूझकर करता है।

बुराई भले ही जानकर की जाय अथवा अनजाने में, दोनों ही के किये जाने का कारण मूढ़ता है। कहने का अर्थ यह है कि उसका करने वाला बुराई की सच्ची वास्तविकता से अनभिज्ञ है और वह उस बुराई से पैदा होने वाले कष्टप्रद परिणामों से भी अनजान है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य समझता है कि उसे अमुक काम नहीं करना चाहिये, किन्तु फिर भी वह उसे करता है । इसका क्या कारण है? यदि वह यह जानता है कि उस काम का करना गलत है और फिर भी वह उसे करता है, तो उसमें समझ है ही कहाँ ?

इतने पर भी मनुष्य जान-बूझकर भी बुराई करता है। इन सारी बातों का कारण यह है कि उसे ज्ञान तो होता है, किन्तु होता वह अपूर्ण (कुछ तो दूसरों से सुना हुआ और कुछ अपने अपरिपक्व विचारों से बना हुआ) ही है। इस प्रकार जो कुछ भी वह करता है उसके विषय में पूर्ण रूप से वह भी कुछ नहीं जानता है। वह यह नहीं जानता कि मैं क्या कर रहा हूँ। वह तो केवल इतना जानता है कि ऐसा करने से उसे तुरन्त ही कोई प्रसन्नता प्राप्त हो जायगी। अतः अपनी भावनाओं के विरोध करने पर भी वह उसी की ओर भागता रहता है। उसे इस बात का विश्वास होता है कि वह क्षणिक प्रसन्नता अच्छी और उपभोग करने योग्य है। अतः वह उसको प्राप्त करता है । वह यह नहीं जानता कि प्रसन्नता और कष्ट दोनों एक ही वस्तु हैं, और एक को दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता।""वह केवल अज्ञानवश ही यह समझता है कि उनमें से एक को दूसरे के बिना ही प्राप्त किया जा सकता है। वह यह भी नहीं सोचता है कि उसका कष्ट उसकी अपनी गलतियों का परिणाम है। वह तो केवल यही सोचता है कि दूसरे मनुष्य ही उसके कष्टों का कारण हैं, अथवा उसके भाग्य में ऐसा ही लिखा था, अतः अपने किये हुए को देखने अथवा उस पर सोचने की आवश्यकता ही नहीं है

ऐसा व्यक्ति केवल प्रसन्नता ही की खोज में रहता है और उन कामों को करता रहता है जिनसे उसे प्रसन्नता मिलती है। उन कामों के उसे क्या-क्या बुरे फल भोगने पड़ेंगे इस सत्य से वह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिल्कुल अपरिचित रहता है।

एक बार ऐसे ही एक व्यक्ति ने, जो एक बुरी आदत का शिकार था, मुझसे कहा—"मैं जानता हूँ कि यह बुरी आदत है और इससे मुझे लाभ की अपेक्षा हानि अधिक होती है।" मैंने कहा—"जब तुम्हें पता है कि जो काम तुम कर रहे हो वह खराब तथा हानिदायक है, तो फिर तुम उसे करते क्यों हो?"

वे सज्जन बोले—"इसके करने में मुझे आनन्द आता है, अतः मैं उसे पसन्द करता हूँ।"

वे सज्जन वास्तव में यह नहीं जानते थे कि उनकी वह आदत बुरी है। उन्होंने केवल यह सुना हुआ था कि वह आदत बुरी है और इसी के द्वारा उन्होंने सोचा था कि वास्तव में वह आदत ख़राब ही है, किन्तु उन्हें विश्वास यह था कि वह आदत अच्छी है और उससे उन्हें आनन्द प्राप्त होता है, अतः वे उसे छोड़ना ही नहीं चाहते थे।...वरना यदि कोई व्यक्ति अपने अनुभवों से यह पता कर ले कि अमुक काम ख़राब है, और जब कभी भी वह उस काम को करता है उसके शरीर और मन दोनों ही को उस काम से हानि पहुँचती है, तो वह उसे छोड़ने को तैयार हो ही जाता है।

जब कोई व्यक्ति इस प्रकार के काम के प्रत्येक पहलू को भली भाँति जान लेता है, तो फिर वह उसे हरगिज़ नहीं करता है, यहाँ तक कि उसे करने की उसे कभी इच्छा तक नहीं होती है। उसे करने में उसे पहले जो आनन्द मिलता था अब उसे कष्टप्रद प्रतीत होने लगता है। कोई भी व्यक्ति साँप की रंग-बिरंगी सुन्दरता पर रीझकर उसे अपनी जेब में नहीं रखता, क्योंकि वह भली भाँति जानता है कि साँप अन्धकार तथा मूढ़ता में पड़ा हुआ था।

उपरोक्त दोनों उदाहरण आपके सामने हैं। ये उदाहरण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक स्थान पर देखने को मिलते हैं। सत्यता के पुजारियों पर यह सत्यता भली भाँति प्रत्यक्ष कर दी गई है कि समस्त बुराइयों और पापों की जड़ मूढ़ता है। अतः बुराई करने वालों के साथ घृणा का नहीं वरन् प्रेम का व्यवहार करना चाहिये।

जो दशा झूठ बोलने की है, वही दशा सारी बुरी आदतों और पापों की है। कहने का अर्थ यह है कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, घृणा, ईर्ष्या, प्रतिशोध, स्वार्थ आदि का कारण केवल मूढ़ता ही है, जिसका अर्थ होता है—हृदय में ज्ञान का न होना तथा उस पर आध्यात्मिक अज्ञान का पर्दा पड़ा रहना।

जब मनुष्य अपने हृदय के अज्ञान को दूर कर देता है, बुराई की वास्तविकता को समझ जाता है और केवल आस्था के स्थान पर पूर्ण अनुभव प्राप्त कर लेता है, तब वह बुराई करने वाले को घृणा की दृष्टि से नहीं देखता और न ही उसका विरोध करता है। इन सब बातों के विपरीत उसे वह दया की दृष्टि से देखता है।

अब हम बुराई के एक अन्य पहलू पर ग़ौर करते हैं—प्रत्येक मनुष्य स्वतन्त्र है। प्रत्येक मनुष्य अपने-अपने काम में पूर्ण अधिकार रखने का जन्मसिद्ध अधिकारी होता है। मनुष्य के इस अधिकार को कोई भी नहीं छीन सकता है। दूसरे का दोष देखने के साथ-साथ ही मनुष्य की यह भी अटूट अभिलाषा होती है कि वह दूसरों की बुराई, गलती और दोषों को किसी-न-किसी प्रकार दूर कर दे, भले ही वे जबरदस्ती ही क्यों न किये जायँ। मनुष्य की यह स्वाभाविक विशेषता है कि वह दूसरों को भी अपनी-सी विचारधारा में मिला लेना चाहता है।

सामान्यतया प्रत्येक मनुष्य इसी गलती में चक्कर खा रहा है कि जो कुछ भी वह सोचता है, या श्रद्धा अथवा विश्वास रखता है, जैसा वह काम करता है, वही सही और उचित है, शेष समस्त

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार गलती पर है। अतः वह दूसरों से, जो उसके विरुद्ध सोचते हैं और काम करते हैं, घृणा करता है, उन्हें हीनता की दृष्टि से देखता है और उन पर आक्रमण करता है। इसी गलत धारणा के कारण विभिन्न धर्मावलम्बियों में व्यर्थ के झगड़े हुआ करते हैं। वे नास्तिकों को बुरा समझते हैं। उनके विचार से वे लोग शैतान के अनुगामी होते हैं और उसीके अनुरूप लोग सोचते हैं कि लम्पट मनुष्य अपने व्यभिचारों तथा गलत विश्वासों के कारण समस्त मानव-जाति को हानि पहुँचा रहे हैं। किन्तु सच तो यह है कि न लम्पट बुरे हैं, न अनीश्वरवादी। न मुसलमान बुरे हैं, न हिन्दू, वरन् बुरे हैं प्रत्येक के अपने उपाय, जिनको वे सही समझते हैं और जिन पर वे चल रहे हैं।

तनिक ठण्डे हृदय से बैठकर सोचो तो सही कि समस्त संसार के विभिन्न धर्म वाले पहले भी एक-दूसरे के विरुद्ध लडाई-झगड़ा किया करते थे, और अब भी एक धर्म वाला दूसरे धर्म वाले को बुरा तथा गलत समझता है, अपने-आपको नेक और अच्छा समझता है। क्यों ?......इस बात पर ध्यान-पूर्वक मनन करने से तुम समझ जाओगे कि समस्त बुराइयाँ और मूढ़ताएँ आत्मिक अज्ञान से ही पैदा होती हैं।

ऐसा सोचने से मनुष्य के हृदय में दया, विनम्रता, विशालता और महानता की वृद्धि हो सकती है।

जो व्यक्ति वास्तव में नेक एवं महान् होता है वह किसी को भी बुरा नहीं समझता है। इसके विपरीत वह सभी को अच्छा समझता है। वह इस मूर्खतापूर्ण विचार को छोड़ देता है कि दूसरे भी उसी की तरह सोचें और काम करें। वह समझता है कि लोगों के स्वभाव भिन्न होते हैं और सब व्यक्ति आध्यात्मिक विकास के अर्थों में भिन्न-भिन्न हैं। इसी विकास के अनुसार वह काम करता है और यही कारण होता है कि वह ईर्ष्या, घृणा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वेष, आत्म-प्रशंसा, स्वार्थ और कलह को छोड़कर समझदार बन जाता है तथा जान लेता है कि पवित्रता, प्रेम, दया, नम्रता, सन्तोष, विनम्रता तथा निःस्वार्थ-भावना प्रकाश के, एवं क्रोध आदि अन्धकार तथा मूढ़ता के चिन्ह हैं।

मनुष्य भले ही चाहे अन्धकार में भटकते रहें अथवा प्रकाश में, हैं वे सभी एक। प्रत्येक मनुष्य वही काम कर रहा है, जो वह आवश्यक समझता है। उसे वह अपनी बुद्धि और दूर-दर्शिता के आधार पर कर रहा है और इस बात को बुद्धिमानी समझता है। यही कारण है कि वह दूसरों को भला-बुरा नहीं कहता, और न ही उन्हें दोषी ठहराता है।

प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वभाव के अनुसार तथा अपने अच्छे-बुरे ज्ञान के अनुसार काम करता है और उनके परिणामों का स्वाद लेता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार सोचने तथा काम करने का अधिकार प्राप्त है। यदि वह स्वार्थ के वशीभूत होकर अपने वर्तमान सुखों एवं आरामों के लिये ही सोचता है तथा काम करता है और दूसरों के सुख का तनिक भी ध्यान नहीं रखता, तो एक-न-एक दिन वह अपराधजन्य प्रवृत्तियों के अटल नियमानुसार अपने सामने इतनी सारी आपदाओं को खड़ा देखेगा कि जिनको देखते ही उसे विशेष ढंग से अपने को बचाने की आवश्यकता पड़ेगी। उस समय उसको एक और मार्ग मिलेगा।

अनुभव से बढ़कर इस संसार में कोई दूसरा शिक्षक नहीं। मूढ़ता के कारण जो कष्ट उठाने पड़ते हैं उनसे बढ़कर पाठ सिखाने वाली तथा पवित्रता का पाठ पढ़ाने वाली कोई वस्तु नहीं। स्वार्थी मनुष्य हमेशा मूढ़ होता है। वह अपना मार्ग आप ही प्रशस्त करता है। अपना मार्ग—एक ऐसा मार्ग जो दुख और विपत्तियों की ओर ले जाता है। उसी दुख और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विपत्ति में से निकलकर वह महानता और आनन्द प्राप्त करता है।

नेक मनुष्य महान् है। वह भी अपना मार्ग स्वयं ही प्रशस्त करता है, किन्तु वह उस मार्ग को महानता के प्रकाश से आलोकित कर लेता है और मूढ़ता तथा विपत्तियों की मंजिल को तय करके ही वहाँ तक पहुँचता है।

इस प्रकार मनुष्य दूसरे के दोषों को न देखने के रहस्य को उस समय समझता है, जब वह उनके सम्बन्ध में सोचने लगता है, जिसमें उसके अपने स्वार्थ की गन्ध नहीं होती। वह उन लोगों को उनके व्यवहार ही से जाँचता है, उनके कामों को अपने दृष्टिकोण से नहीं वरन् उनके दृष्टिकोण से देखता है। लोग भलाई और बुराई के सम्बन्ध में न जाने-क्या क्या दृष्टि-कोण बना लेते हैं और फिर चाहते हैं कि सभी लोग हमारे ही ढंग पर चलें। यही कारण है कि हम एक-दूसरे में दोष देखते हैं।

प्रत्येक मनुष्य की सही जाँच तभी की जा सकती है जब कि हम उसे न तो अपने, न ही तुम्हारे और न ही किसी और के, वरन् उसी के पैमाने से उसे नापें। इस प्रकार का व्यवहार करना उसकी परीक्षा नहीं वरन् उसके साथ प्रेम करना होता है।

जब हम स्वार्थ को छोड़कर किसी अन्य को प्रेम-भरी दृष्टि से देखते हैं, तो हमें दूसरों में कोई भी बुराई नजर नहीं आती है। हम इस प्रकार से उन्हें वैसा ही देखते हैं जैसे कि वे हैं। और ......मनुष्य इस प्रेम के निवास पर उसी समय पहुँचता है जिस समय वह अपने हृदय में इस प्रकार के विचारों को पुष्ट कर लेता है।

मैं कौन हूँ, जो दूसरों के सम्बन्ध में बुरा कहूं ? क्या मैं स्वयं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाप से इतनी दूर हूँ कि दूसरों पर बुरा होने का दोष मढ़ूँ ?... "ऐ मेरे हृदय, दूसरों की टीका-टिप्पणी करने से पूर्व तू अपने को मिलनसार तथा निरभिमानी बना !" दूसरों के दोषों और बुराइयों को देखने से पहले स्वयं अपने दोषों और बुराइयों को दूर करो। कबीर साहब का कथन है :—

"बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न देखा कोय !
जो खोजा मन आपना, मुझ सा बुरा न कोय।"

एक स्त्री कुछ पाप करती पकड़ी गई। लोग-बाग उसे बेइज्ज़त करने के लिये तैयार थे कि ईसा मसीह ने उन लोगों से कहा कि उस पर पहला पत्थर वह मनुष्य मारे जिसने कभी भी पाप न किया हो।

यद्यपि वह स्वयं पूर्ण पवित्र था, तथापि उसने न तो पत्थर ही उठाया और न ही कोई कड़े शब्द ही कहे, वरन् उसने उस स्त्री से अतीव नम्रता तथा दया से कहा—"मैं तुम पर दोषारोपण नहीं करता। जा, चली जा, और फिर पाप न करना। पवित्र हृदय में ऐसा कोई भी स्थान शेष नहीं रहता जिसमें स्वार्थ और घृणा-भरे विचार समा सकें, क्योंकि ऐसा व्यक्ति तो नम्रता और प्रेम से भरा हुआ होता है। उसको कोई बुराई नज़र ही नहीं आती। ज्यों-ज्यों मनुष्य दूसरों में दोष निकालना छोड़ता रहता है, त्यों-त्यों वह स्वयं पाप, दुख और विपत्तियों से छुटकारा पाता जाता है।

कोई भी मनुष्य उस समय तक अपने-आप में अथवा अपने कार्यों में बुराई नहीं देख सकता है जब तक कि उसके ज्ञान-चक्षु न खुल जायें। ज्ञान का प्रकाश प्राप्त कर लेने पर वह उन कामों को छोड़ता जाता है, जिनको वह गलत समझता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने काम को ठीक सिद्ध करने का प्रयत्न करता है। दूसरे लोग उसके कार्य को भले ही कितना ही बुरा क्यों न

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बताएँ, किन्तु वह अपने कर्तव्य को अच्छा और आवश्यक समझता है, वरना यदि वह ऐसा न सोचता तो उसे वह कभी भी न करता। क्रोध करने वाला अपने क्रोध को सर्वदा उचित ही समझता है। लालची व्यक्ति अपने लालच को, अनाचारी व्यक्ति अपने आचरण को अच्छा और उचित समझता है। इसी प्रकार झूठा व्यक्ति यह समझता है कि उसका झूठ बोलना आवश्यक था। दूसरों पर दोषारोपण करने वाला उन व्यक्तियों के चाल-चलन को निकृष्ट बताता है जिनसे वह घृणा करता है, और उनके बुरे चाल-चलन से अन्य व्यक्तियों को अवगत कराना अपना कर्तव्य समझता है। चोर चोरी को शीघ्र ही धनपति तथा खुशहाल बन जाने का साधन समझता है, यहाँ तक कि खूनी भी अपने कार्य को सही और उचित मानता है।

प्रत्येक व्यक्ति के काम उसकी समझ के अनुसार ही होते हैं। कोई भी व्यक्ति अपने आदर्श से ऊँचा नहीं जा सकता है और न ही कोई व्यक्ति अपनी समझ से बढ़कर काम ही कर सकता है, किन्तु उन्नति प्रत्येक व्यक्ति कर सकता है तथा शनैः-शनैः अपने ज्ञान के प्रकाश को बढ़ा सकता है। उदाहरणतया क्रोधी मनुष्य क्रोध में भरकर गालियाँ देना शुरू कर देता है और आपे से बाहर हो जाता है, क्योंकि उसका ज्ञान अभी तक क्षमाशीलता तथा सन्तोष की सीमा तक पहुँच ही नहीं पाया है। चूँकि उसके स्वभाव में अभी तक सहनशीलता की कमी है, अतः वह न तो इसको समझ सकता है, न ही उचित मान सकता है और न ही वह सहनशीलता के प्रकाश के द्वारा क्रोध की अँधेरी रात का सामना ही कर सकता है।

यही दशा झूठ बोलने वाले, दोष मढ़ने वाले और चोरी करने वाले की होती है। वे अपने हृदय के अज्ञान में ही पड़े रहते हैं। कारण ?···कारण यह है कि अभी तक उनकी समझ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कच्ची और उनका अनुभव अपूर्ण होता है । चूंकि उन्होंने हृदय की सर्वश्रेष्ठता को कभी देखा ही नहीं है, इसलिये उन्हें उसका कुछ भी ज्ञान नहीं हो पाता । उनके लिये तो हृदय की दशा एक व्यर्थ की कल्पना है ।

प्रकाश सर्वदा अन्धकार ही में चमकता है, किन्तु अँधेरा उसे नहीं जानता है, और न ही वह अपनी उस बुरी दशा को जानता है जिसमें वह फँसा हुआ है, क्योंकि अँधेरे में रहने के कारण वह ज्ञान-शून्य है ।

जब मनुष्य अपनी गलतियों के कारण बार-बार कष्ट भोगता है, तो अन्त में वह अपने जीवन-संघर्ष पर दृष्टि डालकर उसे देखता है । तभी उसे यह ज्ञात होता है कि उसका दुख और आपदाएँ स्वयं उसके क्रोधी, झूठ और अन्य मूर्खतापूर्ण कुकृत्यों ही के परिणाम हैं । इस प्रकार अनुभव करके हा वह इन बुराइयों को छोड़ देता है और इनकी अपेक्षा सद्गुणों को अपनाता तथा उन पर काम करना आरम्भ करता है । जब उसे श्रेष्ठ मार्ग मिल जाता है, तो वह भले और बुरे दोनों मार्गों से परिचित होने के कारण यह भली भाँति समझ जाता है कि उसका पहला मार्ग कितना ख़राब और दूसरा कितना अच्छा है । अनुभव के द्वारा बुराई और भलाई की जाँच कर लेना ही ज्ञान का प्रकाश अर्थात् वास्तविकता का दर्शन है ।

जब मनुष्य दूसरों को अपने दृष्टिकोण से नहीं वरन् स्वयं उनके दृष्टिकोण से ही देखना तथा अपने पैमाने से नहीं वरन् उन्हीं के पैमाने से उन्हें नापना आरम्भ करता है, तब वह उनमें कोई भी बुराई या दोष नहीं देखता; क्योंकि वह अब भलीभाँति समझ गया है कि प्रत्येक व्यक्ति का भलाई तथा बुराई को नापने का पैमाना एवं दृष्टिकोण भिन्न-भिन्न हैं ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार में कोई भी ऐसा खराव-से-खराव पाप नहीं है जिसे कुछ लोग अच्छा न समझते हों। चोरों का दल चोरी को कभी बुरा नहीं वताता। इसी प्रकार कोई भी अच्छी-से-अच्छी नेकी नहीं जिसको कुछ व्यक्ति बुरा न मानते हों।

पवित्र हृदय वाला व्यक्ति दूसरों में बुराई देखना छोड़ देता है। उसे इस बात की इच्छा ही नहीं रहती है कि दूसरे मनुष्य उसके मत पर चलें अथवा उसके विचारों के अनुसार काम करें, वरन् वह तो यह प्रयत्न करता है कि लोग अपने-अपने मत तथा अपने-अपने विश्वास के अनुसार जीवनयापन करें, क्योंकि वह जानता है कि श्रेष्ठ ज्ञान और आनन्द मतों के बदलने से नहीं वरन् अनुभव प्राप्त करने ही से प्राप्त होता है।

साधारणतया, देखने में आता है कि मनुष्य अपने से भिन्न मत रखने वालों को बुरा और अपने जैसा मत रखने वाले लोगों को अच्छा समझता है। जो व्यक्ति अपना ही ध्यान रखता है और अपने ही मत को ग्राह्य समझता है, वह केवल उन व्यक्तियों को ही प्रेम की दृष्टि से देखता है जो उसकी विचार-धाराओं से मेल खाते हुए होते हैं। किंतु जो व्यक्ति उसके विचारों से मेल नहीं खाते उनसे वह घृणा करता है।

मसीह ने कहा है—"जो तुझसे प्रेम करते हैं यदि तू उनसे प्रेम करे तो तूने कौनसा अलौकिक काम किया है? अपने शत्रुओं से प्रेम कर और उनके साथ भलाई कर जो तुझसे घृणा करते हैं।"

अभिमान और स्वेच्छाचारिता मनुष्य को अन्धा बना देती है। विभिन्न धर्मावलम्बी एक-दूसरे से घृणा करते और एक-दूसरे की भावनाओं को ठेस पहुँचाते हैं। राजनीतिक मामलों में विभिन्न दृष्टिकोण रखने वाले एक-दूसरे से लड़ते-झगड़ते और बुरा-भला कहते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुदार व्यक्ति दूसरों को केवल अपने ही पैमाने से नापता तथा अपने ही मत को प्रधानता देता है। वह स्वयं तो इतना हठी है कि अपने-आपको ठीक मार्ग पर और दूसरों को गलत मार्ग पर समझता है तथा स्वतन्त्र विचार और समझ के विरुद्ध अपने मत के अनुसार मत प्राप्त करने और अपने विचार के अनुसार काम कराने के लिये उन पर जुल्म करता है; यहाँ तक कि निर्दयता से काम लेकर उन्हें उस मार्ग पर, जो वह ठीक समझता है, ले आने को अच्छा और आवश्यक समझता है।

लोग एक-दूसरे से घृणा करते, एक-दूसरे को बुरा बतलाते, एक-दूसरे का विरोध करते और एक-दूसरे को कष्ट पहुँचाते हैं। इसका कारण यह नहीं है कि वे वास्तव में बुरे हैं, या जान-बूझकर शरारत करते हैं, वरन् वे सोचते हैं कि ऐसा करना इसलिये आवश्यक और उचित है ताकि उन्हें ठीक मार्ग पर लाया जा सके। सच तो यह है कि सभी लोग अच्छे होते हैं, केवल अन्तर यह होता है कि कोई अधिक बुद्धिमान् होता है और अधिक अनुभव रखता है तथा कोई कम।

कुछ समय पूर्व की बात है कि दो व्यक्ति, जिनका नाम यहाँ पर 'अ' और 'ब' से दिया जाता है, 'स' नाम के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ के विषय में इस प्रकार बातचीत कर रहे थे—

अ—प्रत्येक व्यक्ति अपने विचारों और कामों का फल भोगता है और अपनी गलती के कारण दुख उठाता है।

ब—यदि मनुष्य अपने बुरे कामों की सजा पाये बिना ही न बच पाये, तो हमारे कई बड़े और अधिकार-प्राप्त अधिकारी अपने लिये कितना बड़ा और भयानक नर्ककुंड तैयार कर रहे हैं?

अ—भले ही कोई बड़ा हो या छोटा, जब तक वह पाप और अन्धकार के गढ़े में पड़ा रहता है, तब तक वह दुख औ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपदाओं के अतिरिक्त और कुछ नहीं पाता।

ब—देखिये, उदाहरण के रूप में 'स' ही को लीजिये, जो प्रत्येक रूप में बड़ा आदमी है, जिसमें स्वार्थ और लालच कूट-कूट-कर भरा हुआ है। ......ऐसे अनाचारी व्यक्ति को निःसंदेह कष्टप्रद सज़ा मिलेगी।

अ—किन्तु आप यह क्योंकर जानते हैं कि वह ऐसा बुरा व्यक्ति है?

ब—उसके कार्य और आचरण से।...कहने का मतलब यह है कि जब मैं किसी व्यक्ति को बुराई करते देखता हूँ तो समझ लेता हूँ कि वह बुरा है। अतः जब मैं 'स' को देखता हूँ तो क्रोध की एक पवित्र झलक मेरे माथे पर उभर आती है। कभी-कभी तो मुझे यह भी सन्देह हो जाता है कि सचाई की विजय नहीं होती, विशेषकर जब मैं 'स' जैसे व्यक्ति को ऐसे पद पर देखता हूँ, जिस पर वह दूसरों को इतनी हानि पहुँचा सकता है।

अ—बतलाइये तो सही, 'स' क्या बुराई कर रहा है?

ब—उसकी सारी बातें ही बुरी हैं। यदि उसका अधिकार बना रहा तो वह देश को बरबाद कर देगा।

अ—एक ओर तो आपकी तरह बहुत से व्यक्ति हैं जो उसे बुरा बताते हैं, किन्तु दूसरी ओर भी बहुत से बुद्धिमान व्यक्ति हैं जो उसे नेक और बेहद योग्य समझते हैं, उसके गुणों के कारण उसकी प्रशंसा करते हैं और उसकी पालिसी को अच्छा तथा देश की उन्नति के लिये श्रेष्ठ समझते हैं। ऐसे ही व्यक्तियों की सहायता से उसका पद सुरक्षित है। क्या वे व्यक्ति भी बुरे हैं?

ब—नहीं, वे मनुष्य स्वयं तो बुरे नहीं हैं, किन्तु वे 'स' की मक्कारी के जाल में फँसे हुए हैं। इसी कारण मैं उसको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और भी अधिक बुरा समझता हूँ, क्योंकि वह अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिये बड़ी सफलता के साथ अपनी योग्यता को दूसरों को धोखा देने में काम में लाता है। यही कारण है कि मैं ऐसे व्यक्ति से सख्त घृणा करता हूँ।

अ—क्या यह सम्भव नहीं हो सकता है कि तुम्हारा ही विचार गलत हो ? तुम स्वयं ही धोखे में पड़े हुए हो ?

ब—वह किस प्रकार ?

अ—घृणा करना स्वयं को धोखा देना है। प्रेम करना अपने-आपको प्रकाश में लाना है। कोई भी व्यक्ति अपने-आपको या दूसरों को सही अर्थों में तब तक नहीं पहचान सकता है जब तक वह घृणा छोड़कर प्रेम का अभ्यस्त न हो जाय।

ब—यह बात सुनने में तो बहुत अच्छी लगती है, किन्तु है यह क्रियात्मक रूप से कठिन। जब मैं देखता हूँ कि एक व्यक्ति दूसरों के साथ बुराई कर रहा है, उनको धोखा देकर उन्हें गलत मार्ग पर ले जा रहा है, तो मैं निःसंदेह उससे घृणा करूँगा और मेरा इस प्रकार घृणा करना भी बिलकुल ठीक और उचित होगा। 'स' में तो अन्तरात्मा का चिन्ह तक नहीं है।

अ—तुम 'स' को जैसा सोचते हो वह वैसा है भी या नहीं ?... यह जनमत से निर्णीत प्रश्न है। किन्तु यदि यह मान भी लिया जाय कि तुम्हारे कहने के अनुसार वह वैसा ही है जैसा कि तुम कहते हो, तो उसकी दशा दया के योग्य है, न कि घृणा के योग्य।

ब—वह कैसे ?

अ—तुम कहते हो, 'स' में आत्मा ही नहीं है।

ब—बिल्कुल ठीक, उसमें आत्मा है ही कहाँ ?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अ—तब 'स' आध्यात्मिक दृष्टिकोण से अपूर्ण है । क्या तुम अन्धों से इसलिये घृणा करते हो कि वे देख नहीं सकते, या गूंगों और बहरों से तुम इसलिये घृणा करते हो कि वे बोल तथा सुन नहीं सकते ? जब किन्हीं जहाजियों का कम्पास खो जाय अथवा पतवार टूट जाय और जहाज किसी चट्टान से टकराकर नष्ट-भ्रष्ट हो जाय, तो क्या तुम उस पर यह दोष लगाओगे कि उसने जहाज को चट्टान से दूर क्यों नहीं रखा, या तुम कप्तान को जहाज के यात्रियों की जान जाने के लिये उत्तरदायी ठहराओगे ? यदि किसी व्यक्ति के अन्दर आत्मा ही न हो, तो वह नैतिक पथ-प्रदर्शन के लिये कोई माध्यम ही नहीं रखता। अतः उसे अपने स्वार्थ ही में समस्त गुण भरे हुए लगते हैं। 'स' तुम्हारी दृष्टि में बुरा है। क्या वह अपने कार्यों को स्वयं भी बुरा समझता है ?

ब—भले ही वह अपने-आपको बुरा समझे या न समझे, किन्तु वास्तव में है वह बुरा ।

अ—यदि मैं तुम्हें इसलिये बुरा समझूँ कि तुम 'स' से घृणा करते हो, तो क्या मैं सही मार्ग पर हूँ ?

ब—नहीं ।

अ—क्यों नहीं ?

ब—क्योंकि ऐसी दशा में मेरे लिये 'स' को घृणा की दृष्टि से देखना आवश्यक है, उचित है और सही है। पवित्र क्रोध और पवित्र घृणा भी तो कोई वस्तु है ।

अ—तो क्या पवित्र स्वार्थ, पवित्र वासना, पवित्र बुराई भी कोई चीज़ है ? चूँकि तुम एक बात को सही समझ रहे हो और अपना नैतिक कर्तव्य और नागरिक अधिकार समझकर 'स' से घृणा कर रहे हो, इसलिये तुमको बुरा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझना मेरी गलती है। फिर भी घृणा करने की अपेक्षा एक और श्रेष्ठ मार्ग भी है। उस मार्ग का ज्ञान मुझे 'स' से घृणा करने से रोकता है। उसके काम करने का ढंग भले ही मेरे दृष्टिकोण में कितना ही बुरा हो, किन्तु स्वयं उसे या उसके साथियों को तो बुरा मालूम नहीं होता। इसके अतिरिक्त जैसा कोई बोयेगा वैसा ही काटेगा।

ब—तो वह श्रेष्ठ मार्ग कौनसा है?

अ—वह मार्ग प्रेम का है। दूसरों में बुराई न देखने का मार्ग है, आनन्द और शान्ति का मार्ग है।

ब—क्या तुम्हारा मतलब यह तो नहीं कि हृदय की एक ऐसी दशा भी हो सकती है जिसमें मनुष्य दूसरों को वदी करता हुआ देखकर भी क्रोध नहीं कर सकता है।

अ—नहीं, मेरा मतलब यह नहीं है, क्योंकि जब तक मनुष्य दूसरों को बुरा समझता रहेगा, वह नाराज़ भी होता रहेगा। मेरा मतलब यह है कि मनुष्य शान्ति और प्रेम की उस दशा तक भी पहुँच सकता है, जहाँ पहुँचकर वह किसी में भी ऐसा दोष नहीं देखता है कि जिसके लिये उसे क्रोध करने की आवश्यकता पड़े। उस दशा में पहुँचकर वह लोगों के भिन्न-भिन्न स्वभावों को परख लेता है कि लोग किस-किस स्वार्थ को लेकर काम करते हैं और किस प्रकार से वे अपने ही विचारों तथा कार्यों के परिणाम को भोगते हैं। भले ही वे कष्ट उठाते हों अथवा खुशी के मीठे फल चखते हों, तथापि इस दशा में पहुँचने का अर्थ है कि वे मनुष्य सब पर दया करते तथा सबके साथ प्रेम का व्यवहार रखते हैं।

ब—तुमने जिस दशा के सम्बन्ध में मुझे वताया है वह बेशक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत ही महत्वपूर्ण, पवित्र तथा सुन्दर है, किन्तु अफ़सोस है कि मैं ऐसी दशा में पहुँचना नहीं चाहता हूँ, अपितु मेरी तो यही प्रार्थना है कि मेरा हृदय कभी भी ऐसी दशा में न पहुँचे जिससे कि मैं 'स' जैसे बुरे व्यक्ति से घृणा करना छोड़ दूँ।

इस बातचीत से यह प्रत्यक्ष है कि 'ब' घृणा को अच्छा समझता है और उसको छोड़ना नहीं चाहता। इसी प्रकार दूसरे व्यक्ति भी जो कुछ करते हैं उसे अच्छा और आवश्यक समझते हैं। जिन बातों में मनुष्य को विश्वास होता है वह उन्हीं पर काम करता है, और जब विश्वास नहीं रहता तो फिर वह उन पर काम करना भी छोड़ देता है। 'ब' ऐसी ही स्वतन्त्र विचारधारा रखता है जैसी कि दूसरे मनुष्य। यदि वह पसन्द करे तो उसे दूसरों से घृणा करने का पूर्ण अधिकार है, और उस समय तक है तब तक उसे यह न मालूम हो जाय कि घृणा करने का फल दुःख और विपत्तियाँ ही हैं। घृणा करना सख्त गलती, मूढ़ता और अन्धापंन है तथा इससे उसे ही हानि पहुँचती है। उस समय तक वह घृणा करना नहीं छोड़ेगा।

एक बार किसी महापुरुष से उसके शिष्यों ने पूछा—"नेकी और बदी में क्या अन्तर है?" सुनकर उस महापुरुष ने अपने हाथ की अँगुलियों को नीचे की ओर झुकाकर पूछा—"मेरा हाथ किस ओर को झुका है?" शिष्यों ने उत्तर दिया—"नीचे की ओर।" महात्मा ने हाथ की अँगुलियों को फिर ऊपर की ओर करके पूछा—"अब मेरा हाथ किस ओर को है?" शिष्यों ने उत्तर दिया—"ऊपर की ओर।" सुनकर महात्मा बोले—"बस यही अन्तर नेकी और बदी में है।"

इस साधारण उदाहरण से महापुरुष ने यह उपदेश दिया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि अपनी शक्ति को अपवित्र और अनुचित दिशा में लगाना बदी है तथा पवित्र एवं उचित दिशा में लगाना नेकी है...... और यह भी कि बरा व्यक्ति अपनी दिशा बदल लेने से नेक बन सकता है।

बुराई की वास्तविकता को समझने और नेक जीवन व्यतीत करने का अर्थ यह है कि मनुष्य दूसरों में बुराई देखना छोड़ दे। धन्य है वह व्यक्ति जो दूसरों के दोषों को छोड़कर अपने हृदय को पवित्र बनाने का प्रयत्न करता है। उसे एक-न-एक दिन वह पवित्र दृष्टि मिल जाती है जिससे वह किसीमें बुराई को देख ही नहीं पाता।

बुराई की वास्तविकता को जानकर मनुष्य को क्या करना चाहिये ?......उसको चाहिये कि वह केवल नेकी में ही व्यस्त रहे। यदि मुझको कोई दोषी ठहराता है तो मैं उसे दोषी नहीं बताऊँगा। यदि कोई मुझे गाली देता है तो मैं उसके साथ भलाई करूँगा। यदि कोई मुझ पर दोष मढ़ता है तो मैं उसकी खूबियों का वर्णन करूँगा। यदि मुझसे कोई घृणा करता है तो मैं समझूँगा कि उसे मेरे प्रेम की आवश्यकता है। शोकाकुल व्यक्तियों के साथ मैं सहानुभूति-भरे स्वभाव से व्यवहार करूँगा। लालची के साथ मैं विशाल-हृदयता से काम लूँगा और झगड़ालू तथा लड़ाकू के साथ मैं नरमी तथा सहृदयता का बरताव करूँगा। जब मुझे बुराई नज़र ही न आयेगी तो फिर मैं किससे घृणा और किससे शत्रुता करूँगा ?

ऐ, मेरे बहन और भाइयो ! यदि संसार तुम्हें कष्ट या दुःख पहुँचाना चाहता है, या तुम्हारे साथ शत्रुता और ईर्ष्या रखता है तो मुझे तुम्हारे लिये अफसोस होता है। मेरे साथ तो कोई भी शत्रुता नहीं रखता, ईर्ष्या नहीं करता, सभी मेरे साथ नरमी का व्यवहार करते हैं। मैं तो रोना जानता ही नहीं हूँ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे रोने से क्या सम्बन्ध ?

जो व्यक्ति दूसरे व्यक्ति में कोई बुराई देखता है तो वह सोचता है कि उनके बुरे विचार और उनके बुरे कामों के पीछे शैतान का हाथ है जो उनको इस प्रकार के पापमय काम करने के लिये उकसाता रहता है, किन्तु पवित्र हृदय वाला व्यक्ति ऐसा नहीं सोचा करता। वह बुरे कामों को ही बुराई से ओत-प्रोत समझता है और जानता है कि उन कामों के पीछे कोई बुरी शक्ति अथवा कोई बुरी आत्मा या प्रेरणा उपस्थित नहीं है। संसार का उद्देश्य भलाई तथा नेकी है, न कि बदी। नेकी अमर है, जबकि बदी क्षण-भंगुर।

जैसे एक ही माँ-बाप की सन्तान, एक ही घर में रहने वाले बहन-भाई दुख-सुख में मिल-जुलकर प्रेम से रहते हैं, एक-दूसरे के दोषों को नहीं देखते, वरन् एक-दूसरे की गलतियों पर पर्दा डालते रहते हैं तथा प्रेम के दृढ़ धागे में बँधे रहते हैं, वैसे ही एक नेक मनुष्य सभी लोगों को एक ही परिवार के सदस्यों के रूप में देखता है, एक ही माँ-बाप की सन्तान, एक ही आत्मा से बने हुए और एक ही उद्देश्य रखने वाले मनुष्य समझता है। वह सबको अपना बहन-भाई जानकर किसी को भी अपने से पृथक् नहीं समझता। उसके लिये जाति-पाँति, धर्म-समुदाय, देश-जाति और गोरे-काले का कोई भेद नहीं रहता, कोई पहचान नहीं रहती। वह किसीमें भी बुराई को नहीं देखता। सभी के साथ वह सुख-शान्ति से रहता है। धन्य है वह व्यक्ति जो आनन्द के इस मार्ग पर पहुँच गया है।

नवाँ पथ अब सामने दिखाई दे रहा है। इस पर चलने से पहले हृदय को इस प्रकार की दशा में मोड़ लो कि तुम किसी में भी बुराई को न देख सको।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवाँ पथ

स्थायी प्रसन्नता

"कौनसे मनुष्य अपनी दैनिक मेहनत-मजदूरी अँधेरी गलियों और शोर-गुल से भरे भीड़-भड़क्कों में प्रसन्नचित्त से कर सकते हैं ?—केवल वे मनुष्य जिनके हृदय में पवित्रता के सुमधुर स्वर झंकार रहे हों।"

—केबल

हमारे हृदय प्रकाशित और शान्तिपूर्ण होंगे, हमारे स्वभाव प्रफुल्लित, प्रेम का उज्ज्वल प्रकाश हमारा पथ-प्रदर्शक और आत्म-सन्तोष हमारी प्रतिभू होगी।

स्थायी प्रसन्नता, सर्वदा रहने वाला आनन्द क्या सचमुच कोई ऐसी वस्तु है ?..........वह कहाँ है और किसके पास है ?

हाँ, स्थायी प्रसन्नता ऐसी ही वस्तु है। वह वहाँ प्राप्य है जहाँ पाप नहीं। पवित्र हृदय में उसका वास है। स्वर्ग उस स्थान पर होता है जहाँ बाहरी लड़ाई-झगड़े, दगे-फसाद नहीं होते हैं।

जिस प्रकार अँधेरा एक समाप्त हो जाने वाली छाया है और प्रकाश एक स्थिर रहने वाली वास्तविकता है, वैसे ही रंज तथा ग़म भी अस्थायी हैं, जबकि प्रसन्नता अमर है। कोई भी सत्यता विनष्ट नहीं हो सकती है और कोई भी असत्यता बनी नहीं रह सकती है। रंज तथा ग़म भी असत्यता की भाँति बने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं रह सकते। प्रसन्नता भी सचाई की भाँति मर नहीं सकती। यह सत्य है कि प्रसन्नता कुछ समय के लिये गुप्त रह सकती है, किन्तु वह पुनः प्राप्त की जा सकती है। रंज तथा ग़म कुछ समय के लिये रह सकते हैं, किन्तु उन्हें परास्त करके दूर किया जा सकता है।

कभी भी यह न सोचो कि तुम्हारा दुख सदा-सर्वदा ही बना रहेगा। वह तो बादल की भाँति फट जाने वाला होता है। तुम कभी भी अपने हृदय में यह मत सोचो कि तुम्हें हमेशा विपत्तियों का सामना करते रहना होगा। वे सारी विपत्तियाँ तो प्रभात के तारे की भाँति शीघ्र ही अदृश्य हो जाने वाली हैं।

जागो! उठो! प्रसन्न और प्रफुल्लित बनो! देखो, तुम्हारी छाया तुम्हीं से बनती है। तुम अपनी इच्छाएँ जितनी ही बढ़ाते जाओगे, तुम्हें उतना ही रोना पड़ेगा। तुम जितना उन्हें कम करते जाओगे, उतने ही तुम प्रसन्नचित्त बनोगे। तुम दुख के बेबस और लाचार गुलाम नहीं हो, वरन् अमर प्रसन्नता अपने घर के द्वार पर बैठी-बैठी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है। तुम पाप और अँधेरे के कैदी नहीं हो, वरन् तुम्हारी सोई हुई आँखों के पलकों पर अब भी पवित्रता चमक रही है और तुम्हारे जागने की प्रतीक्षा कर रही है।

स्वार्थ और पाप की गहरी नींद में शाश्वत प्रसन्नता समाप्त हो जाती है। हम उसे भूल जाते हैं और इस दशा में हमें उसका अमर संगीत सुनाई नहीं देता। उसके शाश्वत फूलों की सुगन्ध यात्रियों के हृदय को प्रसन्न नहीं कर सकती। किन्तु जब पाप और स्वार्थ छोड़ दिये जाते हैं तो विषयानन्द की शिकायत शेष नहीं रह जाती, तब दुख की छत्रछाया दूर हो जाती है और हृदय को शाश्वत प्रसन्नता प्राप्त हो जाती है। स्वार्थ से रिक्त हृदय प्रसन्नता से भर जाता है, क्योंकि शान्त हृदय में ही

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसन्नता का वास होता है तथा पवित्र आत्मा अर्थात् पवित्र मनोविचार उस पर शासन करते हैं। स्वार्थ से प्रसन्नता दूर भागती है, झगड़ालू और लड़ाकू मनुष्य को यह छोड़ जाती है तथा अपवित्र विचारों वाले मनुष्य से यह मुँह छिपा लेती है।

प्रसन्नता एक ऐसी सुन्दर, कोमल और पवित्र देवी है जो पवित्रता के साथ ही ठहर सकती है। जहाँ स्वार्थ रहता है वहाँ वह एक पल के लिये भी नहीं ठहर पाती। वह प्रेम के साथ बँधी होती है। जहाँ प्रेम है वहीं प्रसन्नता है।

स्वार्थ के त्याग देने से प्रसन्नता प्राप्त होती है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि प्रसन्नता की मात्रा स्वार्थ की मात्रा ही के समान होती है। शाश्वत प्रसन्नता का अनुभव तो पवित्र आत्मा तथा हृदय को प्रत्येक पल हो सकता है, किन्तु जिस समय या जिस क्षण कोई व्यक्ति केवल स्वार्थ से ही रिक्त होता है तो उसका भी हृदय प्रसन्नता से भर उठता है।

प्रत्येक निःस्वार्थ विचार में इस प्रकार की प्रसन्नता टपकती है जो शारीरिक तुष्टि से प्राप्त होने वाली प्रसन्नता से एकदम भिन्न होती है,जिसका परिणाम दुख नहीं होता है। यदि सच पूछा जाय तो प्रत्येक मनुष्य स्वार्थ-भावना से जैसे और जितना दूर होता जाता है, उतना ही वह प्रसन्नता को प्राप्त करता जाता है। इस के विपरीत जितना ही स्वार्थ के वशीभृत होता जाता है, उतना ही वह दुख के चक्कर में पड़ता जाता है। सभी नेक व्यक्ति, जिन्होंने सफलता के साथ स्वार्थ पर विजय प्राप्त कर ली है, प्रसन्नचित्त रहते हैं। ऐसी दशा में उनकी पवित्र आत्मा की प्रसन्नता का क्या ठिकाना! ......कोई भी सच्चा मार्ग-दर्शक यह नहीं कहता कि जीवन के अंत होते समय दुख प्राप्त होता है, वरन प्रत्येक ही बतलाता है कि अन्त में सुख मिलता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

......यह ठीक है कि जीवन का अंत होते समय दुख प्राप्त होता है और यह केवल किसी पाप का अवश्यम्भावी परिणाम होता है। ज्योंही स्वार्थ नष्ट होता है, दुख स्वयं भाग जाता है।

प्रसन्नता पवित्रता की जीवनसंगिनी है। आनन्द और पवित्रता इकट्ठे रहते हैं। जहाँ पहले शोक-संतापों का डेरा था, वहाँ पवित्रता के पहुँचते ही आनन्द का सूर्य निकल आता है।

इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि स्वार्थ को छोड़ते हुए दुख अवश्य होता है, पवित्र बनते समय कष्ट होता है। हाँ, बनने में दुख अवश्य है, किन्तु बन जाने के पश्चात् तो प्रसन्नता-ही-प्रसन्नता है।

ऐसी दशा, जिसमें सहृदयता के सारे विशिष्ट गुण मिलते हैं, अर्थात् हृदय का सौंदर्य, शक्ति तथा प्रेम आदि सभी भाव होते हैं, मनुष्य अपने काम, अपनी भावनाएँ, अपने अनुभव, अपने विचार और अपनी धारणाओं का स्वामी स्वयं होता है।

ज़रा ध्यान से सोचो! एक फ़ूल किस प्रकार बनता है! ......पहले वह एक छोटा-सा बीज होता है जो पृथ्वी में मिट्टी के नीचे दबा हुआ, अँधेरे से निकलकर प्रकाश में आने के लिये मार्ग खोजता है।......फिर वह अंकुर के रूप में फूटता है, एक-एक पत्ता बढ़ता है और फिर अन्त में उस पर फ़ूल बनकर वह अपनी सुगन्ध, सौन्दर्य और मधुर रूप में खिल उठता है। ......यहीं उसका समस्त संघर्ष समाप्त होता है।

यही दशा मनुष्य के जीवन की है। मनुष्य पहले स्वार्थ और मूढ़ता की अन्धकारपूर्ण धरती में अन्धे व्यक्ति की भाँति प्रकाश को टटोलता है, फिर प्रकाश में आता है, अर्थात् उसके हृदय का अन्धकार दूर होने लगता है। फिर वह कष्ट और विपत्तियाँ उठाता हुआ शनैः-शनैः स्वार्थ से ऊपर उठता है और अन्त में पवित्र तथा निःस्वार्थ जीवन का वह पूरा फूल अस्तित्व

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में आ जाता है, जिससे पवित्रता की सुगन्ध और आनन्द की लहरें निकलकर बिना किसी परिश्रम के सबके पास तक पहुँचती हैं।

नेक और पवित्र-हृदय व्यक्ति सबसे अधिक प्रसन्न रहते हैं। भले ही लोग इस सत्य से आँखें चुरायें अथवा उसको स्वीकार करने में आनाकानी करें, किन्तु हृदय उस सत्य को स्वयमेव ही स्वीकार करता है। उदाहरणतया प्रत्येक युग और प्रत्येक देश के नागरिक देवताओं के सम्बन्ध में यह विश्वास रखते आये हैं कि वे सर्वदा ही प्रसन्न-वदन रहते हैं। मांस और हड्डी के बने हुए कई मनुष्य भी इन देवताओं की भांति प्रसन्न और प्रफुल्लित रहते हैं। उनसे कभी-कभी हमारा परिचय भी हो जाता है, किन्तु हम उन्हें छोड़कर आगे बढ़ जाते हैं और उनके मिलने-जुलने वाले भी साधारणतया स्वयं इतने पवित्र नहीं होते कि उन मनुष्य-शरीरधारी देवताओं का आन्तरिक रूप देख सकें और उन्हें ठीक तौर पर पहचान सकें। जो मनुष्य देख नहीं सकते उन्हें इसी प्रकार अवश्य ही टटोलना पड़ता है जिस प्रकार बीज को फूल बनने से पहले मार्ग टटोलना पड़ता है। जिस मनुष्य की आन्तरिक दृष्टि खुल जाती है, उसे बाहरी संकेतों की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

हाँ, पवित्र आत्मा ही आनन्द भोगती है। पवित्र अन्तरात्मा वाला व्यक्ति ही प्रसन्न और प्रफुल्लित रहता है। मसीह के शब्दों में कहीं भी रंज और ग़म का प्रदर्शन नहीं है। शोकाकुल व्यक्ति (मसीह ऐसा कहलाता था) अनुभव प्राप्त करते-करते सर्वांगीण प्रसन्नता के दृष्टिकोण से पूर्ण हो जाता है, अर्थात् रंज तथा ग़म, कष्ट तथा आपत्ति के अन्दर से गुज़रकर ही मनुष्य पूर्ण प्रसन्नता प्राप्त करता है।

"पहले मैं दुनिया के लोगों के ग़म में योग देता था। अपने भाइयों के आँसुओं के साथ आँसू बहाता था। सारे संसार के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंज और आपदाओं से मेरा हृदय जीर्ण-शीर्ण हो चुका था। ......किन्तु अब मैं हँसता हूँ .....और प्रसन्न हूँ, क्योंकि मेरे सामने मुक्ति का मार्ग खुला हुआ है।" —महात्मा बुद्ध

पाप में और पाप से लड़ने में दुख है, अशान्ति है, किन्तु सत्यता की पूर्ति और नेकी के मार्ग में प्रसन्नता है।

इस मार्ग पर चलो! ......उस पर प्रत्येक प्रकार की तृष्णा को शान्त करने वाली दूध की नदी बहती है, उस पर सदाबहार फूल खिलते हैं जो सारे मार्ग पर प्रसन्नता को बिछाते हैं। वहाँ के दिन होली तथा रातें दीवालियाँ होती हैं, अर्थात् दिन तथा रातें दोनों ही प्रसन्नता से भरे होते हैं।

दुख केवल उसी समय तक रहता है जब तक कि स्वार्थ का कुछ भी अंश शेष रहता है। जब अनाज के दाने छिलकों से अलग किये जाते हैं तो कूटने वाली मशीन का काम समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार जब हृदय का मैल दूर हो जाता है तो दुख की मशीन का काम भी समाप्त हो जाता है और फिर उसकी आवश्यकता भी नहीं रहती है। ऐसे ही समय पूर्ण प्रसन्नता तथा वास्तविक आनन्द का अनुभव होता है।

संसार के समस्त साधु, महात्मा, पीर-पैग़म्बर खुशख़बरी सुनाया करते हैं, किन्तु वह खुशखबरी होती क्या है? ...उसको सभी लोग जानते हैं। उदाहरणतया किसी आने वाली आपत्ति का टल जाना, रोग से मुक्ति पाना, किसी मित्र का आना या उसका समुद्र पार पहुँच जाना, कठिनाइयों पर विजय पाना, किसी काम में सफलता प्राप्त करना आदि, ये सभी खुशखबरियाँ हैं, किन्तु पवित्र आत्माएँ क्या ऐसी बातें करती हैं? ......हाँ......वे बातें करती हैं, खुशखबरियाँ सुनाती हैं, किन्तु वे खुशखबरियाँ होती हैं, आपदाग्रस्त मनुष्य के लिये शान्ति, शोकाकुल व्यक्ति के लिये प्रसन्नता, पापी के लिये मुक्ति

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का मार्ग, घायल हृदय के लिये शान्ति-प्रदायक मरहम, भटकती आत्मा के लिये सुख-भरा पथ-प्रदर्शन······और ये सभी निधियाँ किसी आने वाले युग में नहीं अपितु इसी स्थान पर और वर्तमान ही में उपस्थित हैं। जिस प्रकार अन्य मनुष्यों ने इन्हें प्राप्त किया है, उसी प्रकार तुम भी इन्हें प्राप्त कर सकते हो। आवश्यकता है केवल इतनी कि तुम अपने चारों ओर लिपटी हुई स्वार्थ की जंजीरों को तोड़ डालो······नि.स्वार्थ प्रेम के प्रकाश में चले जाओ···बस इतना-सा ही करने पर तुम्हें यह सब-कुछ प्राप्त हो जायगा।

श्रेष्ठ-से-श्रेष्ठ सद्गुणों को अपनाओ, उनका अभ्यास करो, साधना करो और उनको अपने जीवन में उतार पाने के साधन जुटाओ। जब तुम उस गुण को अपने कर्मों में उतार लोगे तो तुम्हें एक अभूतपूर्व और सुमधुर आनन्द का अनुभव होगा। तुम अपनी स्वार्थ-भावना को जितना ही दबाते जाओगे, दूसरों के हित का ध्यान रखोगे और पर-सेवा में रत रहोगे, तुम्हें अपने जीवन में उतना ही आनन्द प्राप्त होगा।

आनन्द की देवी का मन्दिर स्वार्थ की सीमा से उस पार है। सभी को उस मन्दिर में प्रवेश करने का अधिकार है। जो प्रवेश करना चाहता है, प्रसन्नता से प्रवेश कर सकता है।

स्वार्थ दुःख का कारण है। उसका त्याग करना स्वयं के लिये ही नहीं अपितु सभी के लिये सुख का आधार है। वे सारे व्यक्ति, जो प्रतिदिन हमारे सम्पर्क में आते हैं, हमारी निःस्वार्थ-भावना के कारण सुखी होते हैं। वे हमारे व्यक्तित्व के प्रभाव से नेक बन सकते हैं।

सभी मनुष्य एक हैं। जो एक के लिये सुख है वह सभी के लिये सुख है, और जो एक के लिये दुःख है वह सभी के लिये दुःख है। अतः हमारे लिये यही उचित है कि हम जीवन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के दुराहों पर काँटों की अपेक्षा फूल बिछायें ·····यहाँ तक कि हमें अपने शत्रुओं के मार्ग में भी निःस्वार्थ-प्रेम के फूल बिछाने चाहियें।

प्रेम और सेवा के फूलों से आच्छादित इन मार्गों पर जब संसार चलेगा, तो वह पवित्रता की सुगन्ध और उल्लास की महक से भर उठेगा, तथा आज का भयानक संसार कल आनन्द से जगमगा उठेगा।

दसवाँ पथ सामने है। उस पर चलने से पूर्व तुम उस स्थायी प्रसन्नता को अपने जीवन में लाने का प्रयत्न करो जो स्वार्थ को त्याग देने के पश्चात् प्राप्त होती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दसवाँ पथ

मौन

"ऐ मनुष्य, तू मौन को अपना ! शान्त जीवन उन्नति का सूचक है। इतने लम्बे दिन में कम-से-कम एक घंटा चुप रह। यद्यपि तेरा सारा दिन बेकार और निरर्थक बातों में व्यतीत हो जाता है, तथापि वास्तविकता यह है कि तुम कुछ भी नहीं करते, अर्थात् उचित और मतलब की बात तेरी दैनिक कार्य-विधि में एक भी नहीं होती। यदि तुम महान् बनना चाहते हो, जिससे तुम्हारी बातों का दूसरों पर कुछ प्रभाव हो, तो थोड़ी देर के लिये अपनी गपबाज़ियों तथा व्यर्थ की बातों को छोड़ दो और मौन का स्वर्णिम संदेश सुनो।"

—ए० एल० सामन

"ऐ हृदय, तू शान्त रह। बढ़ती हुई बेचैनी और दैनिक कार्यों की उलझनों से थोड़ी देर विश्राम पा। घड़ी-भर के लिए एकाकी रहने के भय से मत घबरा।"

—अर्नेस्ट ग्रास वी

बुद्धिमान मनुष्य की वाणी में शक्ति होती है, किन्तु उसके मौन रहने में उससे भी कहीं अधिक प्रभाव होता है। महापुरुष जब किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये शान्ति ग्रहण करते हैं, तो वे हमें अपरोक्ष रूप से कुछ-न-कुछ सहायता देते हैं। महापुरुषों की मौनता की इस शिक्षा को उनके कुछ शिष्य ही समझ सकते हैं, किन्तु ऐसी शिक्षाओं का पुस्तकाकार रूप युगों तक विश्व को अमर संदेश देता रहता है। एक तेज और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीखा बोलने वाले के भाषण को हज़ारों कान सुनते हैं, किन्तु उस भाषण का एक-एक शब्द एक-एक क्षण में विलीन हो जाता है तथा उनका कोई भी प्रभाव शेष नहीं रहता। जब जज पाइलेट ने मसीह से पूछा—"सचाई क्या है?" तो मसीह चुप रहा। उसका मौन रहना उसकी विशालता को प्रदर्शित करता है। वह मौन त्याग से भरा था। वह मौन जज के लिये एक दैवी सम्पदा थी जो निरुद्देश्य मनुष्यों के लिये सदा-सर्वदा ज्ञानालोक का काम करेगी। मसीह की मौनता इस अटल नियम को सिद्ध करती है कि जहाँ देवताओं तक के पर जलते हैं वहाँ पर मूर्ख बेतहाशा कूद पड़ते हैं। निर्बुद्धि मनुष्य संसार की निरर्थक और उलझन-भरी बातों की बहस में उलझ जाते हैं, अपने-अपने धार्मिक ग्रन्थों के उदाहरण पेश करते हैं, बड़ा जोश और उत्साह दिखाते हैं मानो संसार का पालन और विनाश इन्हीं के बल पर है। जब किताबी ज्ञान रखने वाले ब्राह्मणों ने महात्मा बुद्ध से भगवान् के अस्तित्व के विषय में प्रश्न किये तो महात्मा बुद्ध शान्त बैठे रहे। उनके मौन ने उन ब्राह्मणों को वह शिक्षा दी जिस शिक्षा से अभी तक वे अनभिज्ञ थे। यद्यपि उनके मौन से मूर्खों की सन्तुष्टि नहीं हुई तथापि बुद्धिमानों को एक अच्छा पाठ मिला। भगवान् के अस्तित्व के विषय में इतना वाद-विवाद क्यों? इतने संकीर्ण विचार क्यों? इतना पक्षपात क्यों? इस विषय में उदार हृदयता से काम क्यों न लिया जाय? क्यों न इस पहलू में नम्रता, दया और शुद्ध दृष्टिकोण से सोचा जाय? इस प्रकार अन्त में महानता के सीधे-सादे और आरम्भिक नियमों को समझ लिया जाय। ईश्वर क्या है? इसके सम्बन्ध में इतने ख़याली पुलाव क्यों पकाये जाते हैं? पहले हमें अपने सम्बन्ध में तो जान लेना चाहिये। दुर्व्यवहार और घमण्ड, मूढ़ता और आचरणहीनता की देन हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लावजी (चीनी महापुरुष) ने अपने जीवन से यह सिद्ध कर दिया है कि महान् व्यक्ति शब्दों की सहायता के बिना ही विश्व को सहायता दे सकता है। लावजी के मौन ने उसके हज़ारों शिष्यों को जन्म दिया। वह अज्ञातवास और मौन का हामी था। उसने लोगों को कभी उपदेश नहीं दिया और न ही उपदेश के लिये कहीं बाहर गया; तब भी लोगों ने उसे ढूँढ निकाला और उससे महान् बनने का पाठ पढ़ा।

बीते हुए युग के महापुरुषों के अज्ञात काम महान् बनने के इच्छुकों के लिये मार्ग-दर्शक हैं। इनका प्रकाश उनको मार्ग दिखलाता है, क्योंकि जो व्यक्ति नेकी और महानता प्राप्त करना चाहता है उसके लिये यही काफी नहीं है कि उसे केवल इस बात का ज्ञान हो कि कहाँ और किस अवसर पर बोलना चाहिए, प्रत्युत उसे यह भी पता होना चाहिए कि खामोश कहाँ रहा जाय। ज़बान पर काबू रखना महानता का श्रीगणेश है और उसकी अन्तिम मंजिल है दिल पर काबू पा लेना। जब मनुष्य अपनी जिह्वा पर नियंत्रण कर लेता है तो स्वभावतः वह हृदय पर भी नियंत्रण पा लेता है और इस प्रकार वह मौनता का पक्का पुजारी बन जाता है।

मूर्ख मनुष्य बकबक करता है, गप्पें हाँकता है, व्यर्थ का वाद-विवाद करता है और शब्दों की लड़ाई लड़ता रहता है। वह इसी बात में गौरव अनुभव करता है कि मैंने अपने विरोधी का मुँह बन्द कर दिया। वह अपनी योग्यता पर फूलता और अपनी शक्तियों को व्यर्थ की बातों में खोता रहता है। सच तो यह है कि वह उस माली की तरह है जो बंजर धरती में बीज बोता है।

महान् व्यक्ति शब्दों के वाद-विवाद, गपशप और व्यर्थ की दलीलबाज़ी से अपने को बचाकर रखता है। वह अपनी गलती

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान लेने में ही खुश होता है। वह हारकर इसलिये प्रसन्न होता है कि उसने अपनी एक और गलती को पता करके उसे दूर कर दिया है और इस प्रकार वह महानता का एक पाठ और सीख गया है। धन्य हैं वे व्यक्ति, जो हठधर्मी से अपनी ही बात पर नहीं अड़े रहते हैं।

उत्तेजना दिलाने पर भी शान्त रहना सभ्य और दयालु व्यक्ति का चिन्ह है। निर्बुद्धि और नादान व्यक्ति जरा-सी बात पर भड़क उठते हैं, जरा-से विरोध पर उनका ज्ञान लुप्त हो जाता है और वे सकपका जाते हैं।

हजरत मसीह की सहनशीलता कोई करामात नहीं, प्रत्युत सभ्यता का चिन्ह और महानता का केन्द्र-बिन्दु है। जब हम मसीह के बारे में पढ़ते हैं कि उसने किसी के प्रश्न पर उत्तर में एक शब्द भी मुँह से न निकाला और महात्मा बुद्ध शांत रहे, तो हमें मौन की शक्ति और उसके महत्त्व का पता चलता है।

मौन रहने वाला व्यक्ति ही आध्यात्मिक दृष्टिकोण से शक्तिशाली होता है। बकबक करने वाले की वाणी में शक्ति नहीं होती। उसकी आध्यात्मिक शक्तियाँ नष्ट होती रहती हैं। जब किसी इंजन की शक्ति को काम में लाना होता है, तो उसका चलाने वाला सर्वप्रथम इंजन की समस्त शक्ति को एकत्रित करता है। इसी प्रकार बुद्धिमान व्यक्ति भी अपनी आध्यात्मिक शक्तियों को किसी विशेष काम में लगाने के लिए एकत्रित करता है ताकि उचित समय पर उसे उपयोग में लाया जा सके।

वास्तविक शक्ति मौन में है। यह कहावत प्रसिद्ध है कि जो कुत्ता भौंकता है वह काटता नहीं। बुल्डाग कुत्ते के बारे में साधारणतया कहा जाता है कि वह बिल्कुल चुपचाप रहता है और आवश्यकता पड़ने पर शान्ति में एकत्रित की हुई अपनी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति को पूरे जोश के साथ काम में लाता है। यद्यपि कुत्ते की यह खामोशी निकृष्ट श्रेणी का उदाहरण है, तथापि इसमें भी वही नियम काम करता है जिसके अनुसार मौन में सर्वशक्ति का समावेश बताया गया है।

डींगें मारने वाला व्यक्ति सर्वदा असफल रहता है। इसका कारण यह है कि उसका ध्यान अपने वास्तविक लक्ष्य से हट जाता है। उसकी आन्तरिक शक्ति आत्म-प्रशंसा करने में ही व्यय हो जाती है। उसकी हार्दिक शक्ति उसके काम और उसके परिणाम के लालच ही में बँट जाती है। इस प्रकार उसकी शक्ति का एक बहुत बड़ा भाग तो परिणाम के लालच ही में व्यय हो जाता है। केवल थोड़ा-सा भाग काम करने पर लगाया जाता है। वह व्यक्ति एक अनुभवहीन सेनापती है जो अपनी सेना को किसी एक ही बिन्दु पर एकत्रित न करके स्थान-स्थान पर बाँट देता है और हार को गले लगा लेता है या वह उस लापरवाह इंजीनियर की तरह है जो अपने इंजन का भाप निकालने वाला पेच खुला छोड़कर उसकी बहुमूल्य भाप को बिना लाभ के व्यर्थ जाने देता है। दृढ़-निश्चयी, मौन और क्रिया-शील व्यक्ति ही जीवन में सफल होता है, क्योंकि वह आत्म-प्रदर्शन और आत्म-श्लाघा को छोड़कर अपनी सारी शक्ति अपने काम को सफल बनाने में लगा देता है। बातूनी व्यक्ति ही अपनी प्रशंसा के गीत गाता रहता है। शांत व्यक्ति ऐसे समय में अपने काम में लगा रहता है और काम समाप्त करने के आस-पास पहुँच जाता है। यही नियम हर समय और हर स्थान पर काम कर रहा है कि बाँटी हुई शक्ति एकत्रित की हुई शक्ति के आधीन होती है। बातूनी और आत्म-श्लाघी व्यक्ति को दृढ़-निश्चयी व्यक्ति हमेशा ही जीतता आया है।

यह सर्वमान्य सिद्धान्त है कि मौन में शक्ति है। एक सफल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापारी सफलताओं, उपायों और कार्यों के विषय में ढिंढोरा नहीं पीटता। यदि वह अपनी सफलताओं से फूल कर उनका ढिंढोरा पीटना आरम्भ कर दे, तो उसी समय से उसे असफलताओं का सामना करना पड़ेगा। उच्च आचरण वाला व्यक्ति अपनी अथवा अपनी आध्यात्मिक सफलताओं की उपेक्षा कर उनके सम्बन्ध में कोई भी बात नहीं बताता। यदि वह ऐसा करे तो उसी क्षण उसकी स्वाभाविक शक्तियाँ और प्रभाव समाप्त हो जायेंगे और वह उस पहलू में स्वयं को बिल्कुल कमजोर पायेगा। सफलता, भले ही वह सांसारिक हो अथवा आध्यात्मिक शक्तिशाली, स्थायी स्वभाव वाले, शांत और पवित्र विचारों से न हटने वाले व्यक्ति की दासी है। प्रकृति की सर्वोच्च शक्तियां (भूकम्प आदि) पल-भर में शहरों-के-शहर नष्ट-भ्रष्ट कर डालती हैं और शोरोगुल भी नहीं मचाती हैं।

श्रेष्ठ बुद्धि वाला व्यक्ति अपने काम को चुपचाप करता है। यदि तुम शक्तिशाली, योग्य तथा स्वयं पर विश्वास करने वाले व्यक्ति बनना चाहते हो तो मौन के महत्व को सीखो। अपने बारे में बहुत सी इधर-उधर की बातें मत बनाओ। सारा संसार जानता है कि बातूनी व्यक्ति कमजोर और खोखला होता है, केवल ढोल की पोल होता है। कहावत है कि थोथा चना बाजे घना। संसार ऐसे व्यक्ति को अपनी ही प्रशंसा के पुल बाँधने के लिये छोड़ देता है।

जो कुछ भी तुम करना चाहते हो उसके सम्बन्ध में बातें न बनाओ, प्रत्युत काम को आरम्भ करो। काम के सम्पूर्ण हो जाने पर संसार स्वयं ही उसे देख लेगा। तुम दूसरों के काम पर छींटाकशी अथवा नुक्ताचीनी करने में अपनी शक्ति का अपव्यय न करो, प्रत्युत अपने काम को पूर्ण मनोयोग के साथ करना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरम्भ करो। निकृष्ट-से-निकृष्ट कर्म भी यदि साहस और मनोयोग के साथ किया जाय तो वह दूसरों के कामों पर छींटा-कशी करने से श्रेष्ठ है। तुम दूसरों के कामों पर उस समय ही नुक्ताचीनी कर सकते हो जबकि तुम अपने काम की ओर से लापरवाही दिखाते हो।

यदि दूसरे व्यक्ति भद्दे पन और अयोग्यता से काम कर रहे हों तो तुम स्वयं उस काम को भली प्रकार करके उनकी सहायता करो तथा उनको सिखलाओ। दूसरों को भला-बुरा न कहो और न ही उनके बुरा-भला कहने की ओर ध्यान दो। जब तुम पर या तुम्हारे व्यक्तित्व पर सचमुच ही आक्रमण किया जाय तब भी तुम शान्त रहो।

इस प्रकार तुम अपने ऊपर विजय प्राप्त कर लोगे और मुँह से एक शब्द निकाले बिना ही तुम दूसरों को सीख दे सकोगे।

किन्तु वास्तविक मौन केवल मुँह का बन्द रखना ही नहीं वरन् हृदय को भी शान्त रखना है। मुँह को बन्द रखना और दिल-ही दिल में कुढ़ते रहना कमज़ोरी को दूर करने तथा सच्ची शक्ति प्राप्त करने का माध्यम नहीं है। मौन केवल उसी समय सचेष्ट हो पाता है जबकि वह हृदय तथा मस्तिष्क दोनों पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करे। यह मौन आन्तरिक शान्ति या मन की शान्ति होना चाहिए।

मनुष्य जितना ही अपने उपर विजय पाता है उतना ही वह विस्तीर्ण, उन्मुक्त तथा स्थायी मौन प्राप्त करता जाता है। जब तक तुम्हारे हृदय में उलझनों और शोक-संतापों का तूफान मचा रहता है, तब तक सच्चा मौन तुम्हें प्राप्त नहीं हो सकता है। जब तक दूसरों की बातें और काम तुम्हें कष्ट देते रहेंगे, तब तक यही समझो कि तुम अभी तक कमज़ोर, अपवित्र और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्म-संयम से रिक्त हो। अतः आत्म-प्रदर्शन, अभिमान, स्वार्थ और व्याकुलता को जन्म देने वाले विचारों को अपने हृदय से निकाल डालो, ताकि किसी की भी नुक्ताचीनी तुम्हारे विचारों को न डिगा सके, कोई भी उलझन तुम्हें बेचैन न कर सके।

जिस प्रकार किसी एक मजबूत मकान को न तो तूफान ही हिला सकता है और न ही उसके रहने वालों को वह बेचैन कर सकता है, इसी प्रकार उस व्यक्ति को, जो महानता के दुर्ग में बैठा हुआ है कोई भी बाह्य बुराई नहीं हिला सकती। वह आत्म-संयम और मौन के द्वारा अपने हृदय की शान्ति को स्थायी बनाये रखता है। आत्मा पर विजय पा लेने वाला व्यक्ति ही ऐसी श्रेष्ठ स्थिति को प्राप्त करता है।

ऐसा व्यक्ति ईर्ष्या, बदनामी, घृणा और बेचैनी की पहुँच से, जिसे लोग गलती से प्रसन्नता के नाम से पुकारते हैं, दूर रहता है। ये बात उसे कष्ट नहीं पहुँचाती हैं।

साधारणतया मनुष्यों की यह धारणा है कि शोर-गुल किये बिना कोई काम हो ही नहीं सकता है। ऐसा विचार बना लेना बेहद मूर्खता है। बातूनी व्यक्ति चुपचाप काम करने वाले को निकम्मा और व्यर्थ समझता है। उसके विचार में मौन के अर्थ होते हैं 'कुछ न करना' और शोर मचाने तथा बातें बनाने के अर्थ होते हैं 'बहुत-सा काम करना'। वह सिर्फ लोकप्रियता को ही सर्वशक्ति समझता है, किन्तु शांति और मनोयोग से काम करने वाला ही सही अर्थों में वास्तविक और प्रभावशाली कार्यकर्त्ता होता है। उसका काम फल देने वाला और मनुष्यों को पाठ पढ़ाने वाला होता है। जिस प्रकार प्रकृति चुपचाप तथा रहस्यमय ढंग से मिट्टी तथा वायु के संयोग से वृक्षों में कोमल पत्ते, सुन्दर फूल और रस-भरे फल ही नहीं अपितु अनगिनत विलक्षणताएँ उत्पन्न कर देती है, वैसे ही शान्त रहने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाला पुरुष अपनी मौन शक्ति के प्रभाव से लोगों के रहन-सहन तथा आचार-विचार को बदल देता है, और जनसाधारण में एक महान् परिवर्तन को जन्म देता है । वह अपने समय और अपनी शक्ति को व्यर्थ की और कृत्रिम बातों में उलझा कर नष्ट नहीं करता, प्रत्युत उसकी आंतरिक वास्तविकता तक पहुँच जाता है और फिर उसकी वास्तविकता को पहिचानकर काम करता है तथा समय आने पर उसके रहस्यमय और अमर प्रयत्नों के फल संसार को सुख पहुँचाने के साधन बनते हैं । किंतु व्यर्थ की बकवास करने वाले व्यक्ति के शब्द शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं । इसका कारण यह है कि अर्थहीन शब्दों की खेती में कभी भी फल नहीं लग सकते ।

मानसिक शक्तियों की रक्षा करने से शारीरिक शक्तियों की भी रक्षा होती है । शान्त और मौन रहने वाला व्यक्ति हमेशा दीर्घ आयु पाता है । उसका स्वास्थ्य हमेशा अच्छा रहता है । स्थिर स्वभाव रखने से शारीरिक स्वास्थ्य पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ता है । इंगलिश जाति में जार्ज फोक्स के अनुगामी सबसे अधिक स्वस्थ, दीर्घायु और सफल रहे हैं, क्योंकि इस मत के व्यक्ति दुनिया के शोरगुल से अलग रहते हैं, व्यर्थ की बक-वास से दूर रहते हैं और उनका जीवन पवित्रता से भरा होता है । वे शान्ति का जीवन व्यतीत करते हैं, उनमें आत्म-प्रदर्शन तथा कृत्रिमता नहीं होती । वे साधारणतया मौन रहते हैं और उनके तमाम उत्सव आदि भी इसी नियम पर आधारित होते हैं कि मौन में शक्ति है ।

मौन शक्तिशाली इसलिये होता है कि वह आत्म-संयम पर आधारित है । मनुष्य जितनी सफलता के साथ अपने ऊपर अधिकार पा लेता है वह उतना ही अधिक शान्त हो जाता है, और जब वह पवित्र जीवन-यापन करने योग्य बनकर शारीरिक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनन्द के धन्धे से होकर निकल जाता है, तब वह संसार के बाह्य झगड़ों से निकलकर आंतरिक शान्ति प्राप्त कर लेता है।

ऐसी दशा में उसके कथन का कुछ अर्थ होता है, उसके शब्दों में शक्ति होती है। जब वह शान्त रहता है तो उसके मौन में भी वैसी ही अपितु उससे भी ज्यादा शक्ति होती है। वह कभी भी ऐसी बात नहीं करता जिसका परिणाम शोक और दुःख हो। वह ऐसा कोई काम नहीं करता जिसका परिणाम अफसोस और दुःख हो। वह प्रत्येक बात को खूब सोच-समझकर कहता है। उसके काम पूर्णतया पवित्र होते हैं। उसका आचरण शुद्ध होता है, भावनाएँ उच्च होती हैं और उसके दिन आनन्द से भरे होते हैं।

मौन रहने का अभ्यास करके तो देखो। पूर्ण आनन्द के मार्ग पर चलना तो शुरू करो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्यारहवां पथ

एकान्त

"उस उत्तर को, जो केवल तुम्हें आन्तरिक शान्ति ही दे सकती है, बाह्य वस्तुओं में पाने का व्यर्थ प्रयत्न क्यों करते हो ? स्वर्ग को जरा पास से देखने के लिए कष्ट उठाकर ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों पर क्यों चढ़ते हो ? ध्यान में मग्न योगी लोग तो गहरी घाटियों में बैठे हुए भी उन सितारों को दोपहर के समय भी देख लेते हैं जो आने वाली रात को अधिकाधिक सुन्दर बनाते हैं।"
—वर्ड्सवर्थ

"एकान्त में जब इच्छाएँ शान्त रहती हैं तब तुम अपने दिल में महानता का धन भर लो।"
—वर्ड्सवर्थ

मनुष्य का वास्तविक जीवन तो उसके अन्दर ही निहित है, भले ही वह दिखाई न दे। वह जीवन उसकी आत्मा से सम्बन्ध रखता है और वहीं से आन्तरिक प्रेरणा पाता है, बाह्य वस्तुओं से नहीं। बाहर की वस्तुएँ तो उसकी शक्तियों को काम करने के साधन हैं; किन्तु उस शक्ति को प्राप्त करने के लिये आन्तरिक शान्ति का सहारा अवश्य लेना पड़ता है।

मनुष्य इस शान्ति को क्षणिक आनन्द की चहल-पहल में जितना ही समाप्त करना चाहता है, जितना ही वह बाह्य वस्तुओं के झंझटों में अपना जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न करता है, उतना ही वह दुःख और कष्ट भोगता है। जब उसके वे दुःख और कष्ट उसकी सहन-शक्ति से बाहर हो जाते हैं तो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर वह मानसिक अशान्ति से घबराकर सच्ची शान्ति की ओर बढ़ता है, और एकान्त-प्रदायक मंदिर में प्रविष्ट होता है।

जिस प्रकार शरीर फलकर अथवा चोट खाकर नहीं रह सकता, उसी प्रकार आत्मा केवल इच्छाओं के बल पर अधिक देर नहीं रह सकती है। शरीर को यदि नियमित रूप से भोजन नहीं मिले तो वह कमजोर हो जाता है और फिर भूख और प्यास के कष्ट उठाकर भोजन के लिए चिल्लाने लगता है। आत्मा की भी यही दशा है। उसे भी नियमित रूप से एकान्त में उचित और पवित्र विचारों का भोजन मिलना चाहिए, वरना उसकी सजीवता तथा क्रियाशीलता जाती रहेगी और अंत में वह समय आयेगा कि वह आध्यात्मिक रूप से तड़फड़ा उठेगी। ज्ञान और हार्दिक शान्ति की इच्छा ही भूखी और प्यासी आत्मा की पुकार है।

आध्यात्मिक भूख का उपचार न करने का परिणाम दुःख और विपत्तियों के रूप में प्रकट होता है। शान्ति पाने की इच्छा करना ही भूखी आत्मा की पुकार है। 'अंजील' में वर्णित अयोग्य लड़के की कहानी, कि जब वह भूख से मरने लगा तो फिर उसे बाप का घर याद आया, एक आत्मा ही इस दशा को भली-भाँति प्रस्तुत करती है।

इच्छाओं के माधुर्य में आत्मा को पवित्र जीवन प्राप्त नहीं होता, प्रत्युत यदि उसने कुछ पा भी लिया हो तो वह भी खो जाता है। इच्छाएँ तो कभी मधुर हो ही नहीं सकतीं। एक इच्छा के पूरा हो जाने पर उससे भी उग्र एक और इच्छा आ कर खड़ी हो जाती है और मनुष्य को चैन से नहीं रहने देती। आन्तरिक प्रसन्नता और आन्तरिक विचार, आन्तरिक मेल-मिलाप और काम-काज थकावट पैदा करते हैं। इनको दूर करने के लिए एकान्त की आवश्यकता होती है ताकि थकावट

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूर हो जाय। इसी प्रकार आत्मा की थकान दूर करने के लिये एकान्त की आवश्यकता होती है। जिस प्रकार मनुष्य के शरीर को स्वस्थ रखने के लिये नींद की परमावश्यकता होती है, उसी प्रकार आत्मा को स्वस्थ रखने के लिए एकान्त परमावश्यक है। पवित्र विचार, जो एकान्तवास से उत्पन्न होते हैं, आत्मा के लिए उतने ही आवश्यक होते हैं, जितने कि शरीर के लिये व्यायाम। जिस प्रकार नींद लेने और व्यायाम करने के बिना शरीर ठीक नहीं रह सकता, उसी प्रकार आत्मा भी एकान्त और शान्ति के बिना ठीक नहीं रह सकती। आध्यात्मिक जीवन को नियमित रखने के लिये यह आवश्यक है कि मनुष्य कभी-कभी क्षण-भंगुर वस्तुओं से भरे इस क्षण-भंगुर संसार से अलग होकर आध्यात्मिक एकान्त में आरम्भिक और अलौकिक सत्य तक पहुँचने का प्रयत्न करे, वरना वह अपनी पवित्रता और शान्ति को स्थायी न रख सकेगा।

इसी विश्वास पर चलने से जो आत्मिक शान्ति प्राप्त होती है। उसका कारण यह है कि उसका विश्वास,एकान्त का समर्थन करता है। हृदय को एकाग्र करके और सांसारिक उलझनों की चिन्ता को छोड़कर जिस समय धार्मिक रीति-रिवाज किये जाते हैं, उस समय मनुष्य साधारणतया वही काम करता है जिसको उसने अभी तक सार्वजनिक रूप से नहीं सीखा, अर्थात् वह हृदय को एकाग्र करके कभी-कभी आध्यात्मिक शान्ति की ओर अग्रसर होना तथा कुछ देर के लिये पवित्र विचारों में खो जाना नहीं जानता।

जिस व्यक्ति ने समय-समय पर एकान्त में बैठकर अपनी आत्मा को काबू में रखना और हृदय को पवित्र बनाना नहीं सीखा, किन्तु जिसके हृदय में यह उमंग पैदा होती रहती है कि सांसारिक वस्तुओं से बढ़कर कोई श्रेष्ठ पदार्थ उसे प्राप्त हो,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा व्यक्ति ही धार्मिक कृतियों की आवश्यकता अनुभव करता है; किन्तु जो व्यक्ति अपनी आत्मा पर विजय प्राप्त करने के लिए संघर्ष करता तथा एकान्त में बैठकर अपनी निकृष्ट भावनाओं से युद्ध करता है, और जो पूरे मनोयोग के साथ अपने हृदय को पवित्र रास्ते पर चलने के लिए बाध्य करता है, उस व्यक्ति को न तो किसी धार्मिक पुस्तक की आवश्यकता रहती है, न ही पादरी, पुरोहित या पीर की, न मन्दिर की, न किसी मस्जिद की, गिरजे की; क्योंकि मंदिर, मस्जिद और गिरजाघर धर्मात्माओं के आनन्द लेने के लिए नहीं वरन् पापात्माओं को सत्यात्मा बनाने और उन्हें सांसारिक गंदगी से ऊपर उठाने के लिये हैं।

एकान्त में बैठकर मनुष्य अपनी शक्ति एकत्रित करता है, जिससे वह जीवन की कठिनाइयों और विपत्तियों का सामना कर सके। एकान्त ही में वह उनको समझने और उन पर विजय पाने के लिये आवश्यक ज्ञान प्राप्त करता तथा उनसे दूर रहने के लिये महानता बटोरता है। जिस प्रकार किसी मकान की नींव भले ही धरती के अन्दर छिपी हुई दृष्टिगत हो, तब भी मकान उसी नींव के सहारे खड़ा रहता है, उसी प्रकार मनुष्य एकान्त में बैठकर जब खूब सोच-विचार करता है तो उसे तत्संबन्धी समस्त ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

मनुष्य एकान्त ही में अपने-आप को पहचानने के योग्य बनता तथा अपनी वास्तविकता को समझता है। वह अपनी शक्ति और अपनी आंतरिक योग्यता का अनुमान लगाता है। वैसे तो सांसारिक संघर्ष, झगड़े-टंटों और इच्छा-आकांक्षाओं के बढ़ते प्रभाव में आत्मा की पुकार सुनाई ही नहीं देती, फिर भी यह सर्वमान्य सत्य है कि कोई भी मनुष्य एकान्त के बिना आध्यात्मिक उन्नति नहीं कर सकता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे मनुष्य भी हैं जो अपने क्रियाकलापों की पूरी-पूरी छान-बीन करने से घबराते हैं और अपने आन्तरिक रूप को प्रकाश में लाने से भय खाते हैं। वे डरते हैं कि उन्हें जब एकान्त में अपने विचारों के साथ अकेला रहना पड़ता है तो वहाँ भी उनके क्षणिक आनन्द का भूत उनकी आँखों के सामने नाच उठता है। यही कारण है कि वे लोग ऐसे ही स्थानों पर आते-जाते हैं जहाँ पर भोग-विलास की प्रधानता रहती है और सत्य पर सदा परदा पड़ा रहता है। इसके विपरीत जो व्यक्ति सत्य को प्यार करता है, जो सत्य की खोज में लगा हुआ है, वह साधारणतया एकान्तप्रिय होता है। वह अपनी आन्तरिक दशा को भली-भाँति देखने का प्रयत्न करता है और खेल-कूद, शोर-संघर्ष से दूर भागता है। वह वहाँ जाना चाहता है जहाँ वह अपने हृदय में सत्य के माधुर्य को उतार सके।

लोग साधारणतया मेल-मिलाप बढ़ाने के लिये दूसरों के पीछे मारे मारे फिरते हैं और ऐश करने के लिये नये-नये सामान तलाश करते हैं, किन्तु वे शाश्वत शान्ति से अपरिचित रहकर भोग-विलास के पीछे भटकते फिरते हैं। फिर भी उन्हें वास्तविक शान्ति कहीं नहीं मिलती। वे भिन्न-भिन्न प्रकार के मन-बहलाव के साधन इकट्ठे करते हैं, फिर भी उनकी बेचैनी और तृष्णा कम होने की अपेक्षा बढ़ती चली जाती है। कैसे भी कह लीजिये, ऐसे व्यक्ति निराशा और बेचैनी से कभी भी नहीं बच सकते।

जीवन के अथाह सागर में इच्छा-आकांक्षाओं की खोज में बहते हुए मनुष्य संघर्षों के तूफान में फँस जाते हैं। स्थान-स्थान पर उन्हें धक्के मिलते हैं, कष्ट और आपत्तियाँ सहन करते-करते वे सुरक्षा की उस मंजिल की ओर भागते हैं जो स्वयं उन्हीं की आत्मा में निहित होती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब तक मनुष्य सांसारिक पचड़ों ही में लगा रहता है, तब तक वह अपनी शक्ति को व्यर्थ की बातों में खर्च करते रहने के कारण आध्यात्मिक दृष्टिकोण से काफी कमजोर हो जाता है। अत: आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करने के लिए उसे एकान्त में रहकर मनन करना पड़ता है और ऐसा करना उसके लिये बहुत आवश्यक है। इस दशा में लापरवाही करने से जीवन का पवित्रतम उद्देश्य प्राप्त नहीं होता, और यदि मान लिया कि कुछ हुआ भी, तो वह भी शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। वह हृदय की गुप्त और रहस्यमयी प्रकृतियों को न तो समझ सकता है और न ही उन पर नियंत्रण पा सकता है।

उसे वे पाप ही नहीं लगते वरन् सत्य दिखाई देते हैं। उन व्यक्तियों के अतिरिक्त, जो निःसन्देह धर्मात्मा होते हैं, बहुत से लोग धोखा खाकर इनका शिकार बनते रहते हैं।

सच्ची महानता उस व्यक्ति में होती है जो हार्दिक विनम्रता के साथ एकान्तवास करता हुआ अपने आंतरिक विचारों को पाप-पुण्य की कसौटी पर कसता रहता है और क्रियाकलापों पर सन्देहात्मक दृष्टिकोण रखता है, अपनी इज्जत करता है, अर्थात् अपने हृदय की कमजोरियों की आलोचना-प्रत्यालोचना करता रहता है कि कहीं उसके ये विचार उसे पाप की ओर न घसीट लें। साथ-ही-साथ वह दूसरी ओर यह विश्वास भी रखता है कि वह उन पर नियन्त्रण करके ही रहेगा।

जो व्यक्ति सर्वदा ही अपनी इच्छा-आकांक्षाओं के माधुर्य में खोया रहता है वह निराशा और भ्रम में पड़ा रहता है, क्योंकि जहाँ पर भोग-विलास की ही प्रधानता हो वहाँ आध्यात्मिक जीवन कहाँ। जिस व्यक्ति ने अपना सारा जीवन सांसारिक धन्धों के झंझटों में ही व्यतीत किया है और केवल बाह्य वस्तुओं के क्षण-भंगुर दृश्य से ही मतलब रखा है, जिसने कभी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी एकान्त में बैठकर अपने जीवन के मूल, अमर, अविनाशी उद्देश्य पर ध्यान नहीं दिया, वह व्यक्ति कभी भी सच्चा ज्ञान और वास्तविक महानता प्राप्त नहीं कर सकता।

ऐसा व्यक्ति इन सब वस्तुओं से बिल्कुल अछूता रहता है। वह संसार की कुछ भी सहायता नहीं कर सकता, और उसकी उन्नति में भी कोई भाग नहीं ले सकता, क्योंकि वह व्यक्ति कुछ दे ही नहीं सकता। उसका आन्तरिक धन बिल्कुल समाप्त हो जाता है। किन्तु जो व्यक्ति एकांत की अभिलाषा इसलिए रखता है कि वह सत्य को खोज सके; जो व्यक्ति अपनी इन्द्रियों और इच्छाओं को नियन्त्रित कर सकता है वह निःसन्देह प्रतिदिन ज्ञान और महानता का भण्डार अपने ऊपर भरता है। ऐसा व्यक्ति सचाई से भरपूर हो जाता है। वह संसार को ऊँचा उठाने में सहायता दे सकता है क्योंकि उसका आन्तरिक स्रोत भरा हुआ होता है।

जब मनुष्य आन्तरिक और आध्यात्मिक सचाइयों पर ध्यान देना शुरू करता है, उस समय वह पूर्ण ज्ञान और शक्ति प्राप्त करता है। वह अपने हृदय को एक अलौकिक प्रकाश पाने के लिए फूल की तरह खुला रखता है। वह उसके जीवन देने वाले तत्वों को अपना लेता है। वह ज्ञान के अमर स्रोत पर पहुँचता है, और उसके हार्दिक शान्ति देने वाले जल से अपनी प्यास बुझाता है। ऐसा व्यक्ति एकान्त में बैठकर और एकाग्र मन से विचार कर एक ही घंटे में सचाई का जितना ज्ञान प्राप्त कर लेता है उतना ज्ञान साल-भर तक किताबें पढ़ने के पश्चात् भी प्राप्त नहीं हो सकता।

जीवन अनन्त है, ज्ञान अपार है, इसकी कोई सीमा नहीं। इसका स्रोत अमर है। जो व्यक्ति अपनी आत्मा की गहराई तक पहुँच जाता है वही स्वर्गीय ज्ञान के स्रोत से अमृत-पान करता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानी पुरुष वही होता है जो जीवन के शाश्वत सत्य के साथ सम्पर्क रखता है और अमरत्व के अविनाशी स्रोत से अपनी प्यास बुझाता रहता है। ज्ञान का स्रोत कभी समाप्त नहीं हो सकता है, क्योंकि उसका उद्गम-स्थान हैं सार्वभौम सत्य का स्रोत। अतः महान् कार्य सर्वदा ही चेतना प्रदान करने वाले और रस देने वाले होते हैं।

ज्ञानी पुरुष जितना अधिक ज्ञान दूसरों को देता हैं उतना ही अधिक वह उन्नतशील बनता है। कार्य की पूर्ति हो जाने पर उतना ही उसका मस्तिष्क परिपक्व होता है और उसकी शक्ति की सीमा अधिकाधिक विस्तृत होती जाती है। इस दशा में वह परम ब्रह्म की दिव्य वाणी को सुनता है और तब उसके सामने आशा तथा निराशा में कोई भी अन्तर नहीं रहता। उसे अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिये किसी बाहरी सहायता की आवश्यकता नहीं रहती है। दूसरे शब्दों में, वह जीवन के उस अलौकिक स्रोत से सम्बन्धित हो जाता है जो प्रत्येक सद्-गुण का उद्गम है।

एक ज्ञानी और एक साधारण व्यक्ति में अन्तर यह होता है कि ज्ञानी पुरुष तो आध्यात्मिक सत्य में विश्वास रखता है, जबकि एक साधारण पुरुष बाहरी कृत्रिमता और बनावटी जीवन में ही मग्न रहता है तथा शारीरिक तृप्तियों के पीछे ही भागता रहता है।

साधारण पुरुष सर्वदा ही पुस्तकों का आश्रित रहता है, जबकि ज्ञानी पुरुष अपने व्यक्तित्व पर भरोसा रखता है। पुस्तकीय ज्ञान वहीं तक अच्छा होता है जहाँ तक उसकी आव-श्यकता होती है। पुस्तकें महानता का उद्गम नहीं हैं वरन् महानता का उद्गम जीवनयापन में है जो प्रयत्न, अभ्यास और अनुभव से प्राप्त होता है। पुस्तकों से हमें जानकारी अवश्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त होती है, किन्तु वे ज्ञान नहीं दे पाती हैं। ज्ञान तो अनवरत प्रयत्नों के फलस्वरूप ही प्राप्त किया जाता है।

उस व्यक्ति का जीवन, जो केवल पुस्तकों ही पर विश्वास रखता है तथा अपने अन्तर में झाँक कर नहीं देखता, केवल दिखावटी होता है। ऐसे व्यक्ति के सद्गुण शीघ्र ही समाप्त हो जाते हैं, उसे आन्तरिक ज्ञान प्राप्त नहीं होता है। बाहरी व्यवहार में भले ही वह कितना ही चतुर क्यों न हो, फिर भी उसका पुस्तकीय ज्ञान अधिक समय तक उसका साथ नहीं देता है और एक समय वह आता है जबकि वह उस ज्ञान के आधार पर सपने ही देखता रह जाता है। उसके किसी भी काम में जीवन का वह अलौकिक माधुर्य तथा पवित्रता की वह चेतना नहीं रहती है।

ऐसा व्यक्ति अपने-आपको आशा के अविरल स्रोत से कहीं दूर पाता है। वह जीवित सत्य को छोड़कर अन्धकार और अज्ञान की ओर भागता रहता है। पुस्तकीय ज्ञान—अपूर्ण है, जबकि अनुभव से अर्जित ज्ञान पूर्ण होता है।

महानता और प्रौढ़ता एकान्त ही में पनपती, बढ़ती और पूर्णता को प्राप्त होती है। साधारण-से-साधारण व्यक्ति भी जब किसी श्रेष्ठ उद्देश्य को सामने रखकर तथा अपनी समग्र विचार-शक्ति और निश्चय आदि को एकाग्र करके एकान्त में बैठकर उस पर विचार करता है, तो वह निःसन्देह सफलता प्राप्त करके परिपक्व मस्तिष्क पाता है। जो व्यक्ति सांसारिक आनन्दों को त्याग देता है, जो यश और प्रशंसा की चिन्ता नहीं करता है, जो अज्ञात रहकर भी काम करता रहता है, जो मनुष्यमात्र की भलाई हेतु किसी उच्च उद्देश्य को पूर्ण करने के लिये एकान्त में बैठकर चिन्तन-मनन करता है वह व्यक्ति महात्मा, सिद्ध, पीर अथवा पैगम्बर बनता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो व्यक्ति मौन रहकर अपने हृदय को मधुर बनाता है, और अपने हृदय के अज्ञान को ज्ञान, सौन्दर्य और हित-साधन के धागे में बाँधता है तथा एकान्तवास में पूर्ण सत्य को जानने का प्रयत्न करता रहता है, वह व्यक्ति अन्तरात्मा की दिव्य एवं मधुर आवाज में लीन हो जाता है।......वह परम ब्रह्म के आनन्द का अनुभव करता है। प्रौढ़ता को प्राप्त सभी व्यक्तियों की यही दशा होती है। प्रौढ़ता एकान्त का फल है जो अत्यन्त लुभावना तथा शान्ति प्रदान करने वाला है। जिस व्यक्ति की आँखें खुली हुई हैं और जिसके कान सुनने के लिए हैं किन्तु फिर भी जो संसार के संघर्ष में फँसा हुआ इस सुस्वादु फल के दर्शन न कर सके और न ही इस सत्य को समझ सके, उसको भी कभी-कभी मौन के माध्यम से इसके दर्शन हो ही जाया करते हैं।

मनुष्य के अस्तित्व ही के अन्दर धूमिल वातावरण के बीच आशा की झलक होती है, उसके चारों ओर कल्पनाएँ मचलती हैं, विचार पनपते हैं और इसी अमर बिन्दु के चारों ओर उसका जीवनचक्र घूमता रहता है। कहा जाता है कि सैंट पाल कट्टर पक्षपाती और तथाकथित धर्मों पर कीचड़ उछालने वाला व्यक्ति था। वह तीन वर्ष तक जंगलों में एकाकी रहा और फलस्वरूप अत्यन्त दयालु तथा प्रेम का पुजारी बनकर संसार के सामने आया।

राजकुमार सिद्धार्थ (गौतम) संसार के वैभव-विलास में पले, किन्तु लगातार छ वर्ष तक एकान्त वन में अपनी भावनाओं से संघर्ष करके एव अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों पर चिन्तन-मनन करने के पश्चात् शान्ति तथा महानता के ऐसे स्रोत बनकर विश्व-भर में बहे जिसके अमृत-जल से युग ने अपनी तड़पती हुई आत्मा को शान्ति दी। लावजी (चीन का एक महात्मा)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक साधारण संसारी था। उसने ज्ञान की खोज में एकान्त वास लिया और इस प्रकार जहाँ उसने सत्य का प्रतिपादन किया वहाँ वह संसार के ज्ञान का आलोक-गृह बना। मसीह, जो एक अनपढ़ व्यक्ति थे, वर्षों पहाड़ों पर एकाकी रहने के पश्चात् तथा परमात्मा के प्रेम तथा ज्ञान में तन्मय होकर समस्त मानव-जाति के मुक्तिदाता बन सके। गुरु नानक जंगल और श्मशान में रहे और वाहगुरु के दीवाने भक्त बन गये।

ये सारे महापुरुष स्वर्गीय ज्ञान की सर्वोच्च सीमा पर पहुँचने के पश्चात् भी साधारणतया एकान्तप्रिय थे। अपने व्यस्त जीवन में से वे कुछ देर के लिये एकान्त-सेवन का लाभ अवश्य उठाते थे। महापुरुष-से-महापुरुष भी यदि अपनी आन्तरिक शक्ति को लगातार बढ़ाने और सजीव रखने के लिए एकान्त-वास का सेवन न करें, तो वे निःसन्देह अपनी आत्मिक शक्ति की श्रेष्ठता खो बैठते हैं एवं अपने चारित्रिक प्रभाव को गँवा देते हैं।

इन महापुरुषों ने अपनी विचारधाराओं और जीवन को अपनी आन्तरिक शक्तियों के साथ जोड़कर एवं अपने व्यक्तित्व तथा अपनी इच्छाओं को परमात्मा की इच्छाओं के अधीन करके शाश्वत आध्यात्म-शक्ति प्राप्त का और सार्वजनिक प्रगति की दिशा में सर्वोपरि रहे।

महापुरुषों की विलक्षण प्रगति कोई अलौकिकता अथवा रहस्य नहीं है ,वरन् प्रकृति का नियम ही ऐसा है। उस नियम में कोई भेद नहीं है, भेद तो केवल उसे समझने में है। सार्वभौम सत्य और नेकी को सर्वोपरि मान लेने से तथा उन्हें अपने जीवन में उतार लेने से प्रत्येक मनुष्य एक महापुरुष बन सकता है। प्रत्येक कवि, चित्रकार, सन्त और साधु परमात्मा का दूत है और उस परमात्मा के सन्देश की वस्तुस्थिति की न्यूनता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अधिकता उसके दूत की भावनाओं में पनपते स्वार्थ की न्यूनता अथवा अधिकता पर निर्भर रहती है। उसकी भानवाओं में जितना ही अधिक स्वार्थ रहता है उतना ही धुँधला उसका काम अथवा उसकी शिक्षा होती है। स्वार्थ से रिक्त भावनाएँ परिपक्व मस्तिष्क की शक्ति-स्रोत होती हैं। इस प्रकार का निष्काम भाव एकान्त में ही आरम्भ होता है, बढ़ता है और पूर्णता को पहुँचता है। यदि कोई व्यक्ति सांसारिक धन्धों में ही लगा रहे तो वह न तो अपनी आध्यात्मिक शक्ति को इकट्ठा कर सकता है और न ही किसी एक लक्ष्य पर पहुँच सकता है। यद्यपि आध्यात्मिक शक्ति के प्राप्त हो जाने पर मनुष्य समस्त दशाओं में, यहाँ तक कि संसार के संघर्ष में, डाँवाडोल नहीं हो सकता, तथापि ऐसी शक्ति वर्षों तक लगातार एकान्त साधन करने से ही आ सकती है।

मनुष्य का वास्तविक उद्देश्य तो एकान्त और मौन में है। उसके अन्दर जिस मात्रा में वास्तविकता और सार पदार्थ होते हैं, उसका स्रोत भी वही होता है। यह सत्य है कि उसका वर्तमान स्वभाव दो प्रकार का है, अतः बाहरी कामों में उसका लगाव भी आवश्यक है। इस संसार में रहते हुए वैसे एकान्त की आवश्यकता है। वास्तविक जीवन तो यह है कि इन्सान एकान्त में शक्ति और महानता बटोरता रहे और फिर सांसारिक कामों को योग्यता के साथ पूरा करने में इनको व्यय करे। जिस प्रकार एक व्यक्ति काम से हारा-थका शाम को घर वापस आकर विश्राम करने पर दूसरे दिन काम करने की शक्ति पाता है, उसी प्रकार जो मनुष्य संसार के काम-धन्धों में पिसना नहीं चाहता, उसे चाहिये कि वह संसार के शोरगुल-संघर्ष आदि से निकलकर थोड़े समय के लिये एकान्त और मौन के मन्दिर में विश्राम करे। जो व्यक्ति इस प्रकार अपने दिन का कुछ भाग

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौन और एकान्त में व्यय करता है, उसका जीवन शक्तिशाली और आदर्श बन जाता है। एकान्त, आध्यात्मिक शक्ति को बनाये रखने वालों के लिये है, या उनके लिये है जो आध्यात्मिक शक्ति पाने के लिये उत्सुक हैं। ज्यों-ज्यों मनुष्य प्रौढ़ता प्राप्त करता जाता है त्यों-त्यों वह एकान्त-प्रिय होता जाता है। वह सत्य का खोज के लिये एकान्तवास करता है और जिसकी खोज में वह लगता है उसे प्राप्त कर लेता है। इसका कारण यह है कि ज्ञान, महानता, सत्यता और शक्ति की प्राप्ति के लिये मार्ग सर्वदा खुला हुआ है और यदि सच पूछिये तो यह मार्ग हमेशा ही खुला रहता है।

ऐ मनुष्य, कभी-कभी तू एकान्त में जाकर तो देख! प्रकृति के समस्त रहस्य तेरे सामने खुले हुए दिखाई देंगे, क्योंकि बुद्धिमान व्यक्ति हरे-भरे वृक्ष के प्रत्येक पत्ते में भगवान् के अलौकिक सौन्दर्य को देखता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारहवाँ पथ

आत्म-विश्वास

"बेखटके अकेले रहो। अपना आदर आप करो और देखो कि तुम्हारी आत्मा की क्या दशा है?......"

—जार्ज हर्बर्ट

"जिसका हृदय ज्ञान के आलोक से प्रकाशित है वह अपने हृदय के केन्द्र-बिन्दु में अपने को एकाग्र करके दिन के प्रकाश का आनन्द उठा सकता है।"

—मिल्टन

आनन्दमय जीवन के लिए अपने-आप पर विश्वास रखना अत्यन्त आवश्यक है। शान्ति के लिए शक्ति और सुरक्षा के लिए दृढ़ता चाहिये। यदि तुम स्थायी आनन्द के भूखे हो तो ऐसी वस्तुओं का सहारा न लो जो किसी समय भी तुमसे छीनी जा सकती हैं।

जब तक मनुष्य अपने अन्दर के उस केन्द्र-बिन्दु को प्राप्त नहीं कर लेता है जिस पर वह ठहर सके, जीवन को चला सके और जिससे उसे शान्ति मिल सके, तब तक वह वास्तविक जीवन में नहीं आता है। यदि वह परिवर्तनशील पदार्थों पर विश्वास रखता है तो उसका जीवन भी डावाँडोल रहता है। यदि वह ऐसे पदार्थों के बल पर आगे बढ़ रहा है जो किसी भी क्षण उससे छीने जा सकते हैं, तो वह बार-बार गिरता है और चोट खाता है। यदि वह क्षण-भंगुर पदार्थों में ही शान्ति की खोज करता है, तो उसके पास सब-कुछ होते हुए भी वह वास्तविक शान्ति से वंचित रहता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य को अपने पैरों पर खड़े होना चाहिये। वह न तो दूसरों का आसरा ढूँढे और न ही किसीकी दया का अभिलाषी बने। न वह जातीय सम्मान की आशा रखे, न किसीसे किसी वस्तु के माँगने पर प्राप्त होने की। न वह इच्छा करे, न शिकायत करे, न अफसोस प्रकट करे, वरन् वह अपनी आन्तरिक सत्यता का सहारा लेकर अपने हृदय की ग्रन्थियों ही में सच्ची शान्ति तथा आनन्द को ढूँढने का प्रयत्न करे।

यदि मनुष्य को अपने अन्दर ही शान्ति न मिली तो फिर और किस स्थान पर मिलेगी? यदि वह अपने साथ अकेले रहने से डरता है तो फिर अन्य साथियों की संगत से उसे क्या लाभ होगा? यदि वह अपने ही विचारों के संसार में रहकर प्रसन्नता प्राप्त नहीं कर सकता है, तो दूसरों से सम्बन्धित रहकर वह कष्ट एवं आपत्तियों से कैसे बच सकेगा?

जिस मनुष्य को अपने अन्दर ही खड़ा रह पाने का स्थान प्राप्त नहीं है, तो फिर वह ऐसा स्थान और कहाँ पायेगा जहाँ वह विश्राम कर सके। सभी मनुष्य इस अज्ञान में पड़े हैं कि उनकी प्रसन्नता दूसरे मनुष्यों तथा सांसारिक पदार्थों पर निर्भर है। इस धारणा का परिणाम यह होता है कि वे सर्वदा ही निराशा, रंज, गम और अफसोस के चक्कर में पड़े रहते हैं। जो व्यक्ति यह विश्वास करता है कि उसकी प्रसन्नता दूसरे व्यक्तियों तथा सांसारिक पदार्थों पर निर्भर नहीं है वरन् उसका अटूट स्रोत उसके अपने ही अन्दर है, वह व्यक्ति किसी भी दशा में हो, हमेशा शान्त रहेगा। उसे रंज और कष्ट आदि कभी भी नहीं सता सकेंगे। इसके विपरीत जो व्यक्ति दूसरों पर विश्वास रखता है और दूसरों के व्यवहार में ही अपनी प्रसन्नता का आधार समझता है, जो अपनी शान्ति के लिए दूसरों की सहायता आवश्यक समझता है, ऐसा व्यक्ति

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आध्यात्मिक दृष्टिकोण से निकृष्ट होता है। उसका कोई ठिकाना नहीं, उसका हृदय सांसारिक उलझनों के परिवर्तनों के साथ-साथ हिलता-डुलता रहता है। ऐसा व्यक्ति अशान्ति एवं विपत्तियों के चक्कर में फंसता रहता है। ऐसे व्यक्ति को इस बात का ज्ञान चाहिये कि वह अपनी आत्मा की एकाग्रता का गठन किस प्रकार करे, ताकि वह किसी आलम्बन के बिना ही अपना जीवन-यापन कर सके।

जिस प्रकार एक बच्चा दूसरों की सहायता पाकर अपनी सामर्थ्य के अनुसार चलना-फिरना सीखता है, उसी प्रकार मनुष्य को चाहिये कि वह अपने आध्यात्मिक पैरों पर खड़ा होना सीखे, चिन्तन करना, मनन करना और काम करना सीखे और अपने हृदय की शक्ति के आधार पर उस मार्ग को चुने जिस से वह चलना चाहता है।

इस नश्वर संसार में कदम-कदम पर परिवर्तन, विनाश और भय की काली-काली छायाएँ हैं। इसके विपरीत आध्यात्मिक संसार में कदम-कदम पर सुरक्षा, सृजन और आनन्द के फूल बिखरे हुए हैं। आत्मा स्वयं पूर्ण है। तुम्हारे रहने का वास्तविक स्थान तुम्हारे अन्दर ही है। तुम्हें चाहिये कि अपने अन्दर के उस स्थान का तुम पूरा-पूरा सदुपयोग करो। उस स्थान के तुम स्वयं शासक हो, किन्तु दूसरे स्थान पर तुम शासक नहीं शासित हो। इस बात की चिन्ता मत करो कि दूसरे व्यक्ति इस स्थान का प्रबन्ध किस प्रकार से करते हैं, वरन् तुम यह ध्यान रखो कि तुम अपने हृदय के शासन को निपुणता से चलाते हो अथवा नहीं।

तुम्हारी स्वयं की तथा शेष संसार की भलाई इसी में है कि तुम अपने अन्तःकरण की ओर से बोलो, अपने हृदय को पवित्र रखो, अपनी समझ-बूझ को काम में लाओ, अपनी इच्छा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति को काम में लाकर अपनी भावनाओं को दृढ़ बनाओ, अपने ज्ञान को बढ़ाओ, अपने आध्यात्मिक प्रकाश और आत्म-ज्ञान को समाप्त न होने दो। उसे भावुकता के पचड़ों से दूर रखकर दिन-प्रतिदिन नया वेग प्रदान करते जाओ। सांसारिक झगड़ों और चक्करों को छोड़कर अपने हृदय की गहराइयों में गोता लगाओ। एक सच्चे मनुष्य की भाँति सोचो, एक सच्चे मनुष्य की भाँति काम करो, एक सच्चे मनुष्य की भाँति जीवन-यापन करो, न कि हैवानों की तरह। अपने स्वामी आप बनो। तुम्हारे अन्दर ही ज्ञान का अमर स्रोत है। उसका ज्ञान प्राप्त करके तुम उसी प्रकार उसको केन्द्र बनाकर चलो जिस प्रकार सूर्य को केन्द्र मानकर ग्रह-उपग्रह चलते हैं।

यदि दूसरे व्यक्ति तुम्हारे ज्ञान को अज्ञान कहें तो कहने दो। तुम उनकी चिन्ता न करो। तुम केवल अपने लिए उत्तर-दायी हो, अपने आचरण के जिम्मेदार हो। अतः अपने-आप पर विश्वास रखो।

यदि तुम्हें स्वयं ही अपने ऊपर विश्वास नहीं है तो दूसरे लोग तुम्हारा विश्वास कैसे करेंगे। यदि तुम स्वयं अपने ही लिये सच्चे नहीं हो तो तुम्हें सचाई की मीठी सांत्वना और कहाँ से मिलेगी।

महापुरुष अपने ही व्यक्तित्व की शक्ति पर अकेला खड़ा रहता है। वह अपना मार्ग निडर होकर पूरा करता है और दूसरों से व्यर्थ की क्षमा-याचना नहीं चाहता। वह न अपनी प्रशंसा से फूलता है और न अपनी भर्त्सना से शोकाकुल होता है। वह इन दोनों दशाओं को उस धूल की भाँति समझता है जो मार्ग में चलते-चलते कपड़ों पर पड़ जाती है और तुरन्त झाड़ी जा सकती है। वह अन्य व्यक्तियों की परिवर्तनशील सम्मतियों के अनुसार अपना मार्ग पूर्ण नहीं करता, वरन् अपने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय के ज्ञानालोक को ही अपना पथ-प्रदर्शक बनाता है। अन्य साधारण व्यक्ति साधारणतया अपनी चापलूसी-भरी प्रशंसा के बदले में अपने व्यक्तित्व ही को बेच डालते हैं, जो नहीं होना चाहिये।

जब तक तुम अकेले खड़े नहीं रह सकते हो, अपने पथ-प्रदर्शन के लिये देवताओं, स्वर्गदूतों और मनुष्यों से सहायता की याचना करते हो, अपने आन्तरिक प्रकाश के द्वारा स्वयं अपना पथ-प्रदर्शन नहीं करते हो, तब तक तुम व्यर्थ के झंझटों से स्वतन्त्र नहीं हो सकते, न ही बन्धनों से छुटकारा पा सकते हो और न ही आनन्द-लाभ कर सकते हो।

यह भी ध्यान रखो कि कहीं अभिमान को विश्वसनीय गुण समझने की भूल न कर बैठो। अभिमान की डाँवाडोल दीवार पर खड़े होना गिर पड़ने के समान है, क्योंकि घमण्डी व्यक्ति से बढ़कर परावलम्बी और कोई नहीं होता है। घमंडी व्यक्ति दूसरों की स्तुति पर ही जीवन-यापन करता है और दूसरों से अपनी आलोचनासु नकर मुरझा-सा जाता है। वह झूठी प्रशंसा को दोषरहित समझता है तथा दूसरों की सम्मति से कभी प्रसन्न और कभी दुखी होता रहता है। उसकी प्रसन्नता तो बिल्कुल दूसरों ही की मुट्ठी में बन्द होती है, किन्तु अपने पैरों पर खड़ा होने वाला व्यक्ति अपने नश्वर दंभ पर खड़ा नहीं होता वरन् वह एक अटल सिद्धान्त के आदर्श रूप तथा अपनी आन्तरिक सत्यता पर खड़ा होता है। जब वह उस पर दृढ़ता से खड़ा हो जाता है तो वह आन्तरिक भावनाओं की लहरों या नश्वर स्तुति-गान के तूफानों की ओर वह ही नहीं सकता हैं। यदि कभी उसका चित्त उसके आदर्श केन्द्र-बिन्दु से डिग भी जाता है तो वह तुरन्त ही उसे संभाल लेता है। ऐसे व्यक्ति की प्रसन्नता स्वयं उसी पर निर्भर होती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम अपने हृदय के केन्द्र-बिन्दु की खोज करो और उस पर दृढ़ता के साथ अपने जीवन को ठहरा लो। फिर तुम्हारे जीवन में भले ही कुछ भी काम आये, तुम अवश्य सफल होगे, तुम जो कुछ भी करना चाहते हो उसे पूरा कर सकोगे, क्योंकि अपने पर विश्वास रखने वाला व्यक्ति अविजयी होता है। भले ही तुम अन्य व्यक्तियों का सहारा नहीं लेते किन्तु उनसे कुछ सीखते अवश्य हो। अपना ज्ञान बढ़ाने के मामले में कभी आगा-पीछा न सोचो। सत्यता एवं नेकी को हस्तगत करने के लिये सर्वदा प्रस्तुत रहो।

शालीनता बहुत अच्छा गुण है। अपने ऊपर विश्वास रखने वाला व्यक्ति दृढ़ इच्छा-शक्ति वाला होता है। कोई धनी, राजा-महाराजा भी किसी महापुरुष की विशालता को नहीं पहुँच सकता है।

एक महापुरुष यह जानता है कि मेरे अन्दर जो आध्यात्मिक शक्ति है उसी के कारण मैं निरभिमानी बन सकता हूँ। सभी व्यक्तियों से कुछ-न-कुछ सीखो—विशेषकर महापुरुषों के सद्गुणों का अपने अन्दर समावेश करो; किन्तु इस सत्यता को कभी मत भूलो कि तुम्हारा पथ-प्रदर्शन स्वयं तुम्हारे ही अन्दर से होगा, कहीं बाहर से नहीं। गुरु यह अवश्य बता सकता है कि 'मार्ग यह है' किन्तु वह उस पर चलने के लिये तुम्हें मजबूर नहीं कर सकता है और न ही तुम्हारे स्थान पर स्वयं चल सकता है। तुम स्वयं प्रयत्न करो, उसे अपनी शक्ति से स्वयं प्राप्त करो। गुरु की बतलाई हुई सत्यता को अपने प्रयत्न से अपने जीवन में उतारो, अपने ऊपर भरोसा रखो।

अपनी शक्ति से मनुष्य बनना, अपनी आध्यात्मिक शक्ति से महानता प्राप्त करना तथा ज्ञान के प्रकाश से पूर्ण जीवन बिताना दैवी गुण हैं। अतः तुम स्वयं अपने स्वामी बनो, अपने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शासक बनो। दूसरे व्यक्तियों का न तो तुम सहारा ही लो, और न ही उनका अनुकरण करना सीखो, वरन् अपने-आपको संसार की एक आवश्यक कल समझकर काम करो। दूसरों से प्रेम करो, किन्तु दूसरों के प्रेम के मुहताज न बनो। दूसरों की सहायता करो, किन्तु किसी से सहायता की आशा न रखो। दूसरों से सहानुभूति रखो, किन्तू स्वयं सहानुभूति प्राप्त करने की इच्छा न रखो।

यदि लोग तुम्हारे काम को बुरा बताते है तो चिन्ता न करो। सिर्फ यही काफी है कि तुम्हारा काम सत्यता का पक्ष लिये हुए हो। यह प्रश्न तुम अपने हृदय में आने ही न दो कि मेरे काम से दूसरे लोग प्रसन्न होंगे वरन् यह सोचो कि मेरा काम सच्चा तथा ठीक है। यदि तुम्हारा काम सत्यता का पक्ष लिये हुए है तो किसी की भी छींटाकशी उसे नहीं बिगाड़ सकती है। यदि वह गलत है तो दूसरों की छींटाकशी के बिना ही उसकी समाप्ति हो जायगी।

तू भला है तू बुरा हो नहीं सकता है ज़ोक,
है बुरा वही कि जो तुझको बुरा जानता है।
और यदि तू ही बुरा है तो वह सच कहता है,
क्यों बुरा कहने से तू उसका बुरा मानता है॥

सत्यता-भरे कार्य और वचन जब तक अपने उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर लेते, तब तक ये व्यर्थ नहीं हो सकते हैं; किन्तु गलत वचन या कार्य स्थायित्व नहीं पा सकते, क्योंकि उनका कोई उद्देश्य ही नहीं होता है।

पहले तुम दूसरों का सहारा प्राप्त करने की स्वयं उत्पन्न की गई दासता से छुटकारा पाओ। किसी अपूर्ण पुरुष की भाँति नहीं वरन् एक योग्य और कर्मठ कार्यकर्त्ता की भाँति अपना पूरा साहस बटोरकर अकेले खड़े रहो। स्वयं उत्पन्न

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की गई स्वतन्त्रता से जो आह्लाद प्राप्त होता है, आत्म-संयम से जो शान्ति प्राप्त होती है, जो सुख प्राप्त होता है, और आन्तरिक शक्ति से जो आनन्द मिलता है उसे ज्ञात करो।

वह व्यक्ति आदर का पात्र है जो जन्म से लेकर मरण तक अपना मार्ग स्वयं ही तैयार करता है। लोग उसके सम्बन्ध में क्या सोचते हैं या क्या कहते हैं, वह उसकी तनिक भी चिन्ता नहीं करता है।···किसी प्रकार का सन्देह होने पर वह केवल अपनी आत्मा ही से उसके निवारण का हल पूछता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेरहवाँ पथ

जीवन का सात्विक लक्ष्य

"सूक्ष्मता से सत्य की जाँच करो और देखो कि उसका उद्‌गम-स्थान कहाँ है। फिर तुम यह ज्ञात कर लोगे कि उसका भंडार तथा उद्‌गम और कहीं नहीं, केवल तुम्हारे ही अन्दर है।" —ब्राउनिंग

"मणि-मुक्ता की अपेक्षा प्रकृति के अटल नियमों का भंडार अधिक मूल्यवान है। उसका माधुर्य शहद से कहीं अधिक मधुर है और उसका आनन्द अवर्णनीय तथा शाश्वत है।" —दि लाइट आफ् एशिया

आध्यात्मिक यात्री उन मार्गों पर चलता हुआ जो अब तक वर्णन किये जा चुके हैं, उनके सद्‌भावों की छाया में विश्राम करता हुआ, उनके रस का आनन्द लेता हुआ समय आने पर जीवन के उस उदात्त स्थान पर पहुँचता है जहाँ इसका अन्तिम भार भी उसके कन्धों पर से उतर जाता है। उस स्थान पर पहुँचने के पश्चात् उसकी सारी थकान दूर हो जाती है, वह एक अलौकिक स्वच्छन्दता का अनुभव करता है और शाश्वत सुख की गोद में चैन से बैठता है।

इन समस्त आध्यात्मिक शान्ति-स्तूपों में सबसे प्रथम स्तूप है जीवन के सात्त्विक लक्ष्य का निरूपण। जो व्यक्ति इस लक्ष्य तक जा पहुँचता है उसके सारे सन्देह, सारी कमियाँ, सारे दुख और दर्द दूर हो जाते हैं। इस प्रकार वह शान्ति, ज्ञान, प्रकाश और आनन्द की छत्रछाया में पनपने लग जाता है। जो व्यक्ति

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन की सम्पूर्ण सात्त्विकता को पूर्णरूपेण समझ लेता है और उसके सिद्धान्तों का पक्ष लेता है, स्वार्थ की अँधेरी नगरी में जाने से दूर रहता है, वही उस स्थान को पा लेता है जहाँ उसे कोई हानि पहुँचाने का भय नहीं सता पाता, कोई शत्रु उसे गिरा नहीं सकता। वह न तो सन्देह करता है, और न ही इच्छा-आकांक्षाओं का दास बनता है। उसे दर्द से दुख नहीं मिलता, क्योंकि उसके सामने सत्यता का पृष्ठ खुलते ही उसके सन्देह का निवारण हो जाता है।

जहाँ पूर्ण प्रसन्नता व्याप्त होती है वहाँ कष्टप्रद आशा-आकांक्षा नहीं रहती। जहाँ ईश्वर अथवा पवित्रता अर्थात् आध्यात्मिक पवित्रता का साम्राज्य होता है वहाँ दुख के लिये गुंजायश कहाँ?

मनुष्य यदि ठीक तौर पर जीवन-यापन करे, तो वह बिल्कुल सात्विक और सुन्दर होता है। जब तक मनुष्य शारीरिक आनन्द, लोभ, लालच और इच्छाओं की अभिलाषाओं के बन्धन में जकड़ा रहता है, तब तक वह जीवन को उचित ढंग पर नहीं बिता सकता है, क्योंकि वे बन्धन ही वास्तविक जीवन नहीं, वरन् एक प्रकार के तीव्र ज्वर और कष्टप्रद पहलू हैं, जो आन्तरिक अज्ञान के कारण उत्पन्न होते हैं। इच्छाओं को रोकना और कम करना महानता का आरम्भ है। उन पर विजय प्राप्त कर लेना ही महानता है। इसका कारण यह है कि जीवनवृत एक शाश्वत सिद्धान्त पर आधारित है, और चूँकि यह उस सिद्धान्त से विरत नहीं हो सकता अतः जिन सांसारिक पदार्थों पर जीवन का आधार है वे पहले ही प्राप्य बना दिये गये हैं तथा जिन पदार्थों की आवश्यकता नहीं हैं उन्हें छोड़ दिया गया है। उदाहरणतया काम-पूजा जीवन की आवश्यकताओं में से नहीं है वरन् एक हीन भावना तथा व्यर्थ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का कर्म है अतः उसका परिणाम दुख और आपदाएं होती हैं।

बाइबिल में वर्णित घटनानुसार अपव्ययी पुत्र जब तक बाप के घर में रहा उसे किसी वस्तु की कमी नहीं रही, वरन् उसे आवश्यकता से अधिक मिलता रहा। उसे कभी भी किसी वस्तु को माँगने की आवश्यकता नहीं पड़ी, क्योंकि प्रत्येक वस्तु उसके मांगे जाने से पूर्व ही उसे प्राप्त थी, किन्तु जब व्यर्थ की इच्छाएं उसके हृदय में जाग्रत हुईं तो वह परदेश चला गया। वहाँ जाकर उसके पास जो कुछ भी था उसने खर्च किया······परिणाम यह हुआ कि वह भूखों मरने लगा। तब उसे अपने पिता का घर याद आया और वह वापस लौट आया। यह घटना मनुष्य की बढ़ती हुई इच्छा का एक जीता-जागता उदाहरण है।

मनुष्य ने अपनी इच्छाओं को इतना बढ़ा लिया है कि वह सर्वदा व्याकुलता, निराशा, दैन्यता और कष्ट से घिरा रहता है। उनसे छुटकारा पाने का सबसे उचित और सरल मार्ग यही है कि वह अपने बाप के घर की ओर लौट आये, अर्थात् इच्छा-पूर्ण जीवन को छोड़कर सात्विक और निष्काम जीवन को आरम्भ करे···किन्तु जब तक मनुष्य आध्यात्मिक व्रत स्वीकार नहीं करता है, अपने जीवन की दिशा को नहीं बदलता है, इच्छाओं का परिणाम केवल दुख और निराशा है यह नहीं समझ लेता है, तब तक वह उस आदर्श जीवन का स्पर्श तक नहीं पा सकता जो शान्तिपूर्ण है और जिसमें कोई अपूर्णता नहीं है।

यदि किसी मनुष्य का दृष्टिकोण उक्त बातों को स्वीकार करने में समर्थ होता है, तो इसके अर्थ यह होते हैं कि अब वह मनुष्य अपनी दिशा बदलकर अपने वास्तविक उद्देश्य की ओर चलता है और सात्विक जीवन की उस उपजाऊ धरती पर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँचता है जहाँ उसे इच्छाओं की दासता से मुक्ति मिल सकती है।

वास्तविक जीवन अर्थात् सत्यता तथा वास्तविकता से पूर्ण जीवन के लिये जो पवित्र भावनाएँ उत्पन्न होती हैं, उनको एवं इच्छाओं की ओर स्वाभाविक झुकाव को एक ही न समझ बैठना चाहिये। इन दोनों में बहुत बड़ा भेद है। इच्छाओं की ओर झुकाव सांसारिक भोग-विलास को प्राप्त करने की इच्छा का सूचक होता है, जबकि पवित्र भावनाओं का झुकाव शान्ति-लाभ करने की इच्छा की ओर होता है।

सांसारिक पदार्थों को प्राप्त करने की इच्छा शान्ति से सर्वदा दूर होती है और इसको रखने वाले के लिये एक-न-एक दिन ऐसा अवश्य आता है जबकि यह उसे सदा-सर्वदा के लिये निराश और दीन बना डालती है। अतः जब तक इस इच्छा की समाप्ति नहीं हो जाती, तब तक आराम, चैन आदि असम्भव हैं। सांसारिक पदार्थों की इच्छा मधुर तो कभी हो ही नहीं सकती है। हाँ, जो इच्छा शान्ति के लिये होती है वह अवश्य पूर्ण हो सकती है।

स्वार्थ से उत्पन्न होने वाली इच्छाओं को त्याग देने से शांति को प्राप्त किया जा सकता है और उसका प्राप्त कर लेने के पश्चात् ही शाश्वत सुख, पूर्ण समृद्धि और अनुपम आनन्द की प्राप्ति स्वतः ही हो जाती है। ··· फिर उस आनन्द की दशा में जीवन की सात्विकता और सरल सौंदर्य का बोध हो जाता है तथा शक्ति एवं निपुणता का स्रोत हस्तगत होता है।

ऐसी दशा में शान्ति की इच्छा भी नहीं रहती, क्योंकि इस दशा में पहुँचने से शान्ति उस मनुष्य का स्वाभाविक गुण बन सकती है। इच्छाओं की तृप्ति में लगा व्यक्ति गलती से यह सोचता है कि इच्छाओं को परास्त करने से मनुष्य डरपोक,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कायर तथा मुर्दादिल बन जाता है, किन्तु इसके विपरीत वास्तविकता यह है कि इच्छाओं को परास्त करने से मनुष्य-जीवन ऐसा साहसपूर्ण, अलौकिक और विशाल हो जाता है कि उन व्यक्तियों की समझ ही में नहीं आ सकता जो इच्छाओं के पीछे मारे-मारे फिरते हैं।

"सांसारिक मनुष्यों की अनुचित इच्छाओं की हविश कभी पूर्ण नहीं हो सकती है। इसका निदान केवल एक है और वह है सन्तोष या मृत्यु।" —उर्दू की एक शैर का अनुवाद

इस मंजिल पर पहुंचकर लड़ाई-झगड़े, व्यर्थ का संघर्ष और बेकार की गपशप समाप्त हो जाती हैं। मूर्तिकार की छैनी, लेखक की कलम, चित्रकार का ब्रुश और स्वर्गिक आनन्द से पूर्ण आत्मा के सुरीले राग वातावरण में गूँजते हैं। उसे इस प्रकार का दुख या गम नहीं कि आज यह बात पूरी न हो सकी, अफसोस दिन गुज़र गये। वह समय के मूल्य को अच्छी तरह जानता है। ऐसी दशा में अहं का पूर्णतया त्याग इस प्रकार हो जाता है कि दुख के बादल सुख की वर्षा में बदल जाते हैं और उस पृष्ठभूमि के सौंदर्य को बढ़ाते हैं, जहाँ पर प्रत्येक ओर प्रशंसा-ही-प्रशंसा दृष्टिगोचर होती है।

जब मनुष्य स्वार्थी भावनाओं से मुक्ति पा जाता है तो वह मानव-जाति की भलाई हेतु क्रियाशील बनने के लिये तत्पर हो जाता है, क्योंकि अब वह उन इच्छाओं के पीछे नहीं भागता जिनमें मधुरता नाम का गुण कभी पाया ही नहीं जा सकता। इस दशा में वह अपनी तमाम शक्तियों को इच्छानुसार उपयोग में ला सकता है। चूंकि उसे किसी पारितोषिक अथवा क्षतिपूर्ति की इच्छा नहीं होती, अतः वह अपने कर्तव्यों को भली प्रकार से परा करने के लिये अपनी समस्त शक्तियों को एकाग्र कर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है और इस प्रकार सारे कामों को पूर्ण सफलता और योग्यता के साथ पूरा करता है।

सुदृढ़ भावनाओं वाला व्यक्ति किसी भी लालच के लिये काम नहीं करता, वरन् उसका ज्ञान ही उसे कार्य की ओर प्रेरित करता है, जबकि, उससे सम्बन्धित अन्य व्यक्ति किसी लालच के कारण काम करते हैं। वे उस बच्चे के समान हैं जो खिलौने के लालच से काम करता है। ज्ञानी व्यक्ति अपनी अलौकिक जीवनी शक्ति के कारण हर समय किसी-न-किसी आवश्यक कर्तव्य को पूर्ण करने के लिये तैयार हो जाते हैं। जो व्यक्ति आध्यात्मिक दृष्टिकोण से पूर्ण युवक होता है, उसे न तो पारितोषिक का लालच होता है और न प्रशंसा की इच्छा ही। उसके लिये सारी घटनाएँ अच्छी होती हैं, वह हर समय शांत रहता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन स्तुत्य है, क्योंकि उसकी प्रसन्नता मधुर और स्थायी होती है तथा उसका जीवनक्रम प्रकृति के नियमानुसार चलता है।

स्थायी आनन्द से पूर्ण जीवन एक ऐसा परिणाम है जो आध्यात्मिक यात्री की ओर आकर्षित होता रहता है। उस आनन्द की चरम सीमा पर पहुँचने के लिये संघर्ष करना होता है और साधन जुटाने ही पड़ते हैं। इसे पाने के लिये अपनी पाशविक इच्छाओं को कुचलना और उनकी उलझनों और रहस्यों पर नियन्त्रण करना ही पड़ता है। यह वह मार्ग है जिसमें कोई भी सांसारिक शत्रु नहीं होता, वरन् मनुष्य की आंतरिक भावनाएँ ही शत्रुओं का रूप धारण करके उस पर आक्रमण करती रहती हैं। प्रारम्भ में यह मार्ग अंधेरा दिखाई पड़ता है क्योंकि मनुष्य की आँखों पर इच्छाओं का पर्दा पड़ा रहता है। यही कारण है कि शुरू-शुरू में मनुष्य को जीवन का सीधा-सादा रूप दृष्टिगोचर नहीं होता और उसके नियम उसकी समझ से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहर होते हैं। किन्तु ज्योंही वह सात्विक जीवन की ओर चलने लगता है, उसकी आध्यात्मिक दृष्टि के सामने सात्विक जीवन के वे सारे भेद खुलने लगते हैं, एवं अन्त में वह उस स्थान पर पहुँच ही जाता है जहाँ पर ये सारे रहस्य उसकी समझ में आकर अपना क्रियात्मक रूप प्रकट कर देते हैं। इसी दशा में मार्ग सहज और सरल बनता है। अब न तो उसमें अंधेरा नज़र आता है, न संदेह और निराशा, वरन् हर ओर ज्ञान का प्रकाश-ही-प्रकाश फैला रहता है।

सच्चा जीवन व्यतीत करने के पिपासुओं को अधिक गतिशील बनाने में उपरोक्त सीधे-सादे नियम अत्यन्त सहायता करते हैं। जीवन एक है किन्तु उसके रूप अनेक हैं। इसी प्रकार नियम भी एक है, किन्तु उसके भी क्रियारूप अनेक हैं। यह कभी हो ही नहीं सकता कि आध्यात्मिक संसार के लिये कुछ और, शेष संसार के लिये कुछ और तथा नश्वर वस्तुओं के लिये कुछ और नियम हों। सभी स्थानों के लिये एक ही नियम काम देता है। सांसारिक कार्यों के लिये एक प्रकार का तर्कशास्त्र और आत्मा के लिये दूसरे प्रकार का तर्कशास्त्र नहीं वरन् संसार और आत्मा दोनों के लिये एक ही प्रकार का तर्कशास्त्र है। सांसारिक मनुष्य सांसारिक व्यवहार में किसी प्रकार की त्रुटि के कुछ विशेष नियमों और नीतियों का अनुसरण करते हैं तथा वे अच्छी तरह जानते हैं कि उन्हें भुला देना या तोड़ देना, उनके लिये तथा समाज के लिये हानिप्रद सिद्ध होता है। किन्तु यही व्यक्ति आध्यात्मिक बातों में इन नियमों को बिल्कुल ही भुला देते हैं एवं अपनी इस मूढ़ता के कारण कष्ट उठाते हैं।

(१) सांसारिक दृष्टिकोण से यह एक नियम है कि सांसारिक व्यक्ति अपने और अपने परिवार के पोषण के लिए धन कमाये। यह भी कहा गया है कि जो व्यक्ति काम नहीं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता उसे खाने का भी अधिकार नहीं।

सभी व्यक्ति इस नियम को भली भाँति जानते हैं, इसकी वास्तविकता और सत्यता को स्वीकार करते हैं और इसलिये वे अपना पेट भरने के लिये पैसा कमाते हैं। किन्तु आध्यात्मिक पहलू में साधारणतया लोग इस नियम और सत्यता से अपरिचित हैं तथा इसका पक्ष लेना भी आवश्यक नहीं समझते। वे इस बात को तो उचित समझते हैं कि प्रत्येक मनुष्य अपनी रोटी खुद कमाये और जो नहीं कमाता वह भूखा मरे और चिथड़े पहने। किन्तु साथ-ही-साथ वे यह भी सोचते हैं कि उनकी आध्यात्मिक भूख मुफ्त ही में भर जाय और उसे मांगकर खाने में भी कोई हर्ज नहीं, अर्थात् वे यह चाहते हैं कि निरुद्देश्य व्यक्ति को भी उस व्यक्ति के समान रोटी मिलती रहे जो किसी उद्देश्य को लेकर आगे बढ़ता है। इन सब बातों का परिणाम यह होता है कि साधारणतया लोग व्यथित और आत्म-हान-से नज़र आते हैं। वे दुख और आपत्तियों से घिरे रहते हैं।

(२) दूसरा नियम यह है कि यदि तुम्हें किसी दूसरी वस्तु, उदाहरणतया रोटी, कपड़ा, सामान या जीवन की अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति की इच्छा है, तो तुम उन्हें किसी दूकानदार के पास जाकर मुफ्त नहीं माँगते, वरन उनका मूल्य चुकाकर उन चीज़ों को लाते हो और तभी वे तुम्हारी सम्पत्ति बनती हैं। तुम इस नियम को बिल्कुल ठीक समझते हो कि जितनी भी वस्तुएँ खरीदी गई हैं उनका सही-सही मूल्य अदा कर दिया गया है और उसमें किसी तरह की गलती तो नहीं हुई।

यही व्यावहारिक नियम आध्यात्मिक व्यवहार में भी लागू होता है। यदि तुम्हें किसी आध्यात्मिक प्रेरणा से सम्बन्ध रखने वाली वस्तु की आवश्यकता है, उदाहरणया आनन्द, शान्ति इत्यादि-इत्यादि, तो उनका पूरा मूल्य चुकाने पर ही वे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त की जा सकती हैं, अन्यथा नहीं। जिस प्रकार तुम अपना धन व्यय करने के पश्चात् ही कोई सांसारिक पदार्थ खरीद सकते हो, उसी प्रकार किसी आध्यात्मिक पदार्थ को प्राप्त करने के लिये कुछ-न-कुछ आध्यात्मिक मूल्य भी तुम्हें चुकाना ही पड़ेगा। आध्यात्मिक पदार्थ क्रय करते समय तुम्हें अपना क्रोध, लालच, पाशविक भावनाएँ आदि-आदि मूल्य-स्वरूप देनी पड़ेंगी। कंजूस व्यक्ति अपने धन से बहुत प्यार करता है। वह धन की पृथकता का अभाव सहन नहीं कर सकता, इसलिये उसे जीवन के आराम और ऐश्वर्य भी प्राप्त नहीं हो सकते तथा धन-दौलत का स्वामी होने पर भी वह जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन नहीं जुटा सकता। चूंकि तुम क्रोध को नहीं त्याग सकते, इसलिये तुम्हें शान्ति भी नहीं मिल सकती। वह व्यक्ति, जो अपनी पाशविक भावनाएँ, उदाहरणतया काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहङ्कार इत्यादि, और इसी प्रकार के अन्य अवगुणों को उनसे क्षणिक आनन्द प्राप्त होने के कारण नहीं छोड़ता, वह सच्चे शब्दों में आध्यात्मिक कजूस है। अतः वह सर्वदा आंतरिक शांति से अछूता रहता है तथा आध्यात्मिक दैन्यता के कारण सदा-सर्वदा कष्ट उठाता रहता है। यद्यपि उसके पास सांसारिक भोग विलास के सभी साधन होते हैं, तथापि वह आंतरिक सुख को प्राप्त करने के लिये उन सबको मूल्य-स्वरूप देना नहीं चाहता, क्योंकि वह उन्हें छोड़ने के लिए तैयार नहीं है।

जो व्यक्ति सांसारिक मामलों में पूर्णतया भिज्ञ है, वह न तो कभी किसीसे कुछ माँगता है और न ही चोरी करता है वरन् मेहनत-मजदूरी करके अपने काम की वस्तुएँ क्रय करता है। उसके प्रसन्नचित्त होने के कारण समस्त संसार उसे आदर की दृष्टि से देखता है। इस प्रकार जो व्यक्ति आध्यात्मिक व्यवहार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में कुशल है। वह न तो कभी किसीसे कुछ माँगता है और न ही चोरी करता है, वरन् अपने हृदय-संसार में परिश्रम करके आध्यात्मिक पदार्थों का पूरा-पूरा मूल्य चुकाता है और इसलिये सभी उसका आदर करते हैं।

(३) सांसारिक व्यवहार में एक और नियम लागू होता है और वह यह है कि जब कोई व्यक्ति नौकरी करता है तो वह अपने स्वामी से वेतन निर्धारित करता है और महीने के अन्त में वह अपना वेतन लेकर निश्चिन्त हो जाता है। वह न ज्यादा माँगता है और न ही आशा रखता है कि उसका मालिक उसे कुछ अधिक दे दे। वह अपने मालिक से कभी यों नहीं कहता कि यद्यपि मुझे ज्यादा माँगने का अधिकार नहीं और न ही मैं उसका अधिकारी हूँ, तथापि मैं कुछ अधिक पाने की आशा अवश्य करता हूँ। यदि कोई कर्मचारी इस प्रकार कहे तो उसे ज्यादा मिलने के स्थान पर कभी-कभी नौकरी से भी जवाब मिल जाता है, किन्तु उस आध्यात्मिक व्यवहार में लोग इस नियम के विरुद्ध आचरण करते हुए मिलते हैं। जिस आध्यात्मिक आनन्द का श्रीगणेश नहीं किया गया, जिसके लिए न तो कोई परिश्रम ही किया गया, न प्रयत्न और न ही जिसके लिये कोई तत्पर है; फिर भी लोग ऐसा पारिश्रमिक माँगते हैं और उसे प्राप्त न करने वाले को वेवकूफ कहते हैं। स्वार्थ और सांसारिक नियमों के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति इन सब चीजों को उतनी मात्रा में प्राप्त नहीं कर सकता जितनी मात्रा में वह चाहता है। फिर भी वह जितना काम करता है उसका पारिश्रमिक भी उतना ही और वैसा ही उसे मिलता है। कहने का मतलब यह है कि वदी का फल हमेशा बुरा और नेकी का फल हमेशा नेक मिलता है। यह कभी नहीं होता कि वदी का फल भला और नेकी का बुरा मिले।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बोये पेड़ बबूल के, आम कहाँ से खाय" इस नियम को समझकर ज्ञानी मनुष्य हमेशा प्रसन्न, सजीव और शान्तचित्त बना रहता है। वह जानता और समझता है कि उसे जो कुछ मिल रहा है, भले ही वह सुख है अथवा दुःख है, वह उसके ही कर्मों का फल है। यह एक सार्वभौम सिद्धान्त है कि प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मों का उचित और सही फल स्वयमेव ही मिलता है, किन्तु यह नियम शिकायत करने वाले व्यक्ति को चेतावनी देता है कि ऐ मेरे दोस्त, क्या तुम्हारे साथ इतना ही दैनिक पारिश्रमिक नियत नहीं हुआ था, अब अधिक क्यों माँगते हो ?

(४) चौथा नियम यह है कि जो व्यक्ति मालदार होना चाहता है वह मितव्ययता सीखे। अपनी आय-व्यय की जाँच-पड़ताल करे और जब कुछ धन एकत्र हो जाय तो फिर उस छोटी-सी पूँजी को विशालता के साथ किसी अच्छे काम में लगा दे। वह उस धन का न तो अपव्यय ही करे और न ही सीमा से अधिक धनाढ्यता का प्रदर्शन करे। इस प्रकार वह अनुभव भी प्राप्त करता जायगा और सुखद परिणाम भी प्राप्त करता जायगा। किन्तु एक सुस्त और अपव्ययी व्यक्ति कभी भी धनाढ्य नहीं बन सकता, क्योंकि वह धन को व्यर्थ की बातों पर व्यय करता है। इसी प्रकार वह व्यक्ति आध्यात्मिक रूप से भी धनाढ्य बनना चाहता है। उसे भी अपने आध्यात्मिक स्तर पर मनन करके मितव्ययता से काम लेना चाहिये। उसे अपनी शक्ति झूठी गप्पों, बेकार के वाद-विवादों और क्रोध के प्रदर्शन में व्यय नहीं करनी चाहिये। इस प्रकार वह महानता का कुछ भण्डार अपने अन्दर एकत्रित कर सकेगा, जो उसका आन्तरिक स्रोत बन जायगा। ऐसी दशा में उसको चाहिए कि वह उस भंडार को दूसरों की भलाई में लगा दे। ऐसी दशा में वह उस भंडार का जितना अधिक उपयोग

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेगा, आध्यात्मिक रूप में वह उतना ही धनाढ्य बन सकेगा।

इसी प्रकार मनुष्य आन्तरिक महानता और आध्यात्मिक धन को बढ़ाता है। जो व्यक्ति अपनी अन्धी भावनाओं और इच्छाओं की पैरवी करता है, वह अपने हृदय पर शासन करके उसे अपने अधिकार में नहीं कर सकता। वह आध्यात्मिक दृष्टि-कोण से अपव्ययी है और वह आध्यात्मिक दृष्टिकोण से कभी भी धनाढ्य नहीं बन सकता।

(५) शारीरिक संसार में एक नियम यह और है कि अगर कोई व्यक्ति पहाड़ की चोटी पर पहुँचना चाहता है तो उसे पहाड़ की चढ़ाई चढ़नी पड़ेगी।

पहले उसे मार्ग खोजना होगा, फिर सावधानी के साथ उस पर चढ़ना होगा। इसलिये चढ़ाई की कठिनाइयों और कठिन परिश्रम से घबराना नहीं चाहिए और शारीरिक श्रम और कष्टों के कारण ऊपर चढ़ने का उद्देश्य छोड़कर वापस नहीं लौटना चाहिए, वरना वह चोटी तक कभी भी न पहुँच सकेगा। आध्यात्मिक संसार में भी यही नियम काम देता है। जो व्यक्ति सुख, शान्ति और महानता के उत्तुंग शृंग पर पहुँचना चाहता है उसे वहां तक पहुँचने के लिए स्वयमेव परिश्रम करना पड़ेगा और मार्ग को खोजकर उस पर कदम बढ़ाने पड़ेंगे। ऐसी दशा में सफलता तभी मिल सकती है जब वह न तो आगे बढ़ना ही छोड़े और न ही मार्ग में से वापस लौटे, वरन् समस्त कठि-नाइयाँ झेलते हुए, आपदाओं से संघर्ष करते हुए अपने दुःख-दर्द को सहन करके आदर्श जीवन के उच्चतम शिखर पर पहुँच जाय। तब दुख, आपत्ति और उलझनें उसके पीछे ही रह जायँगी और आध्यात्मिक शक्ति का महान् स्रोत उसके सामने लहरायेगा। यदि कोई व्यक्ति दूरस्थ नगर अथवा ग्राम में जाना चाहता है तो उसे यात्रा करनी पड़ेगी। ऐसा कोई भी उपाय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं जिससे वह सोचते ही तुरन्त वहाँ पहुँच जाय। वह वहाँ तभी पहुँच सकता है जब वह वहाँ तक पहुँचने के लिए किसी प्रकार का प्रयत्न करे। यदि वह पैदल जाना चाहता है तो उसे अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए काफी समय लगेगा और चलने का कष्ट भी उठाना पड़ेगा, किन्तु उसे किराये-स्वरूप कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ेगा। इसके विपरीत यदि वह किसी गाड़ी अथवा रेल के द्वारा यात्रा करता है तो उसे शारीरिक श्रम कम करना पड़ेगा। उसका समय भी कम खर्च होगा, किन्तु अपना कमाया हुआ रुपया अधिक खर्च करना पड़ेगा।

कहने का मतलब यह है कि किसी विशेष उद्देश्य पर पहुँचने के लिए परिश्रम करना आवश्यक है। इस सत्य से कोई भी मनुष्य नहीं बच सकता। अध्यात्मवाद में भी यही सिद्धांत काम करता है। जो व्यक्ति किसी आध्यात्मिक उद्देश्य, उदाहरणतया वीरता, दया, ज्ञान या शान्ति, तक पहुँचना चाहता है, उसको यात्रा करना और उसके लिए परिश्रम तथा कष्टों को सहन करना आवश्यक है, वरना कोई ऐसा नियम नहीं है जिससे वह किसी भी आध्यात्मिक उद्देश्य तक पहुँच सके। उसे भी सबसे पहले सीधा मार्ग ढूँढना पड़ेगा और फिर आवश्यकतानुसार परिश्रम करके अपनी मंजिल को ढूँढना पड़ेगा।

कैसे भी कहिये, प्राकृतिक नियम प्रारम्भिक नियम का ही कुछ रूप है। आध्यात्मिक जीवन और सम्पूर्ण प्रसन्नता को प्राप्त करने से पहले उनको समझना तथा उनको क्रियाशील करना आवश्यक है। समस्त संसार का कोई भी नियम ऐसा नहीं जो आध्यात्मिक संसार में काम में न आता हो। जिस प्रकार नश्वर पदार्थ आध्यात्मिक सत्य के जीते-जागते नमूने हैं, उसी प्रकार मानवीय बुद्धि भी ईश्वरीय ज्ञान का पूर्णतया एक दर्पण है। सांसारिक व्यवहार में जो व्यक्ति सीधे-सादे नियमों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर चलते हैं उन पर कोई भी संदेह नहीं कर सकता, क्योंकि वे सरल और उचित विचारों वाले दिखाई देते हैं। इसलिये बिना किसी हिचकिचाहट के कोई भी व्यक्ति इनसे इधर-उधर नहीं होता। ठीक यही सिद्धान्त आध्यात्मिक क्षेत्र में भी काम आते हैं, जब मनुष्य उनको समझकर पूरी तरह उन पर चलता है, ठीक इसी प्रकार जिस प्रकार वह सांसारिक बातों में चल सकता है। ऐसी ही दशा में वह वास्तविक ज्ञान के समीप पहुँचता है। उसके सारे दुःख दूर हो जाते हैं और उसके सारे कष्ट मिट जाते हैं।

जीवन-चक्र एक ऐसा नियमित क्रियारूप है जिसमें किसी प्रकार के विवाद का स्थान नहीं है। इसका क्रियात्मक रूप बिल्कुल सरल, सुगम और असंदिग्ध है। इसमें 'अटल सिद्धांत' ही सर्वोपरि है, जिसका आधार है प्रेम। इसके अन्तर्गत आने वाली प्रत्येक प्रकार की सुविधा और अस्थिर स्वभाव 'नियम' और 'प्रेम' ही का रूप है।

प्रकृति किसी भी मनुष्य के साथ रिआयत अथवा पक्षपात नहीं करती। वह प्रत्येक दृष्टिकोण से उचित न्याय करती है और प्रत्येक को उसका उचित अधिकार प्रदान करती है। जो मनुष्य जैसा करता है वैसा ही फल भोगता है। प्रकृति की प्रत्येक बात एक स्थिर सिद्धान्त पर निर्भर होती है, अतः उचित एवं ठीक होती है। उसकी प्रत्येक बात सैद्धान्तिक होने के कारण मनुष्य जीवन का उचित मार्ग शीघ्र ही चुन सकता है और उसको अपनाकर सुखी बन सकता है।

एक भले व्यक्ति पर क्या इस जीवन में और क्या मृत्यु के पश्चात् कभी भी कोई विपत्ति नहीं आ सकती है। मसीह इस सत्यता को जानता था। उसने अपने सभी शत्रुओं को क्षमा कर दिया—"कोई भी मेरे प्राण नहीं ले सकता है। मैं स्वयं ही

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने जीवन को त्यागता हूँ।" इस प्रकार उसने स्वयं ही अपनी इतिश्री कर डाली।

ऐसा व्यक्ति अपने जीवन को सरलतम बनाकर और अपने हृदय को पवित्र रखकर अपने जीवन को मधुर समझने लगता है। वह सभी बातों में प्राकृतिक सिद्धान्त के अटल नियमों का रूप देखता है। वह जानता है कि उसके अपने विचारों और कर्मों का परिणाम उसके स्वयं के लिये और दूसरों के लिये क्या होगा। वह यह भी भलीं-भाँति जान लेता है कि जिन विचारों की लहरें वह संसार में फैला रहा है उनका क्या फल निकलेगा। वह इस सत्य को समझकर केवल उन्हीं विचारों और कर्मों का कर्त्ता बनने का प्रयत्न करता है जिनका आरम्भ श्रेष्ठ होता है, जिनमें सार्वलौकिक, सर्वहिताय भाव काम करते हैं और जिनका फल सुखद होता है। मूढ़ता के कारण जो भी काम वह कर चुका होता है, जिनके उचित फल उसे मिलते हैं, वह उन्हें भली-भाँति स्वीकार करके सुधार लेने का प्रयत्न करता है। उनके सम्बन्ध में न तो वह शिकायत करता है, न डरता है, और न सन्देह करता है, वरन् सर्वमान्य सिद्धान्तों की पुष्टि करता हुआ शान्त और सुखी बना रहता है।

"जीवन के ताने-वाने को हम अपनी ही इच्छानुसार रंगों के धागों से बुनते हैं और भाग्य रूपी खेत में जैसा बोते हैं वैसा काटते हैं।" अतः हमने जैसा बोया है वैसा ही काटकर यदि हम सन्तोष से काम लें तो फिर हमारे लिये प्रकृति के अटल सिद्धान्त की तिक्तता मधुरता में बदल जाती है और हम स्वयं ही अपने जीवन के भाग्य-विधायक बन जाते हैं।

अतः ध्यान रखो कि गेहूँ से गेहूँ और जौ बोने से जौ ही पैदा होते हैं। प्रकृति के इस अटल सिद्धान्त को समझकर भले और हितकारी कर्मों से दूर न भागो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौदहवाँ पथ

परिणाम

"यह प्रकृति का नियम है कि जो नेकी और धर्म का मार्ग दिखाता है, उसकी क्रियाशीलता को कोई भी नहीं टाल सकता है, उससे कोई भी बच नहीं सकता है। उसका केन्द्र प्रेम है और परिणाम शान्ति। उसके अपनाने में मधुरता है, अतः उसी को लक्ष्य मानो, उसी के गुण गाओ।"

—दि लाइट आफ़ एशिया

"सौभाग्य से जब तेरा काम समाप्त हो जायगा तो बदी भी नेकी बन जायगी। सप्ताह के सारे दिन आध्यात्मिक प्रकाश से आलोकित होकर पवित्र बन जायेंगे।"

—दि टीटर

चूँकि मानवीय जीवन में स्वभावतः ही शराफत, नेकी और सौन्दर्य पाया जाता है, अतः उसके परिणाम भी कई प्रकार के होते हैं। यद्यपि संसार में पाप और मूढ़ता की कमी नहीं··· अनेक दुःख, विपत्तियाँ, शोक आदि भी इसमें भरे हैं, तथापि इन सबके साथ-साथ पवित्रता एवं ज्ञान के प्रकाश की भी इसमें न्यूनता नहीं है, आनन्द भी है इसमें, आराम भी है। शोक और व्यग्रता का निदान भी है, शान्ति भी है। यहाँ पर कोई भी पवित्र विचार, कोई भी निःस्वार्थ काम बिना फल दिये व्यर्थ नहीं होता है और ऐसा प्रत्येक फल सर्वदा सुखदायी परिणाम लाता है।

एक सुखी एवं सन्तुष्ट परिवार एक सुखदायी परिणाम है। पारस्परिक द्वेष को मिटा देना, हृदय के मैल को साफ कर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देना, अपनी त्रुटियों को स्वीकार कर लेना, कड़वे वचनों के लिये क्षमा-याचना कर लेना, रूठे हुए मित्र को मना लेना, दो टूटे हुए हृदयों को मिला देना आदि-आदि सभी ऐसे सुखदायी परिणाम हैं, जिनकी आराधना और खोज की लगन में हमने रात-दिन एक कर दिया है। इनकी प्राप्ति एक नेक फल है। शोकाकुल और व्याकुल हृदय को प्रफुल्ल बना देना, किसी के आँसू पोंछ देना भी नेक फल हैं। पाप के अन्धकार से पुण्य के प्रकाश में आना और सत्यता के लिये संघर्ष करके अलौकिक मुक्ति का मार्ग पा लेना आदि सभी सर्वोत्कृष्ट आध्यात्मिक फल हैं।

वह व्यक्ति, जो अपनी आन्तरिक दृष्टि को विस्तृत बनाकर देखता है, अन्त में सत्य को पा ही लेता है और उपरोक्त वर्णित उन सभी मार्गों को सरलतापूर्वक तय करके अंत में उस लक्ष्य पर पहुँच ही जाता है। अतः उसका सारा जीवन ही नेक कामों से भर उठता है।

जो व्यक्ति सत्य की खोज करता है, सत्य का अनुसरण करता है, उसे ऐसे नेक और सुखद परिणामों की इच्छा करने और उन्हें खोज निकालने की आवश्यकता ही नहीं रहती है, क्योंकि नेक परिणाम तो स्वयं ही सत्य में अन्तर्हित होते हैं। यह जीवन की सार्थकता है।

ये नेक परिणाम दो प्रकार के होते हैं—

(१) सांसारिक, (२) आध्यात्मिक

सांसारिक सुखद परिणाम क्षणिक होते हैं, किन्तु आध्यात्मिक परिणाम स्थायी होते हैं। जीवन के भोग-विलास, मित्रता और मेल-मिलाप मधुर तो अवश्य होते हैं किंतु वे आपदा-ग्रस्त एवं शीघ्र ही नष्ट हो जाने वाले होते हैं। पुण्य, महानता और शराफत का प्रकाश ऐसा परिणाम है जो न तो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवर्तनशील है और न ही शीघ्र नष्ट हो जाने वाला है। संसार में मनुष्य जहाँ कहीं जाता है अपने सामान को भी साथ लेकर जाता है किन्तु अंत में उससे उसे बिछुड़ना ही पड़ता है। यदि मनुष्य केवल उसी पर निर्भर रहे और उसी को अपनी प्रसन्नता का साधन समझे, तो वह एक ऐसे परिणाम पर पहुँचता है जहाँ निराशा और दैन्यता के अतिरिक्त उसके हाथ कुछ भी न लगता। किंतु जिस मनुष्य ने अपने सुख का साधन आध्यात्मिक तथ्य ही को समझा है वह कभी भी प्रसन्नता से पृथक् नहीं किया जा सकता है। ऐसा मनुष्य जहाँ कहीं भी जायगा अपनी आन्तरिक मधुरता को वहीं प्राप्त कर सकेगा। उसके कामों का प्रत्येक फल आन्तरिक माधुर्य से ओत-प्रोत होगा।

जिस व्यक्ति ने उस जीवन को पा लिया जिसमें अहं का चिन्ह तक नहीं हो, वह प्रेमानंद में सर्वदा मग्न रहता है। ऐसा व्यक्ति अपने जीवनकाल में स्वर्ग-सुखों को भोगता है और मुक्ति को प्राप्त होता है। ऐसा जीवन सच्चे शब्दों में 'मुक्त' है, ऐसा व्यक्ति जीवन की एकता को पहचानता है और परमात्मा को अपना अंतिम आलम्बन बनाकर उसकी आनन्ददायक छत्र-छाया में विश्राम करता है।

वह व्यक्ति धन्य है। उसके हार्दिक चैन और शांति का माधुर्य तथा उसके आनन्द का वर्णन अवर्णनीय है। जिस व्यक्ति ने अपने हृदय को पाशविक भावनाओं, अभिमान और अनुचित विचारों से रिक्त बना डाला है, जिस व्यक्ति में स्वार्थ और प्रदर्शन का चिन्ह तक शेष नहीं, जो व्यक्ति समस्त प्राणियों को प्रेम और आदर की दृष्टि से देखता है, जिस व्यक्ति के हृदय से यह पुकार उठती है—"सबका भला हो······समस्त संसृति का भला हो", जो व्यक्ति समस्त प्राणियों को अपने समान ही समझता है और किसी भी प्राणी का अहित नहीं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता, वह व्यक्ति अन्त में एक ऐसे सुखद परिणाम पर पहुँचता है जो उससे कभी भी नहीं छीना जा सकता और न उसे कोई छीन ही सकता है, क्योंकि यही सच्चे जीवन की पूर्ति, शान्ति की सीमा और पूर्णानन्द की अंतिम मंजिल होती है।

मेरे मित्रो ! तुमसे विदाई लेने से पूर्व मैं फिर कहता हूँ कि आध्यात्मिक प्रेरणा-स्रोत तुम्हारे जीवन से दूर स्थित नहीं हैं। वे तुम्हारे अत्यन्त समीप ही हैं और सुगमता से प्राप्य हैं, किन्तु जब तुम स्वार्थ को त्यागकर, निःस्वार्थ भाव से, पूरी हार्दिक इच्छा के साथ उनको तन्मय होकर ढूँढोगे तभी वे मिलेंगे।

"सबके हित में ही हमारा हित है।"

Printed at
VISHNU OFFSET PRINTERS
Pataudi House,
Daryaganj, DELHI-6

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

BY-WAYS OF BLESSEDNESS.

BY JAMES ALLEN.

CONTENTS.

The book expounds those right states of mind and wise modes of action which, when adopted under trying circumstances, bring about results fruitful of blessedness. The principles put forth are applicable to the common circumstances of daily life, in which all are frequently involved, and upon the wrong or right use of which all our misery or happiness depends; and those who put these principles into practice will very rapidly prove for themselves that circumstances are subordinate to the human will, and as the potter moulds the unsightly clay into shapes of beauty, so the spiritual potter (he who has acquired the right state of mind) brings out of adverse conditions results that are prectious, beautiful and blessed.

The book is under print.

Price Rs. 4/-/- Advance Booking Rs. 3/-/-

Do not miss the Bus

GLOBE PUBLICATIONS.

A. 1/4 Krishan Nagar, DELHI-6

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
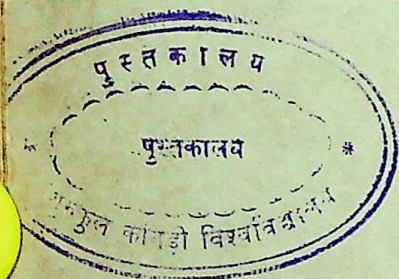
میرے لئے یہ خوشی کا مقام ہے کہ میں شری ہنس راج دہرہ ایڈیٹر آتالیق ویکلی سے کئی برسوں سے متعارف ہوں۔ مجھے گاہ گاہ آتالیق کو دیکھنے کا موقعہ ملا ہے۔ میری رائے ہے کہ آتالیق ایک سنجیدہ اور ٹھوس پالیسی کا حامل ہے۔

شری دہرہ ایک پُرانے اور تجربہ کار اخبار نویس ہیں جن میں علمی حسن مذاق اور مجلسی خدمات کا رجحان بدرجۂ اُتم موجود ہے۔

گوپی ناتھ امن

چیئرمین پبلک ریلیشنز کمیٹی۔ دہلی اسٹیٹ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar